अपराधों को जानिए, सुरक्षित रहिए

# मनोहर कहानियां

सितंबर, 2021 ₹ 50/-

10 साल में सुलझी

## सुहागरात की गुत्थी

गुड़िया रेप-मर्डर केस

## आईजी व एसपी भी हुए गिरफ्तार

पुलिस इंसपेक्टर की

## जहरीली मोहब्बत

स्मार्टवाच में छिपा

## हत्या का राज

करोड़ों कमाते हैं

## बोडीगार्ड

नशा मुक्ति केंद्र में चढ़ा

# सैक्स का नशा

VISIT…

LANZAROTE
Caliente.com

TETMOSOL DUSTING POWDER
Skin Infection Expert
ANTI-FUNGAL
Fights Skin Infections
TRIPLE SKIN BENEFITS
Controls Itching
Fights Prickly Heat
100 g
Piramal

Piramal

TETMOSOL®

नया

टेटमोसॉल डस्टिंग पाउडर रोज़ लगाना,
मतलब त्वचा के संक्रमण^ को दूर भगाना.

त्वचा के संक्रमण
घमोरियां
खुजली

से राहत दे

नज़दीकी मेडिकल स्टोर्स पर उपलब्ध।

☎ 1800 22 9898 ✉ consumercare@piramal.com

^टेटमोसॉल डस्टिंग पाउडर का उपयोग फंगल इन्फेक्शन के लिए किया जाता है। यदि संक्रमण तथा खुजली जारी है तो डॉक्टर की सलाह ले। इन्फेक्शन की संभावना बनी रहने तक डस्टिंग पाउडर लगाएं। परिणाम व्यक्तियों के बीच भिन्न हो सकते हैं। आवेदन और अन्य निर्देशों के लिए पैक देखें।

CMAC - TP/20210301-03

**STOMAFIT®**

लिक्विड व टैबलेट

अपच व ऐसीडिटी से तुरंत आराम

New Pack

450ML, 200ML, 100ML, 90 TABLETS

SUNCARE
A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE

सुनो जी, बुन्नू की मैडम का धन्यवाद देने के लिए फोन आया था।
क्या चक्कर है काहे का धन्यवाद बटोर रहे हो?

अरी भाग्यवान! शिक्षक दिवस पर स्कूल गये थे साथ स्टोमाफिट भी ले गये थे। बुन्नू की मैडम थी गैस से परेशान, हमने दिया स्टोमाफिट जिससे मिला उनको आराम। अपने अतरंगी विचारों को दीजिये विराम।

**HAEMOCAL®**

Delicious Taste

ग्लूकोज़ से भरपूर आयरन टॉनिक

शिक्षक दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षकों की पुकार, आयरन की कमी को दूर करने में हेमोकॉल है दमदार!!

जो बनाए हमें इंसान, दे सही गलत की पहचान, उन शिक्षकों को हमारा प्रणाम।

New Pack

शहद सा गाढ़ा संतरे सा स्वाष्टि

300ML, 450ML

HAEMOCAL-Z जिंक के साथ उपलब्ध (450ml)

Please contact for more information:
SUNCARE FORMULATIONS PVT. LTD.
Ph.: 8447977889/ 999, 011-46108735, Mail: info@stomafit.com
Available on all major Online Pharmacies

SCAN TO BUY HAEMOCAL

SCAN TO BUY STOMAFIT

सितंबर
2021

# मनोहर कहानियां

टिप्पणी, घटना की सूचना, समाचार, रिपोर्ट, जौब्स के लिए :
manoharkahaniyanmonthly@gmail.com
☎ 08527666775
08527750077

वार्षिक ग्राहक : subscription@delhipress.in Phone : 08488843408 (Mon to Saturday 10 AM to 6 PM)

06. नशा मुक्ति केंद्र में चढ़ा सैक्स का नशा
नितिन शर्मा 'सबरंगी'

14. 8 घंटे रहा मौत के जबड़े में
दिनेश बैजल 'राज'

22. 10 साल में सुलझी सुहागरात की गुत्थी
सुनील वर्मा

30. पुलिस इंसपेक्टर की जहरीली मोहब्बत
निखिल

36. वचन
कस्तूर सिंह भाटी

42. गुड़िया रेपमर्डर केसः आईजी व एसपी भी हुए गिरफ्तार
शैलेंद्र कुमार 'शैल'

50. करोड़ों कमाते हैं सितारों के बौडीगार्ड
भारत भूषण श्रीवास्तव

54. हेलीकौप्टर ब्रदर्स ने की 600 करोड़ की ठगी
प्रगति अग्रवाल

58. साली का नशा
अशोक शर्मा

62. रोमांस के बहाने मिली मौत
शाहनवाज

68. किसी की मां ऐसी न हो
सुनील वर्मा

75. 365 पत्नियों वाला रंगीला राजा
वीरेंद्र बहादुर सिंह

78. स्मार्टवाच में छिपा हत्या का राज
शंभु सुमन

**खबर**

41. यह राजा हर साल करता है कुंवारी लड़की से शादी
49. महिला के शरीर में बनती है शराब
67. मालिक की खातिर कुत्तों की कुरबानी

## 06 नशा मुक्ति केंद्र में चढ़ा सैक्स का नशा

WALK N WIN SOBER LIVING HOME
& COUNSELING CENTRE

तनाव, गलत संगत या अन्य वजहों से युवा आज नशे के पंजे में जकड़ता जा रहा है. अनेक युवा तो उच्च शिक्षित होने के बावजूद भी नशे के आदी हो कर अपना करियर बरबाद कर रहे हैं. इस में लड़कियां भी लड़कों से पीछे नहीं हैं. तभी तो हर शहर में आप को नशा मुक्ति केंद्र मिल जाएंगे. इन की मोटी फीस होने के बावजूद मातापिता बच्चे को यही सोच कर इन केंद्रों में भरती कराते हैं ताकि उन के बच्चे की नशे की लत छूट जाए. लेकिन देहरादून के नशा मुक्ति केंद्र में तो संचालक विद्यादत्त रतूड़ी वहां भरती लड़कियों को नशे का शौक पूरा कराने के बदले उन की आबरू से खेलता था. फिर एक दिन वहां की लड़कियों ने जो किया वह...

## 30 पुलिस इंसपेक्टर की जहरीली मोहब्बत

## 62 रोमांस के बहाने मिली मौत

**आवश्यकता है:** राजधानियों और बड़े शहरों में 'मनोहर कहानियां/सत्यकथा' के लिए फ्रीलांस संवाददाताओं की. संपर्क करें : editor@delhipress.biz

शोभिका मीडिया प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेशनाथ द्वारा ई-8, दिल्ली प्रैस बिल्डिंग, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएसपीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली प्रैस, डीएलएफ 50, इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, फरीदाबाद हरियाणा-121003 से मुद्रित. संपादक:परेशनाथ (वौ-6, अंक-11)
**संपादकीय, वितरण एवं एजेंसी कार्यालय :** ई-8, दिल्ली प्रैस बिल्डिंग, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.

**वार्षिक ग्राहक:** दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा.लि., ई-8, झंडेवालान एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली- 110055. फोन: 91-11-41398888 Extn. No. 119, 221, 264 **मुंबई कार्यालय:** बी-3, वडाला उद्योग भवन, नायगांव क्रौस रोड, वडाला, मुंबई. फोन: 91-22-24122661/43473050

मनोहर कहानियां

## संपादकीय

देश की सब से बड़ी अदालत सुप्रीम कोर्ट के सामने 16 अगस्त, 2021 को उस समय अफरातफरी मच गई, जब एक युवक और युवती ने अपने ऊपर ज्वलनशील पदार्थ डाल कर आग लगा ली थी. इस में बड़ी बात यह थी कि आग लगाते समय युवक ने खुद को फेसबुक पर लाइव कर दिया था. किसी तरह वहां मौजूद सुरक्षाकर्मियों और अन्य लोगों ने आग बुझा कर दोनों को डा. राममनोहर लोहिया अस्पताल में भरती कराया, जहां इलाज के दौरान दोनों की ही मौत हो गई. दोनों ही आपस में अच्छे दोस्त थे.

पता चला कि इन दोनों ने पुलिस प्रशासन के उत्पीड़न की वजह से यह कदम उठाया था. लड़की उत्तर प्रदेश के गाजीपुर की रहने वाली थी. वर्ष 2019 में मऊ की घोसी लोकसभा क्षेत्र के बसपा सांसद अतुल राय ने उस के साथ बलात्कार किया था. युवती के दोस्त ने यह बात सोशल मीडिया पर उठाई थी, जिस की वजह से मजबूरी में पुलिस को आरोपी सांसद के खिलाफ कारवाई करते हुए जेल भेजना पड़ा. इस के बाद सांसद के भाई ने पुलिस प्रशासन से मिल कर युवती और उस के दोस्त को हर तरह से धमकाना शुरू कर दिया. इतना ही नहीं, उन दोनों के खिलाफ पिछले साल नवंबर में जाली दस्तावेज बनाने की रिपोर्ट भी दर्ज करा दी. कोर्ट ने उन की गिरफ्तारी के वारंट जारी कर दिए.

सिविल सर्विस परीक्षा की तैयारी कर रही वह युवती और दिल्ली के किरोड़ीमल कालेज से एमए कर रहे उस के दोस्त को लगा कि सांसद के प्रभाव के कारण उन्हें उत्तर प्रदेश प्रशासन से न्याय नहीं मिलेगा और उन की जान भी खतरे में हैं तो उन्होंने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर कर उन के केस को उत्तर प्रदेश से सुप्रीम कोर्ट में ट्रांसफर करने की गुहार लगाई. लेकिन ऐसा नहीं हुआ.

दोनों होनहार युवा पुलिस, प्रशासन और अदालत के चक्कर लगालगा कर न्याय पाने को भटकते रहे. जब उन्हें इंसाफ मिलने की आस नहीं दिखी तो दोनों ने न्याय के सब से बड़े मंदिर की चौखट पर स्वयं को आग के हवाले कर दिया.

यह सभी जानते हैं कि कोई भी व्यक्ति बिना किसी वजह इतनी दर्दनाक तरीके से मरना नहीं चाहेगा. लेकिन यह काम व्यक्ति तभी करने के लिए मजबूत होता, जब उस का मनोबल टूट जाता है. उसे कहीं से कोई भी उम्मीद की किरण दिखाई नहीं देती, तब वह ऐसा खौफनाक कदम उठाता है.

दिल्ली ही नहीं बल्कि देश के हर शहर में इसी तरह की घटनाएं सामने आती रहती हैं. इस तरह के ज्यादातर केसों में लोग पुलिस की कारवाई से क्षुब्ध हो कर ऐसा कदम उठाते हैं. राजस्थान के एक मामले में तो पुलिस की लापरवाही और कार्यप्रणाली की कलई ही खुल गई.

भरतपुर की एक नाबालिग लड़की के साथ 4 युवकों ने चंडीगढ़ ले जा कर 18 जुलाई, 2020 को गैंगरेप किया. नामजद रिपोर्ट दर्ज होने के बावजूद पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार नहीं किया. इस का नतीजा यह हुआ कि उन्हीं आरोपियों ने एक दिन पीड़िता की बड़ी बहन को स्कूल जाते समय रोक लिया और उस के साथ भी जबरदस्ती करने लगे. इस की शिकायत भी थाने में की गई. पुलिस ने इस बार भी कोई कारवाई नहीं की तो लड़की ने 20 जनवरी, 2021 को आईजी औफिस में जा कर आत्मदाह की कोशिश की. यहां भी पुलिस की ही लापरवाही सामने आती है.

पुलिस और प्रशासन से इंसाफ न मिलने पर कन्नौज के रहने वाले एक युवक और उन्नाव की रहने वाली रुचि सिंह ने अपने बच्चों के साथ लखनऊ विधानसभा भवन के सामने आत्मदाह करने की कोशिश की. ये लोग भी लंबे समय से इंसाफ के लिए अधिकारियों के दरदर भटके थे. लेकिन जब पुलिस प्रशासन के ऊपर से इन का विश्वास उठ गया तो मजबूरी में उन्हें यह कदम उठाना पड़ा.

वैसे अपने स्वार्थ के लिए पुलिस और प्रशासन क्षेत्र के माननीयों को खुश रखने की कोशिश करते हैं तो वहीं उन्हें उच्चाधिकारियों के दबाव से भी जूझना पड़ता है. इस स्थिति में वे भी उन्हीं कामों को प्राथमिकता देते हैं जिन में उन्हें अपना हित दिखाई देता है. इसी चक्कर में वह कभीकभी केस की संवेदनशीलता को पहचानने में भी गलती कर बैठते हैं.

ऐसे में पीड़ित व्यक्ति को लगने लगता है कि उसे इस सिस्टम से न्याय नहीं मिलेगा. तब उसे अपनी जिंदगी निरर्थक नजर आती है. फिर वह ऐसी जगह पर आत्महत्या करने की कोशिश करता है, जहां से उस की आवाज जल्द फैल कर उच्चाधिकारियों की संवेदनहीनता की पोल खोल दे. ऐसे में पुलिस और प्रशासन को भी चाहिए कि वह ईमानदारी से काम करते हुए पीड़ित के मन में विश्वास जगाए ताकि लोगों का न्याय प्रक्रिया पर भरोसा बना रहे.

WALK N WIN SOBER LIVING HOME
& COUNSELING CENTRE
NO ALCOHOL
NO DRUGS
Address – House No, 71/3, Pragati Vihar, Near Velmed Hospital, Turner Road, Dehradun
Email:dattvidya76@gmail.com | +91 7895872880, +91 7983774374

# नशा मुक्ति केंद्र में चढ़ा सैक्स का नशा

❑ नितिन शर्मा 'सबरंगी'

छाया : विनोद पुंडीर

नशा मुक्ति केंद्र का संचालक विद्यादत्त रतूड़ी

नशा मुक्ति केंद्र में लोग अपने बिगड़ैल बच्चों को इसलिए भरती कराते हैं ताकि उन की नशे की लत छूट सके. लेकिन देहरादून के नशा मुक्ति केंद्र का संचालक वहां रहने वाली लड़कियों को नशे का शौक पूरा कराने के बदले में अपनी हवस मिटाता था. वहां से भागी 4 लड़कियों ने पुलिस को जो आपबीती सुनाई, वह...

कमरे में बैठी प्रिया फोटो एलबम पलट कर उसे बड़े ध्यान से देख रही थीं. एलबम देखतेदेखते उन की नजर एक फोटो पर ठहर गई. वह फैमिली फोटो था, जिस में वह खुद, उन के पति नवीन और इकलौती बेटी निधि थी. निधि का एक हाथ मां के और दूसरा पिता के गले में था.

वह खुल कर मुसकरा रही थी. उसे देख कर प्रिया यादों में कहीं खो सी गईं. उन्हें एहसास ही नहीं हुआ कि उन के पति कब उन के पास आ कर बैठ गए. उन्होंने प्रिया के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, ''क्या सोच रही हो ?''

''सोच रही हूं कि समय कितना बदल जाता है. कभी कितनी अच्छी थी हमारी बेटी, हमें कितना प्यार करती थी और अब लगता है, न जाने कितनी दूर हो गई.'' प्रिया ने आंखों में उमड़ आए अपने आंसुओं को पल्लू से साफ

छायांकन: मॉडलिंग

करते हुए अफसोसजनक लहजे में कहा तो पति ने उन्हें समझाया, ''यूं परेशान होने से भी बात नहीं बनेगी, समय के साथ सब ठीक हो जाएगा. मुझे पक्का भरोसा है कि वह ठीक हो कर ही जल्द घर आएगी.''

''आप नहीं जानते, मुझे बेटी की बहुत फिक्र रहती है. जवान लड़की को हम ने घर से बाहर छोड़ा हुआ है. मजबूरी न होती तो मैं ऐसा कभी नहीं करती. कहीं वहां उस के साथ कुछ गलत न हो. एक बार उस ने मुझ से कहा था...'' प्रिया बोलते हुए रुक गईं तो नवीन ने पूछा, ''क्या कहा था ?''

''वह बता रही थी कि वहां सब कुछ ठीक नहीं है.''

''मुझे तो ऐसा नहीं लगता, क्योंकि वहां और भी लड़कियां रहती हैं और फिर वह लोग इतना बड़ा सेंटर बच्चों के भविष्य को बचाने के लिए ही तो चला रहे हैं. निधि का विश्वास तो मैं कर नहीं सकता, क्योंकि वह नशे के लिए हम से कितना झूठ बोलती रही है, यह तो तुम भी जानती हो.'' नवीन ने कहा.

''आप की बात भी ठीक है, लेकिन...''

''लेकिनवेकिन कुछ नहीं, उस की फिक्र करनी बंद करो, क्या पता निधि वहां से छुटकारा पाने के लिए उल्टीसीधी बातें करती हो,'' नवीन ने पत्नी को समझाया.

''आप भी सही कहते हैं, हमारा विश्वास तो वह खो चुकी है. अगर वह गलत संगत में न पड़ती, तो ऐसी नौबत ही नहीं आती. हम ने कभी उस के लिए किसी चीज की कमी नहीं छोड़ी, फिर भी हमें बुरे दिन देखने पड़े.''

''एक बात बताऊं प्रिया,'' नवीन ने कहा.

''क्या ?''

''हमारी दी गई आजादी का भी उस ने गलत फायदा उठाया, हमें भी उस पर शुरू से ही नजर रखनी चाहिए थी.''

''सही कहा आप ने.'' प्रिया बोली.

किस की हंसतीखेलती जिंदगी में कब क्या हो जाए, इस को कोई नहीं जानता. प्रिया और नवीन के साथ भी ऐसा हुआ था. निधि उन की इकलौती बेटी थी. वह प्राइवेट नौकरी करते थे और जिंदगी में खुशियां थीं.

यह दंपति उत्तराखंड की राजधानी देहरादून में रहता था. हर मातापिता अपने बच्चों के अच्छे भविष्य की कल्पना करते हैं. प्रिया और नवीन के साथ भी ऐसा ही था. निधि राजधानी के ही एक नामी इंस्टीट्यूट से ग्रैजुएशन कर रही थी.

हमारे सभ्य समाज का यह एक कड़वा सच है कि बड़े शहरों में नशे का कारोबार अपनी जड़ें जमा चुका है. युवा बुरी संगत के

चलते इस का शिकार हो जाते हैं. शुरू में वे मजे के लिए नशा करते हैं और बाद में इस के आदी हो जाते हैं.

निधि भी ऐसी संगत में पड़ कर नशे की लत का शिकार हो चुकी थी. घर से पौकेटमनी के नाम पर पैसे लेना और नशे में उड़ाना, सहेलियों के साथ घूमनाफिरना, बहाने से उन के घर जाना उस की आदत बन चुकी थी.

मातापिता को पता भी नहीं था कि उन की बेटी किस डगर पर चल रही है. संगत और बुरी आदतों का असर इंसान पर वक्त के साथ दिखने लगता है.

निधि की पैसे की डिमांड बढ़ती गई और वह बारबार तरहतरह के बहानों से घर से ज्यादा बाहर जाने लगी तो मातापिता को शक होने लगा. एक दिन प्रिया ने देर रात निधि को उस के कमरे में ड्रग्स लेते पकड़ा तो उन का शक विश्वास में बदल गया.

## निधि को लग गई ड्रग की लत

परिवार में मानो तूफान आ गया था. मातापिता अपने बच्चों को हमेशा अच्छी नजर से देखते हैं और उन्हें प्यार भी करते हैं, इसलिए जल्द शक नहीं कर पाते. यह अच्छी बात है, लेकिन बच्चों की संगत को भी नजरंदाज कर दिया जाए, यह लापरवाही है.

निधि का परिवार भी यह गलती कर चुका था. निधि अपने परिवार की इकलौती बेटी थी. मातापिता ने उसे समझाया. एकदो दिन तो वह घर पर ही रही, लेकिन फिर बाहर घूमने की जिद करने लगी. उस का स्वभाव भी बदल चुका था. वास्तव में नशे की तलब उसे बेचैन कर रही थी.

विद्यादत्त रतूड़ी द्वारा संचालित नशा मुक्ति केंद्र जहां नशे के बदले युवतियों का यौनशोषण किया जाता था

दरअसल, निधि ड्रग्स की बुरी तरह आदी हो चुकी थी. वह पहले जैसी कतई नहीं रही थी. पढ़ाई का रिजल्ट आया तो उस में भी वह फेल थी. एक समय ऐसा भी आया जब वह अपनी तलब पूरी करने को पैसे मांगती और न देने पर झगड़ा करती.

घर के हालात तनावपूर्ण थे. मातापिता की रातों की नींद उड़ चुकी थी, क्योंकि वह बेटी को समझा कर थक चुके थे, लेकिन वह मानने को तैयार नहीं थी. बेटी के भविष्य को बचाना उन के लिए चुनौतीपूर्ण हो गया. वह हर सूरत में निधि को बुरी लत से निकालना चाहते थे.

नशा मुक्ति केंद्र में मौजूद नशे के आदी युवकयुवतियां

उन लोगों के सामने अब एक ही रास्ता था कि बेटी को किसी नशा मुक्ति केंद्र में छोड़ दिया जाए. देहरादून में ऐसे कई नशा मुक्ति केंद्र थे. ऐसे ही एक अच्छे सेंटर के बारे में नवीन को पता चला.

उस का नाम था 'वाक एंड विन सोबर लिविंग होम एंड काउंसलिंग सेंटर'. यह नशा मुक्ति केंद्र थाना क्लेमेनटाउन के अंतर्गत टर्नर रोड पर प्रकृति विहार में स्थित था. एक आवासीय कोठी को नशा मुक्ति केंद्र का रूप दिया गया था.

नशा मुक्ति केंद्र में ऐसे लड़केलड़कियों को रखा जाता था, जो नशे के आदी थे. नशा छुड़ाने के बदले उन के परिजनों से महीने में तय फीस ली जाती थी. यह फीस 20 से 40 हजार रुपए होती थी.

बच्चों के भविष्य के लिए मातापिता खुशीखुशी फीस चुकाने को तैयार रहते थे. इस नशा मुक्ति केंद्र के संचालक विद्यादत्त रतूड़ी थे, जबकि डायरेक्टर विभा सिंह.

नवीन और प्रिया ने यहां अपनी बेटी के बारे में बताया और सभी बातें तय होने के बाद बेटी को वहां रहने के लिए छोड़ दिया. वह

खुश थे कि बेटी वहां रह कर अब पूरी तरह ठीक हो जाएगी, लेकिन उस की फिक्र जरूर बनी रहती थी.

प्रिया के लिए बेटी का नशा मुक्ति केंद्र में जाना किसी बुरे सपने की तरह था. प्रिया अकसर बेटी के बारे में सोचती रहती थीं. उस दिन भी वह फोटो एलबम देखते हुए बेटी को याद कर रही थीं तभी पतिपत्नी उस के बारे में चर्चा करने लगे थे.

## 4 लड़कियां हुईं गायब

प्रिया फोन पर बेटी से बात कर लिया करती थीं तो एक दिन बेटी ने बताया था कि वहां सब कुछ ठीक नहीं है. इस बात ने उन्हें चिंतित किया था, लेकिन नवीन ने अपनी बातों से उन की चिंता को दूर कर दिया था. लेकिन उन की बेटी की बात तब सच साबित हुई, जब नशा मुक्ति केंद्र से एक हैरान कर देने वाली खबर निकली.

दरअसल, 6 अगस्त, 2021 के अखबारों में एक खबर सुर्खी बनी कि 'नशा मुक्ति केंद्र से 4 लड़कियां फरार'. इस खबर ने लोगों को चौंका दिया. थाना क्लेमेनटाउन पुलिस को सूचना मिली कि नशा मुक्ति केंद्र से 5 अगस्त की शाम 4 लड़कियां वार्डन को चकमा दे कर भाग गईं.

जातेजाते वह सेंटर का बाहर से ताला भी लगा गईं. इस से सेंटर में हड़कंप मच गया. जिस की सूचना नशा मुक्ति केंद्र की डायरेक्टर विभा सिंह की तरफ से पुलिस को दी गई थी. थानाप्रभारी धर्मेंद्र रौतेला अपनी टीम के साथ सेंटर पहुंचे और पूछताछ की.

पूछताछ में पता चला कि चारों लड़कियां चकमा दे कर भागी थीं, लेकिन बड़ा सवाल यह था कि लड़कियां सेंटर से आखिर क्यों भागीं? इस का ठीक जवाब लड़कियां ही दे सकती थीं. पुलिस को इस की आशंका जरूर हुई कि वजह कोई बड़ी रही होगी. बहरहाल पुलिस ने गुमशुदगी दर्ज कर ली.

7 अगस्त को पुलिस ने नशा मुक्ति केंद्र से भागी चारों लड़कियों को एक होटल से खोज निकाला. पुलिस ने उन से पूछताछ की तो उन्होंने नशा मुक्ति केंद्र के बारे में ऐसा सनसनीखेज खुलासा किया, जिसे सुन कर पुलिस भी चौंक गई. एक लड़की ने आगे बढ़ कर बताया, ''सर, वह नशा मुक्ति केंद्र नहीं नरक केंद्र है.''

किसी नशा मुक्ति केंद्र से लड़कियों का इस तरह से भाग जाना बेहद संवेदनशील था. एसएसपी योगेंद्र सिंह रावत ने अधीनस्थों को तुरंत लड़कियों की तलाश करने के निर्देश दिए. एसपी (सिटी) सरिता डोभाल ने इस प्रकरण की मौनिटरिंग शुरू कर दी.

जिस के बाद एक पुलिस टीम का गठन कर दिया गया. सीओ अनुज कुमार के निर्देशन में इस टीम में थानाप्रभारी धर्मेंद्र रौतेला, एसआई शोएब अली, रजनी चमोली, आशीष रवियान, हैड कांस्टेबल राजकुमार, कांस्टेबल सुनील पंवार, हितेश, भूपेंद्र व पिंकी आदि को शामिल किया गया.

पुलिस ने सीसीटीवी कैमरों की फुटेज की मदद ली, लेकिन तत्काल कोई सफलता नहीं मिली. 7 अगस्त को पुलिस ने चारों लड़कियों को एक होटल से खोज निकाला.

पुलिस ने लड़कियों से पूछताछ की तो उन्होंने नशा मुक्ति केंद्र के बारे में ऐसा सनसनीखेज खुलासा किया, जिसे सुन कर पुलिस भी चौंक गई. एक लड़की ने आगे बढ़ कर बताया, ''सर, वह नशा मुक्ति केंद्र नहीं नरक केंद्र है.''

''मतलब?''

''वहां छेड़छाड़ की जाती है, मेरे साथ तो कई बार दुष्कर्म किया गया. मैं ने इस की शिकायत डायरेक्टर विभा से की तो उन्होंने उल्टा मेरे साथ मारपीट की.''

लड़कियों के आरोप वाकई संगीन थे, ऐसे में तत्काल एक्शन लेना जरूरी था. पुलिस ने लड़की की तहरीर पर नशा मुक्ति केंद्र के संचालक विद्यादत्त रतूड़ी व डायरेक्टर विभा

## खुलेंगे छिपे हुए राज

नशा मुक्ति केंद्र प्रकरण में पुलिस को पता चला कि कुछ संदिग्ध लोगों का नशा मुक्ति केंद्र में आनाजाना था. यह लोग संचालक विद्यादत्त व डायरेक्टर विभा से मिलने के लिए आया करते थे. शक है कि विद्यादत्त लड़कियों को अन्य लोगों के साथ भी हमबिस्तर होने के लिए मजबूर करता था.

राज उजागर हो सके, इसलिए पुलिस ने सीसीटीवी कैमरों का डिजिटल वीडियो रिकौर्डर जांच के लिए अपने कब्जे में ले लिया. आसपास के लोगों ने भी बताया कि नशा मुक्ति केंद्र में अंजान लोग आतेजाते रहते थे. यह भी माना जा रहा है कि लड़कियों को बाहर भेजा जाता था, लेकिन पुलिस पुख्ता जांच से पहले कुछ बोलने को तैयार नहीं है.

डीवीआर की रिकौर्डिंग को अंजान लोगों के आने पर बंद तो नहीं कर दिया जाता था, इस की भी जांच होगी और जो लोग आते थे उन सभी से भी पूछताछ की जाएगी ताकि राज छिप न सके.

विद्यादत्त कब से यह शर्मनाक काम कर रहा था, इस को सामने लाने के लिए पुलिस ऐसे लोगों से भी पूछताछ करेगी जिन की बेटियां नशा मुक्ति केंद्र से जा चुकी थीं.

उत्तराखंड मानवाधिकार आयोग ने भी इस सनसनीखेज प्रकरण का संज्ञान लिया और पुलिस प्रशासन से 4 हफ्ते में विस्तृत रिपोर्ट मांगी है. इस प्रकरण के सामने आने के लिए अन्य नशा मुक्ति केंद्रों पर भी शिकंजा कसना तय माना जा रहा है.

HEMODEX®

Family Tonic
HEMODEX
Superior Haematinic with Anti-Oxidant
Balanced Nutritional Formula
SUPERIOR HAEMATINIC WITH ANTI-OXIDANTS
BALANCED NUTRITIONAL FORMULA
VITAMIN & PROTEIN

आपके सेहत का सच्चा साथी

Growmed उत्पादित आयरन टॉनिक लाल रक्तकण बढ़ाने एवं उत्तम स्वास्थ्य के लिए उपयोगी है। इसमें है भरपूर आयरन, फोलिक एसीड, $B_{12}$ तथा सौर्वीटॉल 70% जो कि चेहरा, जीभ आँख के पीलापन, चलने पर चक्कर आना या दम फूलना, उम्र से ज्यादा दिखना जैसे गम्भीर रोगों में अत्यधिक लाभदायी है।

GROWMED®
STOMAQUAR®

अब छुटकारा पाईये

GROWMED
STOMAQUAR
PROTECTIVE COATING ACTION
PROTECTIVE COATING ACTION

पेट में गैस, जलन, अपच, खट्टे डकार, पुराना कब्ज, पेप्टिक अल्सर, आँव, सिरदर्द, बेचैनी, मुँह में छाले, हाइपर–एसीडीटी, हिचकी आना एवं पेट के अन्य तकलीफों से। साथ ही इसका नियमित सेवन रक्तचाप को भी सही रखने में काफी लाभदायक है।

Manufacturer :
Tablet, Capsule, Liquid, Ointment and Injection

ऑनलाईन ऑर्डर के लिए लॉग इन करें:
www.growmed.in

GUJARAT
GROWMED MKT. INDIA PVT. LTD.
• CALL : 9431237784, 8987383154

सिंह के खिलाफ दुराचार, मारपीट, छेड़छाड़ व गालीगलौज की धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया.

## डायरेक्टर हुई गिरफ्तार

पुलिस टीम नशा मुक्ति केंद्र पहुंची और वहां से डायरेक्टर विभा सिंह को गिरफ्तार कर लिया, जबकि संचालक फरार हो चुका था. डायरेक्टर विभा सिंह ने चौंकाने वाली बातें पुलिस को बताईं.

अगले दिन पुलिस ने उसे न्यायालय में पेश कर के जेल भेज दिया. इस बीच लड़कियों को उन के परिजनों के हवाले कर दिया गया.

इस जांच में पुलिस को पता चला कि उक्त नशा मुक्ति केंद्र का संचालक विद्यादत्त रतूड़ी मूलरूप से पौड़ी गढ़वाल के उरमोला पट्टी गांव का रहने वाला था. पुलिस टीम उस के गांव रवाना हो गई, लेकिन वह वहां भी नहीं मिला. उस का मोबाइल भी स्विच्ड औफ आ रहा था.

यह सनसनीखेज प्रकरण सुर्खियां बन चुका था. पुलिस उस की तलाश में जुटी रही. आखिर 9 अगस्त, 2021 को आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया. वह श्यामपुर क्षेत्र के एक होटल में छिपा हुआ था.

पुलिस ने उस से गहराई से पूछताछ की तो संचालक, डायरेक्टर के साथ ही नशा मुक्ति केंद्र की ऐसी कहानी निकल कर सामने आई जिस ने न सिर्फ चौंका दिया, बल्कि नशा मुक्ति केंद्र का काला सच भी सामने आ गया.

दरअसल, विद्यादत्त रतूड़ी के पिता हर्ष मनी रतूड़ी एयरफोर्स में नौकरी करते थे. कई साल पहले उन की तैनाती कानपुर में थी. विद्यादत्त कम उम्र में ही बुरी संगत का शिकार हो गया और उसे शराब पीने की लत लग गई.

मातापिता ने बेटे को बहुत संभालने की कोशिश की, लेकिन वह हाथ से निकल चुका था. समय अपनी गति से चलता रहा. इस बीच उस का विवाह भी कर दिया गया. वह नशे का इतना आदी हो गया कि दिन में भी नशा करने लगा.

साल 2018 में उसे देहरादून के सरस्वती विहार स्थित एक नशा मुक्ति केंद्र में भरती कराया गया. वहां पर अपने नशे के इलाज के दौरान ही उस ने नशा मुक्ति केंद्र में स्टाफ के रूप में काम करना शुरू कर दिया. विद्यादत्त ने करीब 3 साल वहां काम किया.

कहते हैं कि जो व्यक्ति जैसा होता है, उसे वैसे ही लोग मिलने लगते हैं. विद्यादत्त के साथ भी यही हुआ. नशा मुक्ति केंद्र में उस की

> विद्यादत्त शातिर दिमाग व्यक्ति था. वह खुद नशेबाज था, इसलिए नशा करने वालों की तलब और उन की कमजोरियों को बखूबी जानता था. उस ने अपने यहां नशे का उपचार कराने के लिए रहने वाली लड़कियों को ही अपना शिकार बनाने की ठान ली.

नशा मुक्ति केंद्र की डायरेक्टर विभा सिंह का बयान दर्ज करती पुलिस

मुलाकात विभा सिंह से हुई. विभा सिंह उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर की विष्णुपुरी कालोनी की रहने वाली थी. उसे भी शराब की लत थी. अपनी इस लत के कारण ही नशा मुक्ति केंद्र में भरती हुई थी.

विद्यादत्त और विभा के बीच अच्छी जानपहचान हो गई. एक दिन दोनों बैठे हुए थे तभी विद्यादत्त ने कहा, ''मैं ने एक प्लान किया है.''

''क्या ?'' विभा ने पूछा.

''हम दोनों अपना नशा मुक्ति केंद्र खोल लें तो कमाई अच्छी हो सकती है.''

विद्यादत्त का आइडिया विभा को जम गया. उस ने तपाक से कहा, ''चाहती तो मैं भी यहीं हूं, लेकिन क्या यह इतना आसान है.''

''बिलकुल हम दोनों कोशिश करेंगे तो हो जाएगा, वैसे हमें खुद रह कर इतना तो पता चल ही गया है कि नशा मुक्ति केंद्र कैसे चलाया जाता है. इस में कमाई भी अच्छी है.''

''ठीक है, मैं तुम्हारे साथ हूं.'' विद्या ने सहमति जताई.

## संचालक और डायरेक्टर खुद भी थे नशेड़ी

इस के बाद दोनों बाहर आए और अपनी तैयारियों में जुट गए. उन्होंने प्रकृति विहार में एक कोठी किराए पर ली और जरूरी तैयारियां कर के फरवरी, 2021 में नशा मुक्ति केंद्र खोल कर उस का प्रचारप्रसार शुरू कर दिया.

विद्यादत्त खुद संचालक बना और विभा को डायरेक्टर बना दिया. समाज में कितने ही लोग अपने बच्चों के नशा करने से परेशान रहते हैं. ऐसे लोगों की ही दोनों को तलाश थी. जल्द ही उन के यहां

बच्चों के सम्पूर्ण शारीरिक विकास एवं विशेष इम्युनिटी बढ़ाने में सहयोग करता है।

GROWMED®

नक्कालों से सावधान
ग्रोमेड
देखकर ही लें।

AD VITAMIN
बेबी ऑयल

ग्रोमेड AD Vitamin Baby Oil बच्चों की हड्डियों एवं मांसपेशियों की मजबूती एवं सम्पूर्ण शारीरिक विकास के लिए जरूरी है।
इसमें है Vitamin A 20000 I.U, Vitamin D 4000 I.U, Archis Oil, Olive Oil + Vitamin E

©: A-88094/2010
VITAMIN A, D, E
AND OLIVE OIL
GROWMED®
AD
VITAMIN
BABY OIL
FOR GROWTH AND
VIGOUR OF BABIES
GUJARAT
अब
चंदन एवं गुलाब के
खुशबू में भी

GROWMED®
PAIN RELIEF Gel & Tablet
आपको दर्द से दिलाए... मिनटों में आराम

GROWMED
PAIN RELIEF Gel
Diclofenac Diethylamine, Oleum Lini,
Methyl Salicylate & Menthol Gel
GROWMED
PAIN RELIEF Gel
15 gm

ग्रोमेड पेन रिलीफ जेल के इस्तेमाल से कमर दर्द, घुटनों का दर्द, कंधे का दर्द, एड़ी दर्द तथा स्लिप डिस्क दर्द से तुरंत आराम मिलता है।

Manufacturer : Tablet, Capsule, Liquid, Ointment and Injection

ऑनलाईन ऑर्डर के लिए लॉग इन करें:
www.growmed.in

GUJARAT
GROWMED MKT. INDIA PVT. LTD.
• CALL : 9431237784, 8987383154

पुलिस हिरासत में नशा मुक्ति केंद्र की डायरेक्टर विभा सिंह

लड़केलड़कियां आने शुरू हो गए. नशे के लती युवाओं के रहनेखाने की व्यवस्था कोठी में ही की गई थी.

कोठी के एक हिस्से में लड़कियों को रखा जाता था जबकि दूसरे हिस्से में लड़कों को. निर्धारित समय पर उन की घरवालों से बात भी कराई जाती थी.

विद्यादत्त शातिरदिमाग व्यक्ति था. वह खुद नशेबाज था, इसलिए नशा करने वालों की तलब और उन की कमजोरियों को बखूबी जानता था. उस ने अपने यहां नशे का उपचार कराने के लिए रहने वाली लड़कियों को ही अपना शिकार बनाने की ठान ली.

उस ने सोचा था कि नशे के लालच में लड़कियां किसी से शिकायत नहीं करेंगी और यदि वह ऐसा करेंगी भी तो उन के परिवार वाले भरोसा नहीं करेंगे. हालांकि विद्यादत्त खुद 3 बेटियों का पिता था. उस का परिवार पौढ़ी गढ़वाल में रहता था. परिवार के पास वह आताजाता रहता था.

एसएसपी योगेंद्र सिंह रावत, एसपी (सिटी) सरिता डोभाल और थानाप्रभारी धर्मेंद्र सिंह रौतेला

पुलिस टीम नशा मुक्ति केंद्र पहुंची और वहां से डायरेक्टर विभा सिंह को गिरफ्तार कर लिया, जबकि संचालक फरार हो चुका था. डायरेक्टर विभा सिंह ने चौंकाने वाली बातें पुलिस को बताईं. उस ने बताया कि उक्त नशा मुक्ति केंद्र का संचालक विद्यादत्त रतूड़ी मूलरूप से पौड़ी गढ़वाल के उरमोला पट्टी गांव का रहने वाला है.

जो खुद भी बेटियों का पिता हो, वैसे तो उसे ऐसी बात सोचते हुए भी शर्म आनी चाहिए थी, लेकिन उस के दिमाग में बेशर्मी हावी हो चुकी थी. वह मौका देख कर लड़कियों के साथ छेड़छाड़ करने लगा.

लड़कियां विरोध करतीं, तो वह उन के साथ मारपीट करता था. एक लड़की नशे के लिए ज्यादा बेचैन हो जाती थी. वह ड्रग्स लेती थी. विद्यादत्त ने उसे ही अपना सौफ्ट टारगेट बनाने का मन बना लिया.

एक दिन उस ने काउंसलिंग के बहाने उसे अपने पास बुलवाया और बड़े प्यार से कहा, ''देखो, मैं तुम्हारी परेशानी जानता हूं, नशे की आदतें एकदम नहीं छूटतीं.''

''हां सर, बहुत बेचैनी होती है.''

''ठीक है, मैं तुम्हारे लिए कुछ इंतजाम करता हूं.'' इस के बाद विद्यादत्त ने उस लड़की के लिए नशे की पुड़िया का इंतजाम कर दिया. इस से लड़की खुश हो गई.

मन ही मन विद्यादत्त भी खुश हो रहा था. इस का नतीजा यह निकला कि लड़की की नशे की लिए बेचैनी और भी बढ़ गई.

एक दिन उस ने ज्यादा जिद की तो विद्यादत्त उसे अपने कमरे में ले गया और उस के सामने पुड़िया रखते हुए बोला, ''यह तुम्हारी है, लेकिन तुम्हें एक शर्त माननी होगी.''

''क्या सर?'' वह चौंकते हुए बोली.

''मैं तुम्हें यह देता रहूंगा. बस, तुम्हें मुझे खुश करना होगा.'' कहने के साथ ही बिना लड़की का जवाब सुने, वह उस पर हावी हो गया. लड़की ने विरोध किया, लेकिन विद्यादत्त मनमानी कर के ही माना. विद्यादत्त का असली रूप सामने आ चुका था. लड़की को उस से घृणा हो गई और उस ने उसे सबक सिखाने की ठान ली. उस ने डायरेक्टर विभा से इस हरकत की शिकायत की तो विभा ने लड़की की ही पिटाई कर दी.

विद्यादत्त ने अपनी मनमानी को एक सिलसिला बना लिया. अन्य लड़कियों के साथ भी उस ने छेड़छाड़ की. विद्यादत्त वास्तव में लड़कियों की जिंदगी को बरबाद कर रहा था.

नशा मुक्ति केंद्र के अंदर क्या हो रहा था,

# लड़कियों के लिए यातना गृह बन गया था नशा मुक्ति केंद्र

पुलिस को जांच में पता चला कि आरोपी के नशा मुक्ति केंद्र में नशा छुड़ाने का कोई इंतजाम नहीं था, बल्कि लड़कियों को स्मैक व गांजा जैसे नशे उपलब्ध कराए जाते थे, इस के बदले में आरोपी विद्यादत्त फिजिकल रिलेशन और छेड़छाड़ करना चाहता था.

लड़कियों ने पुलिस को बताया कि एक लड़की ने संचालक के छेड़छाड़ करने पर उसे चांटा जड़ दिया था. इस के बाद उस लड़की की संचालक ने जम कर पिटाई की थी. संचालक मनमानी करता था, जो लड़की उस की बात नहीं मानती थी उसे तरहतरह से परेशान किया जाता था और यातनाएं दी जाती थीं.

नशे के लिए विद्यादत्त लड़कियों को ब्लैकमेल करता था. लड़कियां कोई शिकायत न करें या अपने परिजनों को कुछ न बताएं, यह सब संभालने की जिम्मेदारी विभा सिंह उठाती थी. नशा मुक्ति केंद्र के अंदर का माहौल देख कर लड़कियां अपनी बुरी राह के लिए पछताती थीं. संचालक इसी उधेड़बुन में रहता था कि लड़कियों को अपनी हवस का शिकार कैसे बनाया जाए.

बातचीत में वह लड़कियों की कमजोरी जानने की कोशिश करता था कि कौन बिना नशे के कितने दिन सही रह सकती है, जो लड़की ज्यादा कमजोर होती थी उसी पर वह जाल डाल देता था. वह यह बखूबी जानता था कि मातापिता नशा छुड़ाने में नाकाम रहे, तभी तो वह नशा मुक्ति केंद्र लाते हैं. लड़कियों को यातना देने के लिए मारपीट के अलावा उन्हें नुकीले स्टूल पर बैठाया जाता था, उन पर ईंट रख दी जाती थीं और रात में पहरा ड्यूटी कराई जाती थी.

पहरा करने वाली लड़की यदि रात में सो जाती थी तो उस की पिटाई होती थी. हर सजा के उन्होंने कोडवर्ड बना रखे थे.

पुलिस हिरासत में विद्यादत्त रतूड़ी

बाहर इस बारे में किसी को कुछ नहीं पता था. उस का शिकार लड़की अपने घर फोन करती थी तो विद्यादत्त और विभा डंडा ले कर उस के पास खड़े हो जाते थे.

पिटाई के डर से वह कुछ बोल नहीं पाती थी. इस मजबूरी में वह कुछ बता नहीं पाती थी. मातापिता खुश होते थे कि उन की बेटी का नशा छूट जाएगा, लेकिन वहां दूसरा ही खेल चल रहा था.

सभी लड़कियां विद्यादत्त से परेशान थीं. अपनी इज्जत का उन्हें खतरा सताने लगा था. उन्हें नशा मुक्ति केंद्र से छुटकारा पाना भी मुश्किल लग रहा था. दुष्कर्म का शिकार हुई लड़की के लिए जिंदगी बोझिल सी हो गई. उस के दिल में आत्महत्या का खयाल भी आता था. जिस के बाद उन्होंने वहां से भागने की प्लानिंग की.

5 अगस्त को 4 लड़कियों को मौका मिल गया और वहां से भाग कर वह एक होटल में जा कर छिप गईं. जहां से पुलिस ने उन्हें बरामद किया.

विद्यादत्त की करतूत ने लोगों को सोचने पर मजबूर कर दिया कि क्या नशा मुक्ति केंद्रों में यह सब भी होता है. जांचपड़ताल के दौरान पता चला कि नशा मुक्ति केंद्र में कोई एक्सपर्ट डाक्टर भी नहीं था, जो वहां भरती युवकयुवतियों की काउंसलिंग कर सके.

विद्यादत्त और विभा खुद ही एक्सपर्ट बन जाया करते थे जबकि वह खुद नशे के आदी रहे थे. वैसे उन का अतीत कोई जानता भी नहीं था. उन का मकसद केवल पैसा कमाना था. वह मारपीट के जरिए युवाओं को सुधारना चाहते थे.

### संचालक हो गया अंडरग्राउंड

लड़कियों के भागते ही विद्यादत्त तनाव में आ गया. उसे यही डर था कि लड़कियां उस की हरकतों के बारे में किसी को बता न दें. जब अगले दिन उसे यह पता लगा कि उन लड़कियों को पुलिस ने बरामद कर लिया है, तो लग गया कि उस की पोल खुलेगी और फिर पुलिस उसे नहीं छोड़ेगी.

इस से बचने के लिए उस ने अपना मोबाइल स्विच्ड औफ कर दिया और होटल में जा कर छिप गया, लेकिन वह बच नहीं सका. प्रकरण सामने आने के बाद मातापिता लड़केलड़कियों को नशा मुक्ति केंद्र से अपने घर ले गए. प्रिया व नवीन की बेटी निधि भी इन में से एक थी.

नशा छुड़ाने के चक्कर में उन की बेटी कलंक से बच गई. निधि अब खुद भी सबक ले कर सुधार की तरफ है.

पुलिस ने मुख्य आरोपी विद्यादत्त रतूड़ी को न्यायालय में पेश किया, जहां से उसे 14 दिनों की न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया.

कथा लिखने तक पुलिस मामले की और भी बारीकी से जांच कर रही थी. ●

—कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित. कथा में कुछ पात्रों के नाम परिवर्तित हैं

बाघ का शिकार बने दोस्त सोनू और (दाहिने पेज पर) कंधई

# 8 घंटे रहा मौत के जबड़े में

❑ दिनेश बैजल 'राज'

3 दोस्तों का सामना जब रात में बाघबाघिन के जोड़े से हुआ, तब उन का दिल दहल गया. जान बचाने के लिए एक पेड़ पर चढ़ गया, जबकि 2 दोस्त उन का निवाला बनने से नहीं बच पाए. 8 घंटे तक मौत के जबड़े में उन के रहने की रोमांच से भरी यह कहानी बहुत कुछ सीख देती है...

**पीलीभीत, उत्तर प्रदेश**

पेड़ पर चढ़ कर खुद को बचाया विकास ने

कंधई लाल ने बड़ी मिन्नतों के बाद खास दोस्त विकास उर्फ दिक्षु को अपने साथ ससुराल चलने के लिए तैयार किया. विकास को पता था कि उस के ससुराल जाने का मतलब था रात को वहीं ठहरना, जो वह नहीं चाहता था.

''अरे किस सोच में पड़ गया. वहां 1-2 घंटे का ही काम है. जल्दी लौट आएंगे. मुझे जाना बहुत जरूरी है इसलिए कह रहा हूं.'' कंधई ने उस की चिंता दूर की.

''देखो कंधई, तुम्हारी ससुराल जाने का रास्ता बड़ा खतरनाक है, इसलिए तो चिंता करनी पड़ती है.'' विकास बोला.

''कुछ नहीं होगा मेरे दोस्त. अच्छा, एक काम कर, मेरी मोटरसाइकिल खराब हो गई है, कोई इंतजाम कर दे यार,'' कंधई ने एक और आग्रह किया.

''उस की चिंता मत कर. सोनू से कह कर अपने भाई की मोटरसाइकिल मांग लेता हूं. लेकिन हां, हमें आधे घंटे के भीतर निकलना होगा. तभी हम लोग जलालपुर समय रहते पहुंच पाएंगे और अंधेरा होने से पहले लौट भी आएंगे.'' विकास बोला.

फिर विकास ने उसी समय सोनू को फोन कर उस की मोटरसाइकिल मांगी. यह बात 11 जुलाई की है. कुछ देर में ही सोनू अपने भाई की मोटरसाइकिल ले कर आ गया. तीनों दोस्त बाइक से शाहजहांपुर जिले के थाना पुवायां के गांव जलालपुर के लिए दिन के 11 बजे चल दिए.

तीनों दोस्तों में 35 वर्षीय कंधई लाल, 22 वर्षीय सोनू व 23 वर्षीय विकास उत्तर प्रदेश के पीलीभीत जिले के दियोरिया के निवासी थे. वे अकसर हरियाणा और दूसरे जगहों पर एक साथ काम करने आतेजाते रहते थे.

दियोरिया से जलालपुर करीब 20 किलोमीटर की दूरी पर है. मोटरसाइकिल के लिए यह दूरी कोई अधिक नहीं थी, लेकिन रास्ता पीलीभीत टाइगर रिजर्व के जंगलों के बीच से गुजरता था, इसलिए सुनसान और खतरनाक माना जाता था.

तीनों दोस्त हंसतेबतियाते सुनसान सड़क पर चले जा रहे थे. रास्ता कब तय हो गया, इस का उन्हें पता ही नहीं चला.

कंधई के ससुराल में उन के दोनों दोस्त काफी दिनों बाद गए थे, इस कारण उन की खूब आवभगत हुई. मिलनेमिलाने और बातचीत में समय का पता ही नहीं चला. शाम ढलने लगी, तब तक वे जलालपुर में ही जमे रहे.

देखते ही देखते शाम के साढ़े 7 बज गए. विकास ने कंधई से कहा कि जल्दी चलो जंगल का रास्ता है देर करना ठीक नहीं है. उस के बाद साढ़े 7 बजे तक तीनों दोस्त बाइक से दियोरिया के लिए निकल पड़े.

उन की बाइक जब दियोरिया मार्ग पर टूटे पुल के पास पीलीभीत टाइगर रिजर्व की वन चौकी बैरियर पर पहुंची, तब तक रात के साढ़े 8 बज चुके थे.

उन्होंने वहां तैनात वनकर्मी हरिराम से बैरियर खोलने के लिए कहा. किंतु हरिराम ने

जंगल के घुंघचाई-दियोरिया मार्ग से रात के समय जाने से मना कर दिया. क्योंकि अंधेरा होने पर टाइगर घने जंगल से निकल कर सड़क पर घूमते दिखते हैं, इसलिए वनकर्मी बैरियर लगा कर सड़क बंद कर देते हैं. लेकिन वे लोग हरिराम से जबरदस्ती बैरियर खुलवाने की जिद करने लगे.

हरिराम ने उसे मिले आदेश के बारे में बताया कि जंगल के रास्ते से रात को जाना मना है. उस ने उन्हें समझाया कि इस क्षेत्र में रात के समय बाघ सड़क पर आ जाते हैं. इसी कारण शाम 7 बजे से सुबह 5 बजे तक जंगल के इस रास्ते को बंद कर दिया जाता है.

कंधई ने हरिराम से विनती करते हुए कहा कि उन का घर पहुंचना जरूरी है. इस पर हरिराम ने कहा कि आप सभी यहां रुक कर थोड़ा और इंतजार करें. कुछ और राहगीरों के आ जाने पर रास्ता खोल सकता हूं. आप सभी इकट्ठे निकल जाना.

मौत के मुंह से लौटा विकास अपने घरपरिवार वालों के साथ

हरिराम की बात पर वे कुछ देर रुके जरूर, लेकिन किसी और के नहीं आने पर उन्होंने जबरन बैरियर को खुलवाया और निकल गए.

कुछ मिनटों में ही उन की बाइक वन चौकी से लगभग एक किलोमीटर आगे जंगल के रास्ते पर खन्नौत नदी के टूटे पुल के पास पहुंच गई थी. वहां तक तो सब कुछ ठीकठाक था, उन्होंने अपनी सुरक्षा के लिए बाइक की हेडलाइट बंद कर दी थी. सड़क के खंभों पर लगी साधारण लाइटों के सहारे रास्ते पर बगैर कोई आवाज के आगे बढ़ रहे थे.

तभी बाइक पर पीछे बैठे विकास ने रास्ते

# 800 वर्ग किलोमीटर में फैला है टाइगर

9 जून, 2014 को पीलीभीत के जंगलों को टाइगर रिजर्व का दरजा मिला था. यह जंगल बाघों के दीदार के लिए भी प्रसिद्ध है. 2014 में यहां 25 टाइगर थे.

वन विभाग के प्रयासों से 2018 में यह संख्या 65 हो गई. टाइगर रिजर्व का दरजा मिलने के बाद मानव-वन्यजीव संघर्ष साल 2016 से शुरू हुआ, जिस में अब तक 33 लोग अपनी जान गंवा चुके हैं.

पिछले साल 130 दिन में ही 7 ग्रामीणों की बाघ हमलों में मौत हुई थी. एक ओर जहां ग्रामीणों की मौत हुई, वहीं जंगल का दबंग भी सुरक्षित नहीं रहा.

टाइगर रिजर्व बनने के बाद एक दरजन से अधिक टाइगरों की मौत हो चुकी है. इधर एक साल बाद दियोरिया रेंज में बाइक सवार 2 युवकों की मौत के बाद एक बार फिर मानव-वन्यजीव संघर्ष की घटना सामने आई है.

पीलीभीत टाइगर रिजर्व (पीटीआर) में बाघ के हमले ने एक बार फिर अपनी दहशत फैला दी है. इस घटना ने टाइगर रिजर्व के अधिकारियों को सकते में डाल दिया है.

टाइगर रिजर्व के 5 किलोमीटर के दायरे में 256 गांव और एक किलोमीटर के दायरे में 72 गांव आते हैं. इन गांवों के अधिकांश लोगों का जंगल के रास्ते से आनाजाना है.

यही नहीं, 8 अन्य मार्ग मुख्यालय और दूसरे राज्य की सीमा को जोड़ते हैं. टाइगर रिजर्व का क्षेत्र जिले के अलावा अन्य जनपदों और राज्य की सीमा को जोड़ता है.

800 वर्ग किलोमीटर में फैले टाइगर रिजर्व क्षेत्र के रास्तों पर वन विभाग चैक पोस्ट हैं, उन पर वनकर्मी भी तैनात हैं फिर भी आवागमन रात में भी चालू रहता है. जबकि रात में आवागमन प्रतिबंधित है. ऐसा मानना है कि बारबार इंसानों पर हो रहे हमलों से टाइगर आदमखोर बनते जा रहे हैं जिस से टाइगर रिजर्व क्षेत्र के आसपास के गांवों में मानव जीवन को खतरा बढ़ता जा रहा है.

फिर भी लोग अपनी जान जोखिम में डाल कर परिवार के भरणपोषण के लिए यहां रहने और अपने खेतों पर काम करने को मजबूर हैं. टाइगर मूवमेंट की सही जानकारी के लिए अब तक वन मार्ग पर सीसीटीवी नहीं लगाए गए थे. घटना के बाद इस ओर ध्यान दिया गया है.

वन्यप्रेमी टी.एच. खान के अनुसार पीटीआर के भीतर से गुजरने वाले मार्गों पर पेट्रोलिंग नहीं होने और रातदिन जंगल मार्गों पर वाहनों की बेतरतीब आवाजाही को ले कर यदि कोई ठोस रणनीति नहीं बनाई गई तो भविष्य में जंगल मार्ग से गुजरने वाले लोग भी बाघ हमलों का शिकार हो सकते हैं.

प्रतिवर्ष 29 जुलाई को विश्व बाघ दिवस मनाया जाता है. वर्ष 2010 में रूस के सेंट पीटर्सबर्ग में हुए बाघ सम्मेलन में 29 जुलाई को अंतरराष्ट्रीय बाघ दिवस मनाने का निर्णय लिया गया था.

इस सम्मेलन में 13 देशों ने भाग लिया था और उन्होंने 2022 तक बाघों की संख्या में दोगुनी बढ़ोत्तरी का लक्ष्य रखा था.

इस वर्ष बाघ दिवस पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जानकारी दी कि सेंट पीटर्सबर्ग घोषणापत्र के तहत बाघों की आबादी बढ़ाने के लिए निर्धारित लक्ष्य भारत ने 4 साल पहले ही हासिल कर लिया है.

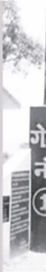

सोनू का शव ले कर रोतेबिलखते उस के घर वाले और ग्रामीण

के एक साइड में 2 बाघ बैठे देखे. अचानक उस के मुंह से चीख निकल गई. बाइक सोनू चला रहा था, कंधई बीच में बैठा था. सोनू ने बाइक धीमी कर दी. इस पर कंधई चीखता हुआ बोला, ''अरे बाइक तेजी से निकाल ले.''

उन्हें बाघ के पास से ही हो कर निकलना था. मौत को साक्षात सामने देख कर सोनू के होश उड़ गए. डर से सभी की सिट्टीपिट्टी गुम हो गई थी. इसी घबराहट में सोनू बाइक नहीं संभाल पाया.

बाइक तेज आवाज के साथ गिर गई. अभी वे बचने की सोचते, इस से पहले ही एक बाघ ने बाइक पर छलांग लगा दी. उस के पंजे की खरोंच सोनू को लगी. सब से पीछे विकास हेलमेट लगाए बैठा हुआ था, वह छिटक कर दूर जा गिरा था.

तब तक दूसरा बाघ विकास पर हमला कर चुका था. सोनू और कंधई झट से उठे और जान बचा कर रोड की तरफ भागे. पहले वाला बाघ उन के पीछे दौड़ा, जबकि दूसरे बाघ ने विकास के सिर पर पंजा और मुंह से हमला कर दिया.

वह हेलमेट पहने था, इसलिए बच गया और गड्ढे में जा गिरा. इसी बीच सोनू और कंधई भागते हुए उधर ही आ गए. दोनों बाघ उन के पीछे पड़ गए. तभी विकास को मौका मिल गया. वह गड्ढे से तुरंत बाहर निकला और लपक कर एक पेड़ पर चढ़ गया.

एक बाघ ने सोनू को जबड़े से पकड़ लिया था. बाघ ने उसे ऊपर की ओर उठा लिया था. उस की मौत हो गई थी. इस की विकास ने एक झलक भर देखी. वहीं दूसरा बाघ कंधई की ओर दौड़ा. अपनी जान बचाने के लिए कंधई पेड़ पर चढने लगा.

वह करीब 6 फीट ऊंचाई तक ही चढ़ पाया था कि बाघ ने जमीन से पेड़ पर चढ़ते हुए कंधई पर छलांग लगा दिया. इस झपट्टे में कंधई गिर गया. फिर वह उठ नहीं पाया. वह बेजान हो गया था. निश्चित तौर पर उस की मौत हो चुकी थी.

### बाघों का खूंखार रूप बहुत करीब से देखा

कुछ पल में ही सोनू और कंधई जमीन पर बेजान गिरे हुए थे. एक बाघ कंधई को खींच कर झाडियों के बीच ले गया. जबकि सोनू वहीं पड़ा रहा, किंतु उस के शरीर में जरा भी हलचल नहीं हो रही थी. वह मर चुका था.

यह खौफनाक मंजर पेड़ पर चढ़े विकास की आंखों के सामने था. उस की घिग्घी बंध गई थी. दहशत में उस ने आंखें बंद कर लीं. उसे लगा अब उस के मरने की बारी है. वह चुपचाप पेड़ पर बैठा रहा. दोनों बाघ पूरी रात वहीं चहलकदमी करते रहे.

सुबह लगभग 4 बजे के करीब दोनों बाघ जंगल के अंदर चले गए. जब वे काफी समय

## रिजर्व क्षेत्र

पीलीभीत टाईगर रिजर्व-पीलीभीत, महोफ-रेन्ज
बिना वैध अनुमति के प्रवेश निषेध है।
महोफ - रेन्ज
गेट नं. 1

दुनिया के 70 फीसदी जंगलों में रहने वाले बाघ भारत के हैं. इन के संरक्षण और जंगल बचाने के लिए भारत पूरी तरह समर्पित है.

देश के 18 राज्यों में 51 टाइगर रिजर्व हैं. इन में 14 टाइगर रिजर्व अंतरराष्ट्रीय मानकों पर खरे पाए गए है. इन्हें अंतरराष्ट्रीय बाघ मानक कार्यकारी समिति ने मान्यता दी है. इस दिवस का उद्देश्य बाघों के प्राकृतिक आवासों की सुरक्षा और बाघ संरक्षण के मुद्दों को जागरूक करना है. ○

घटनास्थल पर मौजूद आसपास के गांव वाले, स्थानीय पुलिसकर्मी और वनकर्मी

घटनास्थल के पास गिरी कंधई की मोटरसाइकिल

तक वापस नहीं लौटे तब विकास की जान में जान आई.

थोड़ी देर बाद कुछ लोग उधर से गुजरे. विकास ने आवाज दे कर उन्हें अपने पास बुलाया. उन से रात की घटना की आपबीती बताई. उन्होंने हिम्मत बंधाई. तब विकास पेड़ से नीचे उतरा. वह भय से कांप रहा था. विकास उन्हीं के साथ अपने घर आ गया.

विकास ने जंगल में हुई इस खौफनाक घटना की बात घर वालों को बताई. सोनू और कंधई के घर में तो कोहराम मच गया. जिस ने भी घटना के बारे में सुना, वह विकास के घर की ओर दौड़ पड़ा. उधर रात में हुई इस घटना की जानकारी वनकर्मियों ने सुबह अपने अधिकारियों को दी.

## दर्दनाक मंजर

कुछ देर में ही घटनास्थल पर घुंघचाई पुलिस चौकी के इंचार्ज प्रमोद नेहवाल, पूरनपुर कोतवाली के प्रभारी निरीक्षक हरीश वर्धन सिंह, सीओ लल्लन सिंह तथा टाइगर रिजर्व के फील्ड डायरेक्टर जावेद अख्तर, पीलीभीत टाइगर रिजर्व के डिप्टी डायरेक्टर नवीन खंडेलवाल भी अपनी टीम के साथ पहुंच गए. उन के साथ मृतकों के परिजन भी थे.

वनकर्मियों के साथ ही ग्रामीणों ने जंगल में मृतकों की तलाश की. सोनू का शव घटनास्थल के पास पड़ा मिला, जबकि कंधई के शव को बाघ घटनास्थल से लगभग 400 मीटर दूर ले गया था.

कंधई की आधी खाई लाश भी मिल गई. बाघों ने कंधई के शरीर का निचला हिस्सा खा लिया था, केवल धड़ से ऊपर का हिस्सा बचा था. सोनू के गले व सिर पर बाघ के पंजों व दांतों के निशान थे. खून बह कर शर्ट पर जम गया था. उन के परिजनों का रोरो कर बुरा हाल था.

डिप्टी डायरेक्टर नवीन खंडेलवाल के अनुसार, चलती बाइक पर टाइगर हमला नहीं

# रोमांचक रेस्क्यू से पकड़ा गया तेंदुआ

उत्तर प्रदेश के आगरा स्थित यमुनापार क्षेत्र के सीता नगर में रेस्क्यू के बाद एक तेंदुए को सुरक्षित पकड़ा गया. हुआ यह कि 22 जून, 2021 की सुबह करीब साढ़े 6 बजे जाट गली में रहने वाले सुमित सोलंकी ने अपने घर में तेंदुआ देखा. घर में तेंदुआ देखते ही सुमित डर गया और वह कमरे से भागा.

तेंदुए ने इसी बीच सुमित के ऊपर हमला कर दिया. पंजा मार कर उसे घायल कर दिया. जिस से उस के खून बहने लगा.

सुमित को लगा कि वह अब तेंदुए से नहीं बच पाएगा. लेकिन वह घायल होने के बावजूद भी अपनी जान बचाने को पूरी ताकत से घर के दरवाजे की ओर चिल्लाते हुए दौड़ा.

शोर मचाने से घर में छिपा तेंदुआ भी तेजी से घर के मुख्य दरवाजे से बाहर निकला. दोनों के एक साथ दरवाजे से निकलने के दौरान तेंदुए की टक्कर लगने से सुमित घर के बाहर चबूतरे पर जा गिरा.

उस समय सुमित के घर के सामने एक सफाईकर्मी झाड़ू लगा रहा था. अपने सामने तेंदुए के रूप में साक्षात मौत को देखते ही उस के होश उड़ गए. झाड़ू सड़क पर ही फेंक कर वह चीखता हुआ जान बचा कर वहां से भागा.

सुमित के घर से निकल कर तेंदुआ मोहल्ले की सड़क पर पहुंचा. भागते समय पड़ोस में ही एक 8 साल की बच्ची यशस्वी जो अपने घर के चबूतरे पर बैठी थी, इस तेंदुए के हमले से बालबाल बच गई. शोर सुन कर इस दौरान काफी भीड़ जुट गई.

लोगों के शोर के बीच तेंदुआ पास ही स्थित फलों के गोदाम में घुस गया. उस समय गोदाम के अंदर गोदाम मालिक का बेटा

आपके जीवन साथी को जरूरत है
जोश, उमंग और वास्तविक
प्यार की...

अपनी सैक्स संबधी समस्याऐं न छिपाये, ऐसा करने से आपका विवाहित जीवन दुखमय हो सकता है। सही परामर्श व सफल ईलाज से समस्या का समाधान किया जा सकता है। देश-विदेश में प्रसिद्ध सबलोक क्लिनिक के पास प्राकृतिक जड़ी-बूटियों व कीमती भस्मों से युक्त आयुर्वेदिक नुस्खे हैं। जिनके सेवन से आप अपनी सैक्स लाइफ को और भी रंगीन बनाकर विवाहित जीवन का पूर्ण आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। संतान के इच्छुक दम्पत्ती स्वयं मिले। ज्ञानबर्धक पुस्तक नवजीवन मुफ्त मंगवाये। विदेशों में हवाई डाक द्वारा इलाज भेजने का विशेष प्रबन्ध है।

एशिया में अपनी तरह का एकमात्र सर्वाधिक विश्वसनीय आधुनिक क्लिनिक

**सबलोक क्लिनिक**

**दरियागंज** (टाटा मोटर्स के ऊपर)
नेताजी सुभाष मार्ग (निकट दिल्ली गेट) नई दिल्ली-110002
9891300008 सुबह 12 से शाम 4, रविवार : अवकाश (रजिस्ट्रेशन 500/-)

www.sablokclinic.com / email : sablokclinicindia@gmail.com

**सबलोक क्लिनिक, दरियागंज की इंडिया में कहीं कोई ब्रांच नहीं है।**

करता है. टाइगर को देख कर बाइक सवार के रुकने पर ही वह हमला करता है. जब डर से युवकों की बाइक गिर गई थी, तब बाघ ने हमला कर दिया होगा.

उन का कहना था कि उन के स्टाफ ने रात को जंगल से जाने से मना किया था, फिर भी वे जंगल की तरफ गए थे. पुलिस ने दोनों लाशों का पंचनामा तैयार कर उन्हें पोस्टमार्टम के लिए भिजवा दिया.

अगर कोई बाघ किसी इंसान पर हमला कर उस का मांस खा ले और बारबार ऐसी परिस्थितियां बने तो उस के आदमखोर बनने की आशंका रहती है.

बाघ स्वभाव के मुताबिक किसी इंसान पर हमला कर उसे कुछ दूर खींच ले जाता है. अपने शिकार का मांस एक बार में नहीं खाता, बल्कि कुछ मांस खाने के बाद बाघ वहीं आसपास छिप कर आराम करने लगता है.

भूख लगने पर वह अपने उसी शिकार के पास खाने के लिए जाता है. बाघ को जब दोबारा अपना शिकार नहीं मिलता है, तब वह भूख मिटाने के लिए किसी वन्यजीव का शिकार करता है.

इंसानों पर बाघ के हमले की घटना को रोकने के लिए घटना के बाद उस स्थल पर कैमरे लगाए जाते हैं, जिस से बाघ की गतिविधियों पर नजर रखी जा सके.

तराई के जिले में बाघ संरक्षण के लिए दशकों से कार्य कर रही अंतरराष्ट्रीय संस्था विश्व प्रकृति निधि (डब्ल्यूडब्ल्यूएफ) के वरिष्ठ परियोजना अधिकारी नरेश कुमार के अनुसार एक बार किसी इंसान का मांस खा लेने से कोई बाघ आदमखोर नहीं हो जाता. किंतु बारबार इंसानों पर हमला कर के उस का मांस खाने लगे तो फिर वह आदमखोर हो जाता है.

> विकास ने पेड़ पर चढ़ कर अपनी जान तो बचा ली. मगर उस के चेहरे पर साथियों की मौत और बाघ का खौफ साफ झलक रहा था. मौत के मंजर का आंखों देखा हाल बताते हुए वह अब भी कांप जाता है.

पीलीभीत टाइगर रिजर्व के डिप्टी डायरेक्टर नवीन खंडेलवाल के अनुसार, 2 लोगों की जान जाने के बाद घटनास्थल के आसपास 20 कैमरे लगा दिए गए. साथ ही पैदल और बाइक सवारों को जंगल के रास्ते से प्रवेश पर रोक लगा दी गई है. चारपहिया वाहन के आनेजाने की छूट दी गई.

तीनों दोस्त साथ मेहनतमजदूरी करते थे. वे मजदूरी करने के लिए हरियाणा जाने की योजना बना रहे थे. इस को ले कर कंधई अपनी

---

तेंदुए को रेस्क्यू कर पिंजरे में ले जाते वनकर्मी

सोहेल मौजूद था, जैसे ही तेंदुआ उस के नजदीक आया सोहेल ने साहस और धैर्य का परिचय देते हुए भाग कर पहले अपनी जान बचाई.

घबराया तेंदुआ इस बीच अंदर एक कमरे में जा कर छिप गया. तब सोहेल ने समझदारी का परिचय देते हुए तत्काल पहला शटर बंद कर दिया. उस के बाद गोदाम के बाहर का शटर भी बंद कर दिया.

शोर सुन कर घरों से निकले लोगों के शरीर में सड़क पर तेंदुए को घूमता देख एक सिहरन दौड़ गई. सुमित पर हुए हमले से क्षेत्र के लोग दहशत में आ गए थे. जंगल की आग की तरह यह खबर आसपास के क्षेत्रों में फैल गई. तेंदुए को देखने के लिए देखतेदेखते हजारों लोगों की भीड़ वहां जुट गई. चंद पलों में लोग गोदाम घेर कर खड़े हो गए.

इस बीच लोगों ने आगरा के कीठम स्थित वाइल्डलाइफ की टीम को सूचना दी. घनी आबादी वाले क्षेत्र में तेंदुए के आने की सूचना पर बचाव अभियान को अंजाम देने के लिए वाइल्डलाइफ की 9 सदस्यीय टीम बचाव उपकरण, जाल, पिंजरे के साथ तुरंत वन विभाग के उपखंड अधिकारी देवेंद्र सिंह व डीएफओ अखिलेश पांडेय के साथ सीता नगर के लिए रवाना हो गई. सूचना पर पुलिस भी पहुंच गई.

जब तक बचाव टीम वहां पहुंची, तब तक वहां हजारों की भीड़ रेस्क्यू के इस दुर्लभ दृश्य को देखने के लिए गोदाम के बाहर जमा हो चुकी थी.

भीड़ तथा भगदड़ मचने से रोकने के लिए बचाव दल ने दरवाजे को खोले बिना तेंदुए को रेस्क्यू करने के लिए दीवार में एक छेद ड्रिल किया. उन्होंने तेंदुए का पता लगाने के लिए उस सेफ्टी होल के माध्यम से एक सर्च कैमरा लगाया.

इसी बीच वाइल्ड लाइफ एसओएस के पशु चिकित्सा सेवाओं के उपनिदेशक डा. एस. इलियाराजा ने सर्च कैमरे से कमरे में घुसे तेंदुए की पूरी पोजीशन का मुआयना किया. इस के बाद वाइल्ड लाइफ के एक्सपर्ट ने

ससुराल वालों से मिलने गया था. बाघ के हमले का शिकार हुए सोनू अपने 3 भाइयों में दूसरे नंबर पर था. वह अविवाहित था.

घटना के अगले दिन ही उस की शादी तय होनी थी. लड़की वाले रिश्ता तय करने आने वाले थे. उस की मौत से परिवार में पिछले कई दिनों से चल रहा हंसीखुशी का माहौल गम में बदल गया. जबकि कंधई लाल 3 भाइयों में सब से बड़ा था. उस के परिवार में पत्नी के अलावा 3 बेटे और 3 बेटियां हैं.

## कांप उठता है घटना को याद कर के

इस घटना से कुछ देर पहले रात करीब 8 बजे कनपारा निवासी सत्यपाल अपनी पत्नी सोमवती के साथ बाइक से जंगल के इसी रास्ते से निकला था. सत्यपाल के अनुसार वह पत्नी के साथ बरेली इलाके के एक धार्मिक स्थल पर प्रसाद चढ़ा कर लौट रहे थे.

घटनास्थल के पास सड़क किनारे बैठे बाघ को नहीं देख पाए. जैसे ही बाइक बाघ के पास पहुंची, बाघ को देख उन्होंने बाइक की रफ्तार बढ़ा दी. बाघ ने उन की बाइक का कुछ दूरी तक पीछा भी किया, लेकिन वे बच गए.

विकास ने पेड़ पर चढ़ कर अपनी जान तो बचा ली. मगर उस के चेहरे पर साथियों की मौत और बाघ का खौफ साफ झलक रहा था. मौत के मंजर का आंखों देखा हाल बताते हुए वह अब भी कांप जाता है.

उस ने बताया, ''बिजली सी कौंधी और धम्म की आवाज के साथ दोनों बाघ हम पर टूट पड़े. दोनों दोस्तों को बाघों ने उस की आंखों के सामने दबोच कर मार डाला. दिल दहला देने वाली घटना थी.

''बाघ ने मेरे सिर पर पंजा मारा और मेरा सिर अपने मुंह में ले लिया. बाघ के जबड़े में मेरा सिर आ गया था लेकिन हेलमेट ने जान बचा ली. इस बीच बाघ मुझे छोड़ कर दोस्तों का पीछा करने लगा. दिमाग ने थोड़ा काम किया और लपक कर मैं एक पेड़ पर चढ़ गया.

''करीब 8 घंटे पेड़ पर डरासहमा बैठा रहा. करीब एक घंटे बाद एक बाघ ने पेड़ पर चढ़ने की कोशिश की, लेकिन वह सफल नहीं हुआ. पूरी रात दोनों बाघ दहाड़ते रहे.

थानाप्रभारी
(पूरनपुर )
हरीश वर्धन सिंह

''मुझे लग रहा था कि मैं बच नहीं पाऊंगा. मगर मेरी एक तरकीब काम आ गई. इस दौरान मौका पा कर मैं पेड़ पर ऊंचाई पर चढ़ गया. पूरी रात दहशत में गुजारी. इस बीच दोनों बाघ मुझे निवाला बनाने के लिए पेड़ के नीचे मंडराते रहे. यकीन नहीं हो रहा कि मैं जिंदा बच गया.

''घर पहुंचने की जल्दी में हम ने वनकर्मी की बात नहीं मानी और जंगल के रास्ते पर आगे बढ़ गए.''

विकास उस भयावह रात को याद करते हुए कहता है कि दोनों बाघ मेरी स्मृति में हमेशा जिंदा रहेंगे. इस धरती पर जब तक मैं जीवित रहूंगा, उन की दहाड़ मेरे कानों को सुनाई देती रहेगी. ●

---

ट्रैंक्युलाइजर गन के माध्यम से तेंदुए के वजन के मुताबिक दवा ले कर उसे बेहोश कर दिया.

6 घंटे की मशक्कत के बाद तेंदुए को बेहोश किया गया. तेंदुए के बेहोश होने के बाद गोदाम का दरवाजा खोल कर बेहोशी की हालत में तेंदुए को पिंजरे में कैद कर लिया गया. इस के बाद आगरा में कीठम स्थित वन्य जीव अस्पताल ला कर उसे डाक्टरों की निगरानी में रखा गया.

वैसे बीती 20 जून को यमुनापार के ही मोतीमहल, यमुना ब्रिज स्टेशन और महताब बाग के पास तेंदुआ दिखने का शोर मचा था.

तब वन विभाग की टीम ने पंजों के निशान चैक कर के वह लकड़बग्घे के पैरों के निशान बताए थे. जबकि वह पैरों के निशान इसी तेंदुए के ही थे. वह पिछले 3 दिनों से उधर भटक रहा था.

22 जून को यह तेंदुआ सीता नगर के एक घर में घुस गया था.

डा. एस. इलियाराजा ने बताया, ''लगभग डेढ़ मीटर लंबाई का यह तेंदुआ एक नर है, जिस की उम्र करीब 7-8 साल है.''

इस तरह के बचाव अभियान अत्यधिक संवेदनशील होते हैं, जहां जानवर के साथसाथ लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सावधानीपूर्वक योजना बनाने की आवश्यकता होती है.

इतनी भीड़ के बीच बचाव अभियान बेहद चुनौतीपूर्ण रहा. रेस्क्यू औपरेशन के बाद तेंदुए को सफलतापूर्वक बचाया गया. उसे दोहरे पिंजरे में रखा गया.

आगरा में चंबल के बीहड़ में इन दिनों तेंदुओं का कुनबा बढ़ रहा है. अनुमान लगाया जा रहा है कि यमुना का किनारा भी पास में ही है. यहां से भी तेंदुआ आ सकता है. भोजन की तलाश में ही यमुना किनारे होते हुए आबादी वाले क्षेत्रों में ये आ जाते हैं.

वाइल्डलाइफ एसओएस के डा. बैजूराज ने बताया कि भोजन न मिलने के कारण वह काफी कमजोर था.

इलाज के बाद तेंदुए को एकांतवास में रखा गया. रात 11 बजे उस ने मुर्गियां और मीट खा कर भूख मिटाई. उस ने 3 दिन में 5 किलोग्राम से ज्यादा मीट खाया और तब कहीं जा कर उस की हालत सामान्य हुई.

22 जून को रेस्क्यू किए गए तेंदुए को 3 दिन रखने के बाद उस के स्वास्थ्य की जांच की गई. स्वस्थ्य होने के बाद 24 जून, 2021 की रात को वन्य जीव विशेषज्ञ, चिकित्सक के साथ 5 सदस्यीय टीम ले कर आगरा से रवाना हुई.

32 घंटे पिंजरे में रहने के बाद 25 जून, 2021 शुक्रवार की भोर में वन विभाग और वाइल्ड लाइफ की टीम द्वारा सहारनपुर से आगे शिवालिक के वन्यक्षेत्र में उसे छोड़ दिया. इस तरह रोमांच से भरे रेस्क्यू द्वारा वन्य प्राणी तेंदुए की जान बच सकी. ●

# 10 साल में सुलझी सुहागरात की गुत्थी

❑ सुनील वर्मा

2011 में शकुंतला से शादी करने के डेढ़ महीने बाद भी रवि की सुहागरात मनाने की हसरत पूरी नहीं हुई थी. इसी दौरान वह रहस्यमय ढंग से गायब हो गया. कोर्ट के आदेश पर चली जांच में दिल्ली पुलिस के 7 जांच अधिकारी भी बदल गए, लेकिन रवि का पता नहीं चला. 10 साल तक चली विभिन्न जांचों के बाद आखिर रहस्यों की गुत्थी में उलझे रवि हत्याकांड का ऐसा खुलासा हुआ कि..

छायांकन: मौडलिंग

अपने बेटे की तसवीर के सामने खड़े जयभगवान की आखें बारबार डबडबा रही थीं. हाथ में पकड़े रूमाल से आंखों में छलक आए आंसुओं की बूंदों को साफ करते हुए वह बारबार एक ही बात बुदबुदा रहे थे, ''बेटा, आज मेरी लड़ाई पूरी हो गई. तेरे एकएक कातिल को मैं ने सलाखों के पीछे पहुंचा दिया है. तू जहां भी है देखना कि तेरा ये बूढ़ा बाप तेरे कातिलों को उन के किए की सजा दिला कर रहेगा.''

कहतेकहते जयभगवान अचानक फफकफफक कर रोने लगे. रोतेरोते उन की आंखों के आगे अतीत के वह लम्हे उमड़घुमड़ रहे थे, जिन्होंने उन की हंसतीखेलती जिंदगी को अचानक आंसुओं में बदल दिया था.

बाहरी दिल्ली के समालखा में रहने वाले जयभगवान प्राइवेट नौकरी करते थे. उन के 2 ही बेटे थे. बड़ा बेटा रवि और छोटा डैनी. 10वीं कक्षा तक पढ़े रवि ने 18 साल की उम्र में पिता का सहारा बनने के लिए ग्रामीण सेवा वाले आटो को चलाना शुरू कर दिया था.

3 साल बाद मातापिता को रवि की शादी की चिंता सताने लगी. समालखा की इंद्रा कालोनी में रहने वाला शेर सिंह जयभगवान की ही बिरादरी का था.

शेर सिंह की पत्नी कमलेश राजस्थान के अलवर

जिले में टपूकड़ा की रहने वाली थी. उस ने अपनी साली शकुंतला का रिश्ता रवि से करने की सलाह दी थी. जिस के बाद दोनों पक्षों में बातचीत शुरू हुई.

कई दौर की बातचीत के बाद रवि का शेर सिंह की साली शकुंतला से रिश्ता पक्का हो गया. शकुंतला के पिता पतराम और मां भगवती के 6 बच्चे थे, 3 बेटे और 3 बेटियां. सब से बड़ी बेटी कमलेश की शादी शेरसिंह से हुई थी. शकुंतला 5वें नंबर की थी. उस से छोटा एक और लड़का था, जिस का नाम था राजू.

दोनों परिवारों की पसंद और रजामंदी से 8 फरवरी, 2011 को सामाजिक रीतिरिवाज के साथ रवि और शकुंतला की शादी हो गई. लेकिन शादी की पहली रात को रवि कुछ रस्मों के कारण अपनी दुलहन के साथ सुहागरात नहीं मना सका.

संयोग से अगले दिन कुछ नक्षत्र योग के कारण शकुंतला को पगफेरे की रस्म के लिए अपने मायके जाना पड़ा. नक्षत्रों के फेर के कारण शकुंतला को एक महीने तक मायके में ही रहना पड़ा.

किसी तरह एक माह गुजरा और 21 मार्च, 2011 को रवि अपनी पत्नी शकुंतला को अपनी ससुराल अलवर से अपने घर समालखा दिल्ली वापस ले आया.

शकुंतला थकी थी, लिहाजा उस रात भी रवि की पत्नी के साथ सुहागरात की मुराद पूरी नहीं हो सकी. अगली सुबह शकुंतला ने घर में पहली रसोई बना कर पूरे परिवार को खाना खिलाया, जिस के बाद जयभगवान अपनी नौकरी के लिए चले गए.

दोपहर को शकुंतला अपने पति रवि को साथ ले कर इंद्रानगर कालोनी में रहने वाली बड़ी बहन कमलेश से मिलने के लिए उस के घर चली गई. लेकिन शाम के 7 बजे तक जब बेटा और बहू घर नहीं लौटे तो जय भगवान ने बेटे रवि के मोबाइल पर फोन मिलाया. उस का फोन स्विच्ड औफ मिला.

जयभगवान छोटे बेटे को ले कर रवि के साढ़ू शेर सिंह के घर पहुंचे तो शकुंतला ने बताया कि रवि को रास्ते में ग्रामीण सेवा चलाने वाले कुछ दोस्त मिल गए थे. रवि उसे घर के पास छोड़ कर यह कह कर चला गया था कि कुछ ही देर में वापस लौट आएगा. लेकिन उस के बाद से ही वह वापस नहीं लौटा है.

रवि की हत्या शादी के कुछ दिनों बाद ही हो गई थी

जयभगवान बहू शकुंतला को उस की बहन के घर से अपने साथ घर ले आए. लेकिन पूरी रात बीत जाने पर भी रवि घर नहीं आया.

अगली सुबह 23 मार्च, 2011 को जयभगवान ने कापसहेड़ा थाने में अपने बेटे की गुमशुदगी की सूचना लिखा दी.

रवि के लापता होने की जानकारी मिलने के बाद अगले दिन शकुंतला के घर वाले भी अपने पड़ोसी कमल सिंगला को ले कर हमदर्दी जताने के लिए जयभगवान के घर पहुंचे.

उन सब ने भी जयभगवान के साथ मिल कर रवि की तलाश में इधरउधर भागदौड़ की. कई दिनों तक जब रवि का कोई सुराग नहीं मिला तो 10 दिन बाद मायके वाले शकुंतला को अपने साथ वापस अलवर ले गए.

इसी तरह वक्त तेजी से गुजरने लगा. कापसहेड़ा पुलिस ने लापता लोगों की तलाश

के लिए की जाने वाली हर काररवाई की. घर वालों ने जिस पर भी रवि के लापता होने का शक जताया, उन सभी को बुला कर पूछताछ की गई. मगर कोई सुराग नहीं मिला.

बेटे का सुराग नहीं मिलता देख जयभगवान ने उच्चाधिकारियों से भी मुलाकात की फिर भी कोई फायदा नहीं हुआ. लिहाजा उन्होंने अदालत का दरवाजा खटखटाते हुए दिल्ली हाईकोर्ट में बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका दायर की. जिस पर दिल्ली पुलिस को कारण बताओ नोटिस जारी कर दिया गया.

## कोर्ट के आदेश पर हुई जांच शुरू

नोटिस जारी होते ही दिल्ली पुलिस के उच्चाधिकारियों के कान खड़े हुए और इसी के आधार पर पीड़ित जयभगवान की शिकायत पर 16 अप्रैल, 2011 को रवि की गुमशुदगी के मामले को कापसहेड़ा पुलिस ने अज्ञात लोगों के खिलाफ आईपीसी की धारा 365 ( अपहरण ) की रिपोर्ट दर्ज कर ली.

जयभगवान से पूछा गया तो उन्होंने पुलिस के सामने शंका जाहिर की कि उन्हें शकुंतला के भाई राजू और उन के पड़ोसी कमल सिंगला पर शक है.

वह कोई ठोस कारण तो नहीं बता सके, लेकिन उन्होंने बताया कि शादी होने से पहले कमल ही शंकुतला के घर वालों के साथ हर बार उन के घर आया, जबकि वह उन का रिश्तेदार भी नहीं है.

हालांकि पुलिस के पास कोई पुख्ता आधार नहीं था, लेकिन इस के बावजूद उन दोनों को बुला कर पूछताछ की गई. मगर ऐसी कोई संदिग्ध बात पता नहीं चल सकी, जिस के आधार पर उन से सख्ती की जाती.

पुलिस ने शकुंतला, उस की बहन कमलेश, जीजा शेर सिंह और भाई राजू के साथ कमल सिंगला के अलावा भी अलवर जा कर कुछ और लोगों से पूछताछ की, लेकिन कोई सुराग पुलिस के हाथ नहीं लगा.

इस दौरान हाईकोर्ट में सितंबर, 2011 में पुलिस को अपनी जांच की स्टेटस रिपोर्ट देनी थी तो उस में कोई प्रगति न पा कर हाईकोर्ट ने दिल्ली पुलिस आयुक्त को इस मामले की जांच एक सक्षम एजेंसी को सौंपने के लिए कहा.

पुलिस को आशंका थी कि कहीं रवि की शादी उस के घर वालों ने बिना उस की मरजी के तो नहीं की थी, जिस से वह पत्नी को छोड़ कर खुद कहीं चला गया हो. इस बिंदु पर भी जांचपड़ताल हुई, लेकिन पुलिस को कोई सिरा नहीं मिला.

रवि के पिता ने कमल सिंगला नाम के जिस युवक पर आरोप लगाया था, वह उस समय 19 साल का भी नहीं हुआ था. इसलिए पुलिस उस के साथ सख्ती से पूछताछ भी नहीं कर सकती थी. वैसे भी पुलिस को कमल के खिलाफ ऐसा कोई आधार नहीं मिल रहा था कि वह रवि के अपहरण का आरोपी ठहराया जा सके.

जांच में यह भी पता चला था कि वारदात वाले दिन कमल अलवर में ही था. रही बात राजू के इस वारदात में शामिल होने की तो वह भला अपनी ही बहन के पति का अपहरण क्यों करेगा, जिस की शादी एक महीना पहले ही हुई है.

दोनों के खिलाफ न तो कोई सबूत मिल रहा था और न ही रवि के अपहरण या हत्या के पीछे पुलिस को कोई आधार दिख रहा था.

पुलिस को साफ लग रहा था कि रवि की लाइफ में ऐसा कुछ जरूर है, जिसे परिवार वाले छिपा रहे हैं और उस के लापता होने का ठीकरा उस की पत्नी व दूसरे लोगों पर फोड़ रहे हैं.

पुलिस को लगा कि या तो शादी से पहले रवि का किसी दूसरी लड़की से संबध था या उस का अपने पेशे से जुड़े ग्रामीण सेवा के किसी ड्राइवर से पुराना विवाद था और शायद इसी वजह से उस की हत्या कर दी गई हो.

कापसहेड़ा पुलिस ने उस इलाके के ग्रामीण सेवा चलाने वाले कई ड्राइवरों और रवि के टैंपो के मालिक से भी कई बार पूछताछ की. उस के चरित्र और दुश्मनी के बारे में भी जानकारी हासिल की गई, लेकिन कहीं से भी ऐसा कोई सुराग हाथ नहीं लगा कि जांच को आगे बढ़ाने का रास्ता मिलता.

इस दौरान हाईकोर्ट में सितंबर, 2011 में पुलिस को जांच की स्टेटस रिपोर्ट देनी थी तो उस में कोई प्रगति न पा कर हाईकोर्ट ने दिल्ली पुलिस आयुक्त को इस मामले की जांच एक सक्षम एजेंसी को सौंपने के लिए कहा.

अदालत का आदेश आने के बाद पुलिस आयुक्त ने अक्तूबर 2011 में रवि के अपहरण की जांच का जिम्मा एंटी किडनैपिंग यूनिट के सुपुर्द कर दिया. उन दिनों एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग यूनिट को एंटी किडनैपिंग यूनिट के नाम से जाना जाता था.

## बदलते रहे जांच अधिकारी

इस मामले की जांच का काम सब से पहले इस यूनिट के एसआई हरिवंश को सौंपा गया. फाइल हाथ में लेने के बाद उन्होंने इस का गहन अध्ययन किया और उस के बाद नए सिरे से सभी संदिग्धों को बुला कर उन से पूछताछ का काम शुरू किया.

जेसीबी से खुदाई कराने पर पुलिस ने 25 मानव हड्डियां बरामद कीं

रवि की मां और पिता जयभगवान

इस काम में 2 महीने का वक्त गुजर गया. इस से पहले कि वह जांच को आगे बढ़ाते अपराध शाखा से उन का तबादला हो गया.

इस के बाद जांच का काम एसआई रजनीकांत को सौंपा गया. रजनीकांत को लगा कि कमल सिंगला जैसे एक अमीर इंसान की एक निम्नमध्यमवर्गीय परिवार से ऐसी घनिष्ठता के पीछे कोई वजह तो जरूर होगी. उन्हें रवि के पिता जयभगवान के आरोपों में कुछ सच्चाई दिखी.

अभी तक की पूछताछ में हर अधिकारी के सामने इस मामले के 3 मुख्य संदिग्ध कमल सिंगला, शकुंतला, उस का भाई राजू एक ही कहानी सुना रहे थे. अगर वे झूठ बोल रहे थे तो सच्चाई बाहर लाने का अब एक ही रास्ता बचा था कि उन का लाई डिटेक्टर टेस्ट करा लिया जाए.

वैसे भी रजनीकांत को लगा कि इस मामले में शकुंतला और कमल की मिलीभगत की आशंका ज्यादा हो सकती है. इसलिए तीनों संदिग्धों से लंबी पूछताछ के बाद रजनीकांत ने अदालत से आदेश ले कर 2 मार्च, 2012 को शकुंतला, उस के भाई राजू और कमल का पौलीग्राफ टेस्ट कराया.

लेकिन पौलीग्राफ परीक्षण की रिपोर्ट आने के बाद जांच अधिकारी रजनीकांत की उम्मीदों पर पानी फिर गया, क्योंकि तीनों ही संदिग्ध परीक्षण में खरे उतरे थे.

लेकिन न जाने क्यों रजनीकांत इन नतीजों से संतुष्ट नहीं थे. पर उन्होंने उम्मीद नहीं छोड़ी और दूसरे पहलुओं को टटोलते हुए जांच को आगे बढ़ाते रहे.

रवि के परिवार की तरफ से शकुंतला और उस के परिवार पर आरोप लगाए जाने के बाद उन्होंने जयभगवान के घर आना भी बंद कर दिया.

संयोग से जांच अधिकारी रजनीकांत का भी तबादला हो गया तो उस के बाद एसआई सूरजभान आए. कुछ महीनों के बाद उन का भी तबादला हो गया तो एसआई धीरज के हाथ में जांच आई,

कुछ महीनों तक जांच उन के हाथ में रही फिर उन के तबादले के बाद एसआई पलविंदर को जांच का काम सौंपा गया. फिर 2017 के शुरू होते ही उन का भी तबादला हो गया. इस के बाद जांच की जिम्मेदारी मिली एसआई जोगेंद्र सिंह को.

इस दौरान मार्च, 2017 में इस केस की स्टेटस रिपोर्ट देख कर हाईकोर्ट ने पुलिस को निर्देश दिया कि तीनों संदिग्धों की ब्रेनमैपिंग (नारको टेस्ट) कराया जाए.

## टीम ने अलवर में डाला डेरा

एसआई जोगेंद्र ऐसे ही किसी मौके का इंतजार कर रहे थे. उन्होंने तीनों के इस टेस्ट की प्रक्रिया शुरू कर दी. अदालत में तीनों आरोपियों को पेश कर जोगेंद्र सिंह ने ब्रेनमैपिंग के लिए उन की हामी भी हासिल कर ली.

जिस के बाद तीनों का 2 नवंबर, 2017 से 6 नवंबर, 2017 के बीच गुजरात के गांधी नगर में ब्रेनमैपिंग टेस्ट कराया. वहां जा कर कमल और राजू ने तो टेस्ट करा लिया, मगर शकुंतला ने तबीयत बिगड़ने की बात कह कर ब्रेन मैपिंग कराने से इनकार कर दिया.

लेकिन ब्रेनमैंपिग के जो परिणाम पुलिस के सामने आए, उस ने जोगेंद्र सिंह को सोचने पर मजबूर कर दिया. हालांकि राजू ब्रेनमैपिंग टेस्ट में सत्य पाया गया. लेकिन ऐसे कई सवाल थे, जिन के कारण कमल सिंगला पर अब इस मामले में शामिल होने का शक शुरू हो गया था.

एसआई जोगेंद्र सिंह समझ गए कि इस जांच को आगे ले जाने के लिए उन्हें अलवर में डेरा डालना पड़ेगा.

वे आगे की कारवाई कर ही रहे थे कि मार्च 2018 में अचानक उन का भी तबादला हो गया. जोगेंद्र सिंह की जांच से कम से कम अनुसंधान का काम एक कदम आगे तो बढ़ गया था और जांच के लिए एक टारगेट भी तय हो गया था.

इसी बीच जांच के नए अधिकारी के रूप में एसआई करमवीर मलिक को रवि के अपहरण केस की फाइल सौंपी गई. उन्होंने जांच का काम हाथ में लेते ही पहले पूरी फाइल का अध्ययन किया.

केस की बारीकियों को गौर से समझने के बाद उन्होंने अपने 2 सब से खास एएसआई जयवीर और नरेश के साथ कांस्टेबल हरेंद्र की टीम बनाई. इस के बाद टीम को उन तीनों संदिग्धों को लाने के लिए अलवर रवाना किया, जिन का नाम बारबार इस केस में सामने आ रहा था.

जयवीर और नरेश जब अलवर के टपूकड़ा गए तो वहां संयोग से उन्हें राजू मिल गया. राजू ने पूछताछ में जो कुछ बताया, उस के बाद एक अलग ही कहानी सामने आई.

पता चला कि ब्रेन मैपिंग टेस्ट होने के बाद जब शकुंतला और कमल गुजरात से वापस लौटे तो कुछ रोज बाद ही अचानक शकुंतला घर से भाग गई.

पिछले कुछ समय से कमल जिस तरह शकुंतला के करीब आ रहा था और शकुंतला भी ज्यादा वक्त उस के ही साथ बिताने लगी थी, उसे देख कर घर वालों को लगा कि शकुंतला के भागने में कमल का हाथ है. इसीलिए उन्होंने कमल से शकुंतला के बारे में पूछा. लेकिन वह साफ मुकर गया कि उसे शकुंतला के बारे में कोई जानकारी नहीं है.

लिहाजा परिवार वालों ने कमल सिंगला के खिलाफ शकुंतला के अपहरण की रिपोर्ट

दर्ज करवा दी. लेकिन कमल पुलिस के हाथ आने से पहले ही फरार हो गया.

अलवर पुलिस कमल को तलाश कर ही रही थी कि इसी बीच कमल के एक ड्राइवर बबली ने राजस्थान हाईकोर्ट में एक शपथ पत्र दिया कि उस ने शकुंतला से शादी कर ली है और पुलिस बिना वजह उस के मालिक को परेशान कर रही है.

## जांच में आया नया मोड़

बबली ने साथ में आर्यसमाज मंदिर में हुई शकुंतला से अपनी शादी का प्रमाण पत्र भी दिया था. उसी के साथ में शकुंतला की तरफ से भी एक शपथ पत्र संलग्न था, जिस में उस ने बबली से शादी करने की पुष्टि की थी.

हाईकोर्ट ने अलवर पुलिस को कमल के खिलाफ दर्ज अपहरण के मामले को खत्म करने का आदेश दे दिया. जिस के बाद उस के खिलाफ एफआईआर रद्द हो गई.

शकुंतला के भाई राजू ने जो कुछ बताया था, उसे जानने के बाद एएसआई जयवीर की मामले में दिलचस्पी कुछ ज्यादा ही बढ़ गई.

कमल से मिलने की उन की बेताबी बढ़ गई. लेकिन इस से पहले बबली से मिलना जरूरी था. क्योंकि उस ने शकुंतला से शादी की थी, जिस कारण अब संदेह के दायरे में सब से पहले वही आ रहा था.

पुलिस टीम ने टपूकड़ा थाने जा कर जब कमल के खिलाफ दर्ज हुई एफआईआर के बारे में जानकारी हासिल की तो उस केस की फाइल में बबली नाम के उस के ड्राइवर के घर का पता मिल गया.

एएसआई जयवीर ने बबली के घर का पता हासिल किया और उस के गांव बाघोर पहुंच गए.

बबली के घर उस के मातापिता के अलावा पत्नी और 3 बच्चे भी मिले. बबली की पत्नी से मिलने के बाद तो एएसआई जयवीर का सिर ही चकरा गया. क्योंकि उस की पत्नी शकुंतला नहीं बल्कि कोई अन्य महिला थी और वह भी 3 बच्चों की मां.

कहानी में अब दिलचस्प मोड़ आ गया था. पुलिस टीम ने जब परिजनों से बबली के बारे में पूछा तो पता चला कि लूटपाट के एक मामले में बबली कोटा जेल में बंद है. अब तो बबली से मिलना क्राइम ब्रांच के लिए बेहद जरूरी हो गया था.

जयवीर और नरेश ने परिजनों से बबली के बारे में तमाम जानकारी ले कर कोटा की अदालत में उस से जेल में मुलाकात कर के पूछताछ करने की अनुमति मांगी.

पुलिस टीम को पूछताछ की इजाजत मिल गई और जयवीर सिंह अपनी टीम के साथ कोटा जेल में जब बबली से मिले तो रवि के अपहरण केस की तसवीर पूरी तरह साफ हो गई.

बबली ने बताया कि वह तो पहले से ही शादीशुदा है. उस के 3 बच्चे भी हैं. वह डेढ़ साल से कमल सिंगला के पास ड्राइवर की नौकरी कर रहा है.

कुछ महीने पहले अचानक जब शकुंतला के घर से भागने के बाद उस के घर वालों ने कमल के खिलाफ शकुंतला के अपहरण की रिपोर्ट दर्ज कराई तो कमल ने बबली को कुछ रुपए दे कर दबाव डाला कि वह हाईकोर्ट में एक शपथ पत्र दाखिल कर दे कि उस ने शकुंतला से शादी कर ली है.

बबली ने खुलासा किया कि वकील कराने से ले कर शकुंतला का शपथ पत्र और शकुंतला से उस की शादी का आर्यसमाज मंदिर का प्रमाण पत्र कमल ने ही उसे उपलब्ध कराया था.

चूंकि वह नौकरी और पैसे के लालच में मजबूर था, इसलिए उस ने कमल के कहने पर ये काम कर दिया था. इसी के कारण कमल के खिलाफ दर्ज शकुंतला के अपहरण का मामला खत्म हो गया था.

पुलिस जिस कमल को मासूम मान रही थी, उस का शातिर चेहरा सामने आ चुका था. पुलिस को यकीन हो गया कि रवि के अपहरण और उस की हत्या में भी कमल का ही हाथ होगा.

एएसआई जयवीर की टीम बारबार अलवर में कमल सिंगला और शकुंतला की तलाश करने के लिए जाती. लेकिन उन दोनों का कोई सुराग नहीं मिल रहा था.

क्राइम ब्रांच की इस टीम में एक कांस्टेबल हरेंद्र संयोग से राजस्थान का ही रहने वाला था. उस की मदद से पुलिस टीम को स्थानीय स्तर पर ऐसे लोगों की मदद मिलने लगी, जिस से कमल व शकुंतला के बारे में छनछन कर जानकारियां सामने आने लगी थीं. लेकिन इस पूरी कवायद में कई महीने गुजर गए.

दुलहन बनी शकुंतला (फाइल फोटो)

इसी बीच एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग यूनिट के एसीपी सुरेंद्र गुलिया ने रवि के अपहरण की जांच करने वाले इंसपेक्टर अमलेश्वर राय और एसआई करमवीर सिंह, एएसआई जयवीर सिंह, नरेश कुमार तथा कास्टेबल हरेंद्र से जांच में तेजी लाने के लिए कहा. तब तक पुलिस टीम को कमल सिंगला के मोबाइल का नंबर हासिल हो चुका था.

कमल के फोन नंबर की मौनिटरिंग शुरू हो गई और उस की काल डिटेल्स खंगालने का काम शुरू कर दिया गया. रवि के अपहरण में कमल की भूमिका होने की पुष्टि हो चुकी थी, इसलिए पुलिस ने उस के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट हासिल कर लिया.

लेकिन जब वह कहीं नहीं मिला तो उसे भगोड़ा घोषित कर के उस के ऊपर 50 हजार का ईनाम दिल्ली पुलिस ने घोषित कर दिया.

इस दौरान पुलिस ने उस के घर की कुर्की के वारंट भी जारी करवा लिए. पुलिस की एक टीम ने स्थाई रूप से अलवर में ही डेरा डाल दिया.

मोबाइल की लोकेशन और उस से बात करने वाले हर शख्स की जानकारी अलवर में बैठी पुलिस टीम को मिल रही थी. लेकिन इसे संयोग कहें या कमल की किस्मत कि पुलिस टीम के पहुंचने से पहले ही वह मौजूद जगह से निकल जाता था.

लेकिन पुलिस जब किसी को पकड़ने की

रवि की हत्या में शामिल शकुंतला का प्रेमी कमल सिंगला और उस का ड्राइवर गणेश महतो

ठान लेती है तो देर से ही सही, चालाक अपराधी भी पुलिस के चंगुल में फंस ही जाता है.

आखिरकार 27 सितंबर, 2019 को कमल सिंगला ( 27 ) को अलवर की शालीमार कालोनी से गिरफ्तार कर लिया गया. यहां भी उस का एक घर था, जहां छिप कर वह रह रहा था. हालांकि शकुंतला उस के साथ नहीं थी. लेकिन कमल का पकड़ा जाना भी पुलिस के लिए बड़ी उपलब्धि थी.

दिल्ली ला कर जब पुलिस टीम ने उस से पूछताछ शुरू की तो वह हमेशा की तरह पुलिस को अपने झूठ के जाल में उलझाने की कोशिश करता रहा.

लेकिन इस बार जांच दल के पास उस के खिलाफ ब्रेनमैपिंग टेस्ट की रिपोर्ट से ले कर बबली से अदालत में शकुंतला की शादी से जुड़ा गलत शपथपत्र दिलाने जैसे कई ठोस सबूत मौजूद थे. जिन का उस के पास कोई उत्तर नहीं था.

पुलिस टीम ने थोड़ी सख्ती की तो कमल सिंगला सब कुछ तोते की तरह बताने लगा. पूछताछ में पता चला कि रवि का अपहरण कर उस की हत्या कर दी गई थी और इस काम में उस की मदद उस के ड्राइवर गणेश महतो ने की थी. गणेश को उस ने 2012 में ही नौकरी से हटा दिया था, जिस के बाद वह बिहार चला गया.

कमल यह तो नहीं बता सका कि ड्राइवर गणेश किस गांव का है और उस का फोन नंबर क्या है, लेकिन दिल्ली में रहने वाले उस के जीजा अनिल का नंबर पुलिस को कमल से मिल गया.

पुलिस टीम ने उसी दिन अनिल से संपर्क किया और गणेश महतो के बारे में जानकारी हासिल कर ली. अनिल को साथ ले कर पुलिस टीम तत्काल बिहार के समस्तीपुर में करवां थानांतर्गत चकमहेशी गांव पहुंची, जहां से गणेश महतो पुत्र सुरेश महतो ( 31 ) को गिरफ्तार कर लिया गया. उस ने शुरुआती पूछताछ में ही अपना गुनाह कुबूल कर लिया.

पुलिस टीम गणेश को ट्रांजिट रिमांड पर दिल्ली ले आई. इस के बाद कमल व गणेश से आमनेसामने बैठा कर पूछताछ की गई, फिर उन से हुई पूछताछ का मिलान किया गया.

पुलिस टीम दोनों को ले कर टपूकड़ा गई, जहां स्थानीय पुलिस की मदद से कमल के औफिस के सामने एक खाली प्लौट की जेसीबी मशीनों से खुदाई करवाई, जिस में करीब 25 मानव अस्थियां बरामद हुईं, जिन्हें जांच के लिए फोरैंसिक लैब भेज दिया गया.

## इश्क में अंधा हुआ कमल

ये अस्थियां रवि कुमार की थीं या नहीं, यह पुष्टि करने के लिए पुलिस ने 10 अक्तूबर, 2019 को दीन दयाल उपाध्याय अस्पताल में डीएनए जांच के लिए जयभगवान और उन की पत्नी के ब्लड सैंपल लिए.

रवि कुमार के अपहरण व हत्या के मामले की जांच जितनी पेचीदा थी, उस के अपहरण व हत्या की कहानी उस से कहीं ज्यादा चौंकाने वाली है. जिस से पता चलता है कि प्रेम में अंधा एक आशिक किस तरह शातिर अपराधी की तरह न सिर्फ अपने गुनाह को अंजाम देता रहा बल्कि 8 साल तक चली जांच में पुलिस की आंखों में भी धूल झोंकता रहा.

2010 में टपूकड़ा में रहने वाली शकुंतला अचानक कमल सिंगला के संपर्क में आई थी. कमल का ट्रांसपोर्ट और बिल्डिंग मटीरियल सप्लाई का कारोबार था. उस के कुछ ट्रक, टैक्सियां और मैटाडोर भी किराए पर चलते थे. इस के अलावा कमल प्लौट ले कर उन में फ्लैट बना कर बेचने का भी काम करता रहता था.

साल 2010 में कमल ने शकुंतला के पड़ोस में एक एक खाली प्लौट ले कर उस में फ्लैट निर्माण का काम कराया तो इसी दौरान बगल के मकान में रहने वाली शकुंतला पर उस की नजर पड़ी.

कमल उन दिनों ठीक से बालिग भी नहीं हुआ था, जबकि तीखे नाकनक्श और गदराए बदन वाली शकुंतला जवानी की दहलीज पर पहले ही कदम रख चुकी थी.

यहीं पर दोनों की एकदूसरे से आंखें लड़ीं और कमल ने किसी तरह शकुंतला के घर में आनाजाना शुरू कर दिया. दोनों का इश्क परवान चढ़ने लगा और नाजायज रिश्ते बन गए. जबकि परिवार बेटी की इस करतूत से अंजान था.

इसी बीच 8 फरवरी, 2011 को परिवार ने शकुंतला की शादी समालखा के रवि से करा दी. कमल को जब शकुंतला के रिश्ते की भनक लगी तो उस ने शकुंतला से इस का विरोध किया.

उस पर दबाव बनाया कि वह अपने परिवार वालों से इस रिश्ते के लिए मना कर दे. लेकिन लोकलाज और मातापिता के डर से शकुंतला ऐसा न कर सकी. इसी असमंजस में उस के हाथ में किसी और के नाम की मेहंदी लग गई. लेकिन कमल सिंगला ने तय कर लिया था कि वह शकुंतला को किसी और की होने नहीं देगा. उस के मन में एक साजिश पलने लगी.

इसी साजिश के तहत रवि को देखने जाने के लिए जब शकुंतला के परिवार वाले पहली बार गए तो कमल खुद अपनी गाड़ी में परिवार के लोगों को ले कर गया था.

शकुंतला की शादी होने तक जितनी बार

भी उस का परिवार के रवि के घर गया, हर बार कमल ही उन्हें अपनी गाड़ी से ले कर दिल्ली गया.

## सुहागरात पर नहीं छूने दिया शरीर

जैसेतैसे शादी हो गई. लेकिन ससुराल जाने से पहले ही कमल ने शकुंतला से वादा ले लिया कि वह ससुराल जा तो रही है लेकिन वह किसी भी कीमत पर अपना तन अपने पति को न सौंपे.

शकुंतला तो खुद ये शादी मजबूरी में कर रही थी. इसलिए उस ने भी कमल से वादा कर लिया कि ऐसा ही होगा. लेकिन तुम को मुझे अपनी बनाना है तो जल्द ही कुछ करना होगा.

शादी के बाद उस ने इसी साजिश के तहत बहाने बना कर रवि को अपना शरीर छूने तक नहीं दिया.

इस दौरान कमल के दिमाग में रवि को रास्ते से हटाने की साजिश तैयार हो चुकी थी. साजिश के मुताबिक 20 मार्च, 2011 को रवि अपनी ससुराल टपूकड़ा, अलवर पहुंचा तो कमल भी दोस्त की तरह उस से मिला और दोस्त की तरह घुमायाफिराया.

अगले दिन सुबह ही रवि शकुंतला को ले कर दिल्ली में अपने घर समालखा चला गया. इस दौरान कमल ने शकुंतला को अपनी साजिश समझा दी.

जिस के तहत 22 मार्च की दोपहर में शकुंतला अपनी सास से जिद कर के रवि को अपनी बहन के घर जाने के लिए साथ ले गई. कमलेश का घर करीब 3 किलोमीटर दूर था.

घर से निकल कर जैसे ही रवि शकुंतला को ले कर मेनरोड पर किसी सवारी को बुलाने के लिए आगे बढ़ा तो वहां उस से पहले ही सामने अपनी सफेद सैंट्रो कार का बोनट खोल कर कमल अपने ड्राइवर गणेश के साथ खड़ा मिला.

उस ने रवि और शकुंतला को देख कर चौंकने का अभिनय करते हुए कहा कि वह किसी काम से समालखा आया था, लेकिन गाड़ी बंद हो गई जो उसी वक्त ही ठीक हुई थी.

कमल ने साजिश के तहत जिद कर के रवि और शकुंतला को गाड़ी में बैठा लिया और बोला कि वह उन्हें कमलेश के घर छोड़ता हुआ निकल जाएगा.

संकोचवश रवि कुछ नहीं बोला. दरअसल, कमल सोचीसमझी साजिश के तहत वहां बोनट खोल कर उन्हीं दोनों के आने का इंतजार कर रहा था.

इस के बाद कमल ने गाड़ी में रवि को अपनी बातों के जाल में फंसा कर शकुंतला को कमलेश के घर के पास छोड़ने के लिए मना लिया. कमल ने रवि से कहा कि वह उस के साथ समालखा में एक परिचित के घर चले, जहां से कुछ पैसे लेने हैं. रवि इनकार नहीं कर सका.

कमलेश के घर से कुछ दूर शकुंतला को छोड़ कर वे गाड़ी को आगे बढ़ा ले गए. गणेश गाड़ी चला रहा था. कमल व रवि पीछे बैठे थे.

एसीपी
सुरेंद्र गुलिया

कुछ दूर जाने के बाद प्यास का बहाना कर के कमल ने डिक्की से कोल्डड्रिंक की 2 बोतलें निकलवा कर एक खुद पी, दूसरी रवि को पिलाई. लेकिन कोल्डड्रिंक पीते ही रवि का सिर चकराने लगा था और उस पर बेहोशी छा गई.

थोड़ी ही देर में रवि पूरी तरह बेहोश हो गया. कमल ने गाड़ी में बेहोश पड़े रवि की गला दबा कर हत्या कर दी. उस ने रवि के मोबाइल फोन को बंद कर दिया और रास्ते में फोन की बैटरी, सिमकार्ड व दूसरे हिस्से तोड़ कर फेंक दिए.

ड्राइवर गणेश कमल के आदेश पर गाड़ी अलवर ले आया. वहां पहुंच कर कमल ने बिल्डिंग मटीरियल के अपने गोदाम में पड़ी रोड़ी हटाई और रवि के शव को 5 फुट गहरा गड्ढा खोद कर उस में दबा दिया और उस पर फिर से रोड़ी डाल दी. कमल वारदात वाले दिन अपना मोबाइल दिल्ली नहीं ले गया था.

इधर, रवि के घर नहीं पहुंचने पर शकुंतला ने उस के परिवार वालों को वही कहानी सुना दी, जो कमल ने उसे पढ़ाई थी. पुलिस को पूछताछ में न तो शकुंतला ने और न ही उस के किसी ससुराल वालों ने ये बात बताई थी कि शकुंतला के पास मोबाइल फोन भी है.

शकुंतला ने पुलिस को बताया कि शादी से पहले उस के पास एक फोन था, लेकिन वह उसे जब दोबारा आई तो अपने भाई को दे आई थी.

इसलिए शुरू से ही पुलिस ने इस केस में शकुंतला के मोबाइल फोन की भी काल डिटेल्स निकालने की जरूरत महसूस नहीं की.

मृतक रवि के मोबाइल की जो काल डिटेल्स पुलिस ने निकलवाई, उस में भी कोई संदिग्ध नंबर नहीं मिला था. इसलिए भी पुलिस ने मोबाइल डिटेल्स की थ्यौरी पर ज्यादा काम नहीं किया.

इंसपेक्टर
अमलेश्वर राय

लेकिन जब कमल से पूछताछ हुई तो खुलासा हुआ कि साजिश के तौर पर शकुंतला अपना मोबाइल फोन छिपा कर साथ लाई थी, लेकिन उसे साइलेंट कर के उस ने पर्स में छिपा कर रखा था ताकि जरूरत पड़ने पर कमल से बात हो सके.

22 मार्च, 2011 की दोपहर को शकुंतला कमल के ड्राइवर के मोबाइल से आए एक मैसेज के बाद ही वह घर से पति रवि को ले कर निकली थी, जिस में उस ने बताया था कि वह सड़क पर उन का इंतजार कर रहा है.

शकुंतला जब तक अपनी ससुराल में रही, उस ने किसी को भी यह पता नहीं चलने दिया कि वह मोबाइल फोन का इस्तेमाल कर रही है. इस दौरान वह न सिर्फ छिपछिप कर कमल

से बातें करती रही, बल्कि उसे वहां होने वाली हर गतिविधि की जानकारी दे कर उस से लाश ठिकाने लगा देने की जानकारी भी लेती रही.

क्राइम ब्रांच ने जब जयभगवान के शक के आधार पर कमल सिंगला को नोटिस दे कर पूछताछ के लिए बुलाया तो उसे पकड़े जाने का डर सताने लगा. लिहाजा उस ने पूछताछ के लिए जाने से पहले एक दिन औनेपौने दाम में खाली प्लौट में पड़ी रोड़ी को बेच कर ड्राइवर गणेश के साथ उस के नीचे पड़ी जमीन की खुदाई की.

वहां कई फुट की खुदाई के बाद उसे रवि का शव मिल गया. 5 महीने में शव हड्डियों का ढांचा बन चुका था. कमल ने हड्डियों के ढांचे को गड्ढे से निकाल कर प्लास्टिक की बोरी में भरा. अस्थिपंजर बटोरना बेहद मुश्किल था. लेकिन उस ने सावधानी से अस्थियों को बटोर कर हड्डियों से भरी बोरी को अपने एक ट्रक में रखवाया और उस की छत पर खुद बैठ गया.

एसआई करमवीर मलिक

एएसआई जयवीर

एएसआई नरेश

अलवर से रेवाड़ी के रास्ते में 70 किलोमीटर के रास्ते पर एकएक हड्डी को बोरी से निकाल कर जंगल की तरफ फेंकता चला गया. रवि की हड्डियों को ठिकाने लगाने के बाद कमल ने अपने ड्राइवर गणेश को 70 हजार रुपए दिए और उस से कहा कि अब वह अपने गांव चला जाए और कभी वापस न आए. क्योंकि हो सकता है पुलिस उसे पकड़ ले. डर कर गणेश अपने गांव चला गया.

इस दौरान शकुंतला भी अलवर में आ चुकी थी. कुछ दिन तक तो कमल उस से छिपछिप कर ही मिलता रहा. लेकिन बाद में उस ने उस के परिवार से हमदर्दी का दिखावा कर के कहा कि उस का एक ड्राइवर है, जो कुंआरा है. वह शकुंतला की शादी उस के साथ करवा देगा.

कमल ने बेहद शातिराना ढंग से अपने ड्राइवर बबली के साथ शकुंतला की शादी का ढोंग रचा और उस के बाद टपूकड़ा में ही एक दूसरे इलाके में मकान ले कर दे दिया. लेकिन वहां बबली की जगह वह खुद शकुंतला के साथ पति की तरह रहता था.

पूछताछ में यह भी खुलासा हुआ कि कमल और शकुंतला का एक बच्चा भी हो चुका है. हालांकि समाज के सामने कमल शकुंतला को बबली की ही बीवी बताता था.

जब कमल का ब्रेन मैपिंग टेस्ट हुआ और उस से शकुंतला के साथ उस के संबंधों को ले कर सवालजवाब हुए तो पुलिस को पहली बार उन के नाजायज संबंधों पर शक हुआ था. इसी टेस्ट की रिपोर्ट के बाद से वह पुलिस की नजर में चढ़ गया था.

ब्रेन मैपिंग टेस्ट के बाद से ही शकुंतला और कमल पकड़े जाने के डर से फरार हो गए, जिस से पुलिस का शक यकीन में बदल गया. वे किसी भी स्थान पर कुछ दिन से ज्यादा नहीं रुकते थे. महीनों से कमल व शकुंतला लगातार अपने फोन नंबर बदल रहे थे.

क्राइम ब्रांच ने कड़ी मशक्कत के बाद कमल के खाली प्लौट की खुदाई करवा कर उस की रीढ़, कूल्हे और कमर के हिस्से की हड्डियां और पसलियों के 25 टुकड़े बरामद कर लिए. जिन का टेस्ट कराया गया तो वे उस के पिता के डीएनए से मैच कर गईं.

क्राइम ब्रांच ने इस मामले में अपहरण की धारा 364 के साथ हत्या की धारा 302, सबूत नष्ट करने की धारा 201 व साजिश रचने की धारा 120बी जोड़ कर कमल व गणेश को जेल भेज दिया.

इधर शंकुतला ने अपनी गिरफ्तारी पर कोर्ट से स्टे ले लिया. लेकिन जब अदालत में रवि के अपहरण व हत्या के मामले में शकुंतला के शामिल होने के साक्ष्य पेश किए तो अदालत ने उस का स्टे खारिज कर गिरफ्तारी वारंट जारी कर दिए.

शकुंतला को जब इस की भनक लगी तो एक बार फिर उस ने दिल्ली पुलिस के साथ लुकाछिपी का खेल शुरू कर दिया. पुलिस छापे मारती रही, लेकिन वह पुलिस के हाथ नहीं लगी तो दिल्ली पुलिस आयुक्त ने उस की गिरफ्तारी पर भी 50 हजार का ईनाम घोषित कर दिया.

ईनाम घोषित होने के बाद क्राइम ब्रांच की कई टीमें महीनों से शकुंतला की गिरफ्तारी के प्रयास में लगी थीं. 17 जुलाई को क्राइम ब्रांच के स्पैशल औपरेशन स्क्वायड-2 में तैनात एएसआई प्रदीप गोदारा को अपने एक मुखबिर से शकुंतला के अलवर में ही एक स्थान पर छिपे होने की जानकारी मिली. प्रदीप गोदारा ने अपने इंसपेक्टर राजीव रंजन को सारी बात बताई.

राजीव रंजन ने जब इस बारे में अपने एसीपी डा. विकास शौकंद को बताया तो उन्होंने राजीव रंजन और प्रदीप गोदारा के साथ एएसआई कुलभूषण, नरेश, कांस्टेबल राजेंद्र आर्य, दिनेश, हिमांशु, विनोद महिला कांस्टेबल ममता को अलवर रवाना कर दिया.

संयोग से बताए गए स्थान पर शकुंतला मिल गई और पुलिस उसे गिरफ्तार कर दिल्ली ले आई. अदालत में पेश कर उसे 2 दिन के लिए पुलिस रिमांड में जब पूछताछ की गई तो उस ने भी रवि के अपहरण व हत्याकांड की वही कहानी सुनाई, जो कमल पहले ही बता चुका था.

शकुंतला की गिरफ्तारी के बाद 10 साल पहले हुए रवि कुमार हत्याकांड का पटाक्षेप हो गया. ●

(कथा पुलिस की जांच, रवि के परिजनों से बातचीत और आरोपियों से पूछताछ पर आधारित)

वड़ोदरा, गुजरात

# पुलिस इंसपेक्टर की जहरीली मोहब्बत

❑ निखिल

स्वीटी (फाइल फोटो)

स्वीटी से लवमैरिज करने के बाद इंसपेक्टर अजय देसाई ने पूजा नाम की युवती से विवाह कर लिया था. एक म्यान में भला 2 तलवारें कैसे रह सकती हैं. दूसरी शादी की बात पता चलने पर स्वीटी ने घर में विवाद शुरू कर दिया. इस विवाद से निजात पाने के लिए इंसपेक्टर अजय ऐसा काम कर बैठा कि...

छायांकन: मौडलिंग

इसी निर्माणाधीन होटल के पीछे स्वीटी का शव जलाया गया था

इसी 5 जून की बात है. गुजरात के पुलिस इंसपेक्टर अजय देसाई ने अपने साले जयदीप भाई पटेल को मोबाइल पर फोन कर पूछा, “भैयाजी, स्वीटी आप के पास आई है क्या?”

जयदीप ने चौंकते हुए कहा, “नहीं जीजाजी, स्वीटी तो यहां नहीं आई, लेकिन बात क्या है?”

“दरअसल, स्वीटी रात एक बजे से आज सुबह साढ़े 8 बजे के बीच घर से कहीं चली गई. वह अपना मोबाइल भी घर पर ही छोड़ गई है.” अजय ने जयदीप को बताया.

“जीजाजी, आप ने स्वीटी से कुछ कहा तो नहीं या घर में कोई झगड़ा वगैरह तो नहीं हुआ था?” जयदीप ने चिंतित स्वर में अजय से पूछा.

“अरे नहीं यार, न तो घर में कोई झगड़ा हुआ और न ही मैं ने उस से कुछ कहा.” अजय ने अपने साले के सवालों का जवाब देते हुए कहा, “वह बिना किसी को बताए पता नहीं कहां चली गई?”

“जीजाजी, मेरा भांजा अंश कहां है?” जयदीप ने अजय से पूछा. अंश स्वीटी का 2 साल का बेटा था.

“यार, वह उसे भी घर पर ही छोड़ गई है. मुझे चिंता हो रही है कि वह अकेली कहां चली गई.” अजय ने कहा, “अंश अपनी मां के बिना रह भी नहीं रहा. वह लगाार रो रहा है.”

जयदीप कुछ समझ नहीं पाया कि उस की बहन स्वीटी अचानक कैसे अपने घर से बिना किसी को बताए कहीं चली गई. उस ने अजय से कहा, “जीजाजी, आप तो पुलिस में इंसपेक्टर हैं. स्वीटी का पता लगाइए. मैं भी पता करता हूं.”

“ठीक है, कुछ पता चले, तो बताना.” अजय ने यह कह कर फोन काट दिया.

बहन स्वीटी के अचानक इस तरह गायब होने की बात सुन कर जयदीप परेशान हो गया. उस ने अपने कुछ रिश्तेदारों को फोन कर स्वीटी के बारे में पूछा, लेकिन उस का कहीं से कुछ पता नहीं चला.

अजय देसाई गुजरात के वडोदरा शहर में

स्वीटी और अजय देसाई

करजण इलाके की प्रयोशा सोसायटी में रहता था. वह गुजरात पुलिस में इंसपेक्टर था. अजय ने स्वीटी पटेल से 2016 में लव मैरिज की थी. उन की मुलाकात अहमदाबाद के एक स्कूल में 2015 में हुई थी.

उस स्कूल में तब माइंड पौवर नामक एक कार्यक्रम हुआ था. इसी कार्यक्रम में अजय और स्वीटी की मुलाकात हुई. दोनों एकदूसरे से प्रभावित हुए. स्वीटी अजय की प्रतिभा पर रीझ गई थी और अजय उस की खूबसूरती पर फिदा हो गया था.

दोनों की मुलाकातें बढ़ने लगीं. करीब एक साल तक प्रेम प्रसंग के बाद दोनों ने साथ रहने का फैसला किया और 2016 में एक मंदिर में शादी कर ली.

स्वीटी की इस से पहले एक शादी हो चुकी थी. उस का पहला पति हेतस पांड्या आस्ट्रेलिया में रहता है. बताया जाता है कि हेतस पांड्या भारतीय क्रिकेट खिलाड़ी हार्दिक पांड्या का रिश्ते का भाई है. हेतस पांड्या से शादी के बाद स्वीटी के एक बेटा रिदम हुआ. अब 17 साल का हो चुका रिदम भी अपने पिता के साथ आस्ट्रेलिया में रहता है.

पुलिस इंसपेक्टर अजय देसाई से दूसरी शादी के बाद स्वीटी के एक बेटा हुआ. उस का नाम अंश रखा गया. जयदीप को यही पता था कि स्वीटी दूसरी शादी के बाद अपने पति अजय और 2 साल के बेटे अंश के साथ खुश है.

अब अचानक स्वीटी के गायब होने की सूचना से वह बेचैन हो गया. वह तुरंत तो वडोदरा नहीं पहुंच पा रहा था. इसलिए फोन पर ही अजय से संपर्क में रह कर अपनी बहन के बारे में पूछता रहा, लेकिन हर बार उसे निराशाजनक जवाब मिला.

जयदीप समझ नहीं पा रहा था कि आखिर ऐसी क्या बात हुई, जो उस की बहन अचानक किसी को बताए बिना घर से चली गई?

## भाई पहुंच गया थाने

स्वीटी पढ़ीलिखी 37 साल की मौडर्न महिला थी. जयदीप की नजर में ऐसी कोई भी बात नहीं आई थी कि वह अपने पति पुलिस इंसपेक्टर पति से किसी तरह से परेशान या नाखुश है. वह अपने छोटे से परिवार में खूब मौज में थी.

फिर अचानक 2 साल के बेटे को घर पर अकेला छोड़ कर क्यों और कहां चली गई? अपना मोबाइल भी साथ नहीं ले जाने से उस से संपर्क भी नहीं हो रहा था.

जयदीप स्वीटी के इस तरह गायब होने का रहस्य समझ नहीं पा रहा था. उस ने मोबाइल पर ही अपने रिश्तेदारों और जानकारों से अजय और स्वीटी के रिश्तों के बारे में पूछताछ की, लेकिन ऐसी कोई बात पता नहीं चली, जिस से स्वीटी के गायब होने का कारण समझ आता.

अजय से जब भी जयदीप ने बात की, तो वह यही कहता रहा कि हम खोजबीन कर रहे हैं, लेकिन अभी स्वीटी का कुछ पता नहीं चला है. जयदीप ने अपने जीजा को पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराने की बात कही तो अजय ने परिवार की बदनामी की बात कहते हुए कुछ दिन रुकने को कहा.

निर्माणाधीन होटल में जांच करती पुलिस

5-6 दिन तक स्वीटी का कुछ पता नहीं चलने पर आखिर जयदीप वडोदरा आ कर अपने जीजा अजय देसाई से मिला और स्वीटी के गायब होने के बारे में सारी बातें पूछीं. अजय ने उसे बताया कि 4 जून की रात एक बजे वह स्वीटी के साथ अपने घर में सोया था.

अगले दिन 5 जून को सुबह करीब साढ़े 8 बजे उठा तो स्वीटी नहीं मिली. उस का मोबाइल भी कमरे में ही था और अंश भी बैड पर सो रहा था. पूरे घर में तलाश करने पर भी स्वीटी नहीं मिली तो आसपास उस की तलाश की, लेकिन कुछ पता नहीं चला.

जयदीप ने अपने जीजा से बातोंबातों में कुरेदकुरेद कर यह पता लगाने की कोशिश की कि उन के बीच कोई झगड़ा तो नहीं हुआ था या कोई और बात नहीं थी, लेकिन ऐसी कोई बात पता नहीं चली. अंश के बारे में अजय ने बताया कि उसे रिश्तेदार के पास भेज दिया है.

आखिर थकहार कर जयदीप ने 11 जून को वडोदरा के करजण पुलिस थाने में स्वीटी के लापता होने की सूचना दर्ज करा दी. अजय पहले करजण पुलिस थाने में ही तैनात था. बाद में उस का ट्रांसफर वडोदरा जिले के स्पेशल औपरेशन ग्रुप (एसओजी) शाखा में हो गया था.

स्वीटी के लापता होने की सूचना दर्ज होने पर पुलिस उस की तलाश में जुट गई. एक पुलिस इंसपेक्टर की पत्नी के गायब होने का मामला होने के कारण पुलिस ने कई दिनों तक आसपास के जंगलों, नदीनालों और झीलों में स्वीटी की तलाश की, लेकिन उस का कोई सुराग नहीं मिला.

## ड्रोन से जंगलों में की खोजबीन

पुलिस ने विभिन्न अस्पतालों में जा कर 17 लावारिस लाशों का मुआयना किया. आसपास के पुलिस थानों के अलावा राजस्थान, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र से भी लावारिस शव मिलने की सूचनाएं जुटाईं, लेकिन कुछ पता नहीं चला.

एकएक दिन गुजरता जा रहा था. पुलिस अजय के बयानों पर भरोसा करते हुए हरसंभव स्थानों पर स्वीटी की तलाश करती रही. डौग स्क्वायड और ड्रोन के जरिए भी आसपास के

जंगलों में तलाश की गई. रेलवे लाइनों के नजदीक भी काफी खोजबीन की गई.

कोई सुराग नहीं मिलने पर करीब एक महीने बाद पुलिस ने अखबारों में स्वीटी के लापता होने के इश्तिहार छपवाए, लेकिन इस का भी कोई फायदा नहीं हुआ. पुलिस को कहीं से कोई सूचना नहीं मिली.

स्वीटी को लापता हुए एक महीने से ज्यादा का समय बीत चुका था. एसओजी के पुलिस इंसपेक्टर की गायब पत्नी का पता नहीं लग पाने पर पूरे गुजरात में तरहतरह की चर्चाएं होने लगीं. लोग पुलिस की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाने लगे थे.

पुलिस अधिकारियों के लिए भी स्वीटी के गायब होने का रहस्य लगातार उलझता जा रहा था. अधिकारी रोजाना मीटिंग कर स्वीटी का पता लगाने के लिए अलगअलग एंगल से जांच शुरू करते, लेकिन उस का कोई नतीजा नहीं निकल रहा था.

इस बीच, पुलिस के अधिकारी बीसियों बार इंसपेक्टर अजय देसाई से भी पूछताछ कर चुके थे. उस के फ्लैट पर जा कर भी कई बार जांचपड़ताल की जा चुकी थी. सैकड़ों सीसीटीवी कैमरों की जांच और स्वीटी के मोबाइल से भी पुलिस को कोई सुराग हाथ नहीं लगा था.

आसपास के लोगों से भी कई बार पूछताछ हो चुकी थी. पुलिस के अधिकारी समझ नहीं पा रहे थे कि स्वीटी को आसमान खा गया या जमीन निगल गई, जो उस का कुछ पता नहीं चल पा रहा.

## लव अफेयर्स एंगल पर भी की जांच

अधिकारियों ने इस एंगल पर भी विचार किया कि स्वीटी का किसी दूसरे व्यक्ति से कोई प्रेम प्रसंग तो नहीं था. इस के लिए अजय सहित उस के मकान के आसपास के लोगों और रिश्तेदारों से पूछताछ की गई, लेकिन इस बात में कोई दम नजर नहीं आया.

पुलिस अपने तरीके से स्वीटी की तलाश में जुटी हुई थी. इस दौरान जुलाई के दूसरे सप्ताह में वडोदरा से कुछ दूर भरूच जिले के अटाली गांव के पास एक अधूरी पड़ी निर्माणाधीन बिल्डिंग के पिछवाड़े पुलिस को कुछ जली हुई हड्डियां मिलीं.

अजय देसाई के घर के बाहर क्राइम सीन का रीक्रिएशन कराती पुलिस

पुलिस ने फोरैंसिक विशेषज्ञों से उन हड्डियों की जांच कराई तो पता चला कि वह हड्डियां किसी इंसान की थीं.

जली हुई इंसानी हड्डियां मिलने पर स्वीटी के लापता होने में पुलिस अधिकारियों का शक इंसपेक्टर अजय पर गहरा गया. उस से सख्ती से पूछताछ की गई, लेकिन वह अपनी पत्नी के लापता होने की बात ही कहता रहा.

आखिर पुलिस अधिकारियों ने अजय के सच और झूठ बोलने का पता लगाने के लिए विभिन्न परीक्षण कराने का फैसला किया. इस के अलावा जली हुई हड्डियों का पता लगाने के लिए डीएनए टेस्ट कराने का भी निर्णय लिया गया.

पुलिस ने सब से पहले गांधीनगर की विधि विज्ञान प्रयोगशाला में अजय की सीडीएस जांच कराई. इजरायल की विशेष रूप से स्थापित तकनीक सीडीएस जांच के जरिए विभिन्न सवालों के जरिए संदिग्ध व्यक्ति के पसीने और शरीर के तापमान के आधार पर सच्चाई का पता लगाया जाता है.

इस के बाद पुलिस ने उस के पौलीग्राफ टेस्ट और नारको टेस्ट के लिए अदालत से अनुमति मांगी.

स्वीटी के 2 साल के बेटे अंश का डीएनए टेस्ट कराया गया, ताकि यह पता लगाया जा सके कि बरामद हुई हड्डियां स्वीटी की हैं या नहीं.

## इंसपेक्टर अजय का कराया पौलीग्राफ टेस्ट

बाद में अदालत से अनुमति मिलने पर पुलिस ने अजय का पौलीग्राफ टेस्ट भी कराया. पौलीग्राफ टेस्ट की प्रक्रिया 2 दिन तक चलती रही.

इस बीच, पुलिस को यह बात पता चली कि स्वीटी अपने बेटे से मिलने के लिए आस्ट्रेलिया जा सकती है. इस संभावना को देखते हुए पुलिस ने स्वीटी के पहले पति हेतस पांड्या और बेटे से औनलाइन पूछताछ की.

पुलिस ने हेतस पांड्या से स्वीटी के संपर्क में आने और इस के बाद दोनों के अलग होने के बारे में जानकारी ली.

इस पूछताछ में यह बात सामने आई कि स्वीटी ने अपने बेटे रिदम से कुछ महीने पहले आस्ट्रेलिया आ कर मिलने की बात कही थी, लेकिन स्वीटी आस्ट्रेलिया गई नहीं थी. हेतस पांड्या ने पूछताछ में यह भी बताया कि संभवत: स्वीटी के पासपोर्ट का नवीनीकरण नहीं हुआ है.

स्वीटी के लापता होने के बाद से उस के पहले बेटे रिदम ने आस्ट्रेलिया से ही सोशल मीडिया के जरिए अपनी मां की तलाश का

अभियान छेड़ दिया था. तमाम तरह की तकनीकी और एफएसएल जांच कराने के बावजूद कोई ठोस परिणाम सामने नहीं आया था. कैलेंडर की तारीखें रोजाना बदलती जा रही थीं.

स्वीटी को लापता हुए करीब डेढ़ महीने का समय बीत गया था, लेकिन उस का कुछ पता नहीं चला था. यह भी पता नहीं चल सका था कि वह जीवित है या मर चुकी.

## क्राइम ब्रांच ने संभाली जांच

पुलिस की लगातार हो रही आलोचनाओं को देखते हुए गुजरात सरकार ने जुलाई के तीसरे सप्ताह में इस मामले की जांच अहमदाबाद क्राइम ब्रांच को सौंप दी. क्राइम ब्रांच के अफसरों ने नए सिरे से मामले की जांचपड़ताल शुरू की.

पुलिस अफसरों ने मीटिंग कर इस मामले में अब तक की जांच पर गहराई से विचारविमर्श किया. इस में यही बात सामने आई कि यह घरेलू मामला है. इस का राज उस के पति पुलिस इंसपेक्टर अजय से पूछताछ में ही निकल सकता है.

इस के लिए अजय की नारको टेस्ट कराने की अदालत से अनुमति मिल गई, लेकिन अजय ने अपनी मानसिक और शारीरिक स्थिति ठीक नहीं बताते हुए नारको टेस्ट देने में सक्षम नहीं बताया.

दरअसल, अजय पुलिस इंसपेक्टर था. उसे कानून की खामियां और पुलिस की सीमा रेखा भी पता थी. पुलिस नारको टेस्ट के लिए उस से जबरदस्ती नहीं कर सकती थी और न ही उस से सख्ती से पूछताछ कर सकती थी.

अजय की ओर से नारको टेस्ट कराने से इनकार करने पर क्राइम ब्रांच के अफसरों का शक उस पर गहरा गया. उन्होंने उस के शहर छोड़ कर जाने पर रोक लगा दी गई.

इस के साथ ही क्राइम ब्रांच के अफसरों ने अजय के मकान से जांच शुरू करने और अटाली गांव में एक बिल्डिंग के पीछे जहां इंसानी हड्डियां मिली थीं, वहां का मौकामुआयना करने का निर्णय किया.

क्राइम ब्रांच के अधिकारियों ने 23 जुलाई को अजय के प्रयोशा सोसायटी स्थित फ्लैट की जांचपड़ताल की.

इस में एक पुराने पुलिस वाले ने अपने अनुभव के आधार पर बाथरूम को कैमिकल से सफाई करवा कर देखा तो वहां खून के कुछ धब्बे मिले. इस के बाद पुलिस ने अपनी जांचपड़ताल तेज कर दी और कुछ जरूरी सबूत जुटाने के लिए अजय से फिर पूछताछ की.

आखिर पुलिस ने 49वें दिन स्वीटी के गायब होने की गुत्थी सुलझा कर 24 जुलाई, 2021 को इस मामले का परदाफाश कर दिया. स्वीटी पटेल की हत्या हो चुकी थी.

पुलिस ने स्वीटी की हत्या के मामले में उस के पति पुलिस इंसपेक्टर अजय देसाई और उस के दोस्त कांग्रेस नेता किरीट सिंह जडेजा को गिरफ्तार कर लिया. किरीट सिंह ने कांग्रेस टिकट पर पिछला विधानसभा चुनाव लड़ा था.

बेटे को गोद लिए स्वीटी पति अजय देसाई के साथ (फाइल फोटो)

अजय देसाई और किरीट सिंह जड़ेजा से पूछताछ और पुलिस की जांचपड़ताल में स्वीटी की हत्या की जो कहानी उभर कर सामने आई, वह इस प्रकार है—

अजय देसाई से प्रेम विवाह करने के बाद स्वीटी खुश थी. किसी बात की कोई परेशानी नहीं थी. अजय से उस के एक बेटा भी हो गया था. वह पति और बेटे के साथ मौज की जिंदगी गुजार रही थी.

स्वीटी ने भले ही अपने पहले पति हेतस पांड्या से तलाक ले लिया था, लेकिन वह अपने पहले बेटे रिदम से बहुत प्यार करती थी. आस्ट्रेलिया में अपने पापा के साथ रहने वाले रिदम से स्वीटी लगभग रोजाना फोन पर बात करती थी. हेतस को इस में कोई ऐतराज नहीं था. हेतस के मन में स्वीटी के प्रति भी कोई कटुता नहीं थी.

## इंसपेक्टर अजय ने कर ली थी दूसरी शादी

सब कुछ ठीकठाक चल रहा था. पति अजय पुलिस इंसपेक्टर था. उस का अपना रौबदाब था. इसलिए स्वीटी को अजय पर फख्र भी था.

स्वीटी से प्रेम विवाह के कुछ दिनों बाद ही अजय ने अपने समाज की एक युवती पूजा से विधिवत शादी कर ली. अजय ने स्वीटी को यह बात नहीं बताई. स्वीटी को भी इस बात का पता नहीं चला. अजय ने अपनी दूसरी पत्नी पूजा को दूसरी जगह मकान दिलवा दिया.

संयोग ऐसा रहा कि पूजा और स्वीटी करीब 3 साल पहले एक ही समय गर्भवती हुईं. बाद में स्वीटी ने बेटे को जन्म दिया और पूजा ने बेटी को.

बच्चा होने के कई दिन बाद स्वीटी को अजय की दूसरी शादी के बारे में पता चला. इस बात पर स्वीटी का अजय से झगड़ा होने

पुलिस हिरासत में किरीट सिंह जडेजा और अजय देसाई

लगा. दिन पर दिन झगड़ा बढ़ता गया. अजय 2 नावों की सवारी कर रहा था. वह न तो स्वीटी को छोड़ना चाहता था और न ही पूजा को.

स्वीटी से रोज होने वाले झगड़े को देखते हुए अजय ने उस का काम तमाम करने पर विचार किया. किरीट सिंह जड़ेजा अजय का दोस्त था. किरीट के पास पैसा भी था और राजनीतिक प्रभाव भी.

भरूच जिले के अटाली गांव में वह एक होटल बनवा रहा था, लेकिन उस का निर्माण कार्य किसी वजह से बीच में ही अधूरा छोड़ दिया था.

## गला घोंट कर की थी स्वीटी की हत्या

एक दिन अजय ने किरीट से एक लाश ठिकाने लगाने के बारे में बात की. अजय ने किरीट को यह नहीं बताया कि लाश किस की होगी.

उस ने बताया कि परिवार में एक महिला के गैर व्यक्ति से संबंध हो गए. इस से वह महिला गर्भवती हो गई है. परिवार के लोग उसे मार कर लाश ठिकाने लगाना चाहते हैं. किरीट सिंह ने दोस्ती में अजय से इस काम में सहयोग करने का वादा किया.

4 जून, 2021 की रात अजय जब घर पहुंचा, तो पूजा से शादी को ले कर स्वीटी से उस का फिर विवाद हुआ. रोजाना के झगड़े से तंग आ कर अजय ने उसे ठिकाने लगाने का फैसला किया.

वह काफी देर तक इस पर सोचता रहा. स्वीटी जब सो गई तो आधी रात बाद उस ने गला घोंट कर उस को मार डाला.

रात भर वह अपने फ्लैट पर ही रहा. सुबह नहाधो कर तैयार हुआ. उस ने अपने दोस्त किरीट सिंह को फोन कर कहा कि परिवार के लोगों ने रिश्ते की बहन को मार डाला है, अब लाश ठिकाने लगानी है.

किरीट ने इस काम में सहयोग करने का वादा करते हुए कहा कि वह लाश को अटाली गांव में उस के निर्माणाधीन होटल के पिछवाड़े ले जा कर ठिकाने लगा दे.

इस के बाद अजय ने अपने साले जयदीप को फोन कर कहा कि स्वीटी रात एक बजे से सुबह साढ़े 8 बजे के बीच घर से बिना बताए कहीं चली गई है. उस समय लाश घर में थी.

बाद में अजय स्वीटी की लाश को एक एसयूवी कार में रख कर अटाली गांव ले गया और दोस्त किरीट सिंह के निर्माणाधीन होटल के पिछवाड़े रख कर जला दी. इस के लिए उस ने कुछ लकड़ियां और कैमिकल का भी इंतजाम कर लिया था. लाश जलाने के बाद वह वापस अपने घर आ गया. इस के बाद की कहानी आप पढ़ चुके हैं.

अजय भले ही पुलिस इंसपेक्टर था. वह 48 दिनों तक पुलिस को छकाता रहा, लेकिन पुरानी कहावत आज भी सच है कि अपराधी कितना भी शातिर हो, वह कोई न कोई सबूत जरूर छोड़ता है. अजय के साथ भी ऐसा ही हुआ. आखिर वह गिरफ्तार हुआ.

पुलिस ने स्वीटी की हत्या के आरोप में अजय और किरीट सिंह जडेजा को रिमांड पर लिया. रिमांड अवधि के दौरान पुलिस ने 27 जुलाई को स्वीटी की हत्या से ले कर उस की लाश जलाने तक की घटना का रीक्रिएशन किया.

बाद में पुलिस ने अटाली में निर्माणाधीन बिल्डिंग के पिछवाड़े से स्वीटी की अंगुलियों की हड्डियां, जला हुआ मंगलसूत्र, हाथ का ब्रैसलेट, अंगूठी आदि बरामद किए.

परिवार वालों ने मंगलसूत्र स्वीटी का होने की पुष्टि की. पुरानी तसवीरों में भी स्वीटी वही मंगलसूत्र पहने हुए थी.

पुलिस इसे अहम सबूत मान रही है. अजय के पौलीग्राफ टेस्ट और एसडीएस परीक्षण की रिपोर्ट भी पौजिटिव आई है.

## अहम सबूत मिले पुलिस को

रिमांड अवधि पूरी होने पर पुलिस ने अदालत के आदेश पर अजय और किरीट सिंह को न्यायिक अभिरक्षा में भेज दिया. स्वीटी का बेटा अंश पूजा के पास था. सरकार ने भी पुलिस इंसपेक्टर अजय देसाई को सस्पेंड कर दिया.

अजय भले ही पुलिस इंसपेक्टर था. वह 48 दिनों तक पुलिस को छकाता रहा, लेकिन पुरानी कहावत आज भी सच है कि अपराधी कितना भी शातिर हो, वह कोई न कोई सबूत जरूर छोड़ता है. अजय के साथ भी ऐसा ही हुआ. आखिर वह गिरफ्तार हुआ.

अजय एक म्यान में दो तलवारें रखना चाहता था. यह न तो सामाजिक नजरिए से उचित था और न ही उस की सरकारी नौकरी के लिहाज से. उस ने पूजा से शादी करने की बात स्वीटी को नहीं बता कर अलग सामाजिक अपराध किया.

कोई भी महिला अपने पति का बंटवारा नहीं चाहती. पति की दो नावों की सवारी में पूजा बेमौत मारी गई. 2 शादियां करने के बाद भी उसे कफन तक नसीब नहीं हुआ और स्वीटी के दोनों बेटे भी मां की ममता से महरूम हो गए. ●

**ऐतिहासिक कथा**

ठाकुर प्रताप सिंह ने अपना वचन निभाते हुए अपनी लाडली बेटी राजबाला की शादी मुफलिसी से जूझ रहे राजकुमार अजीत सिंह के साथ की थी. शादी के बाद अजीत सिंह व उन की पत्नी राजबाला ने भी अपना एक वचन निभाने के लिए मेवाड़ के राजा जगत सिंह के यहां नौकरी की. नौकरी के दौरान ही अजीत सिंह ने एक दिन ऐसी वीरता का परिचय दिया कि...

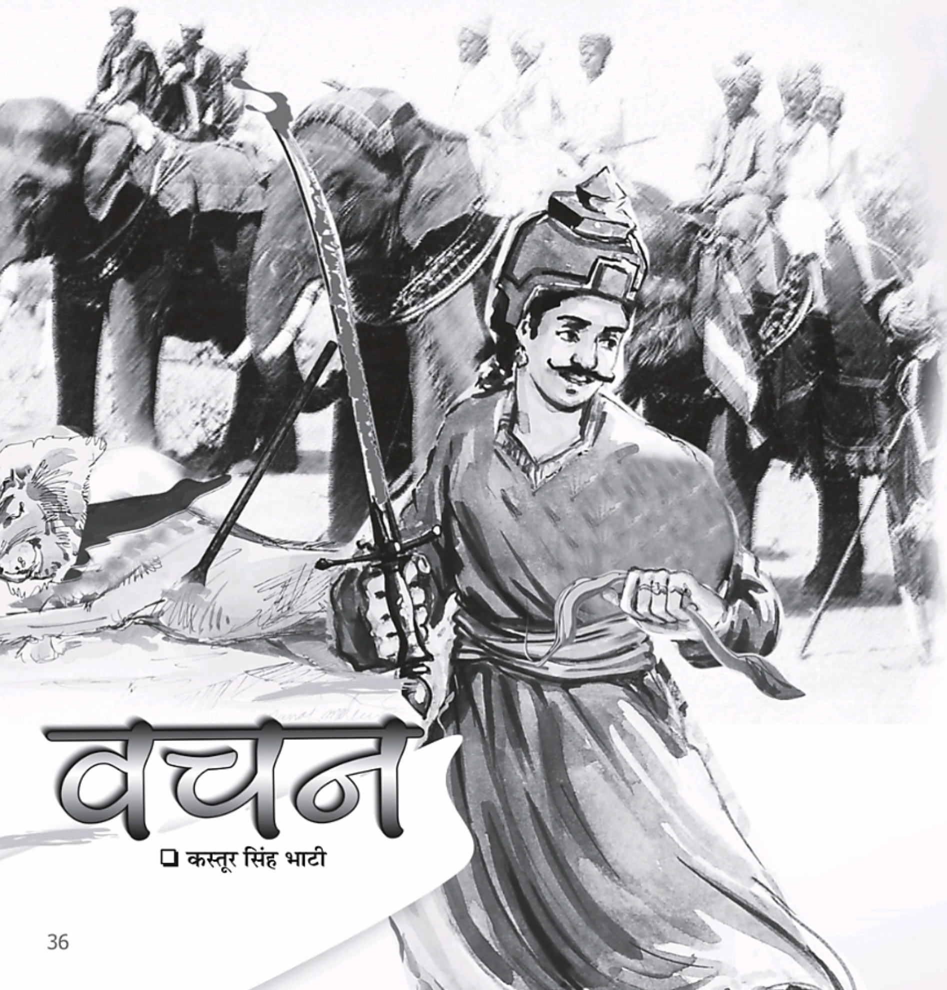

# वचन

❑ कस्तूर सिंह भाटी

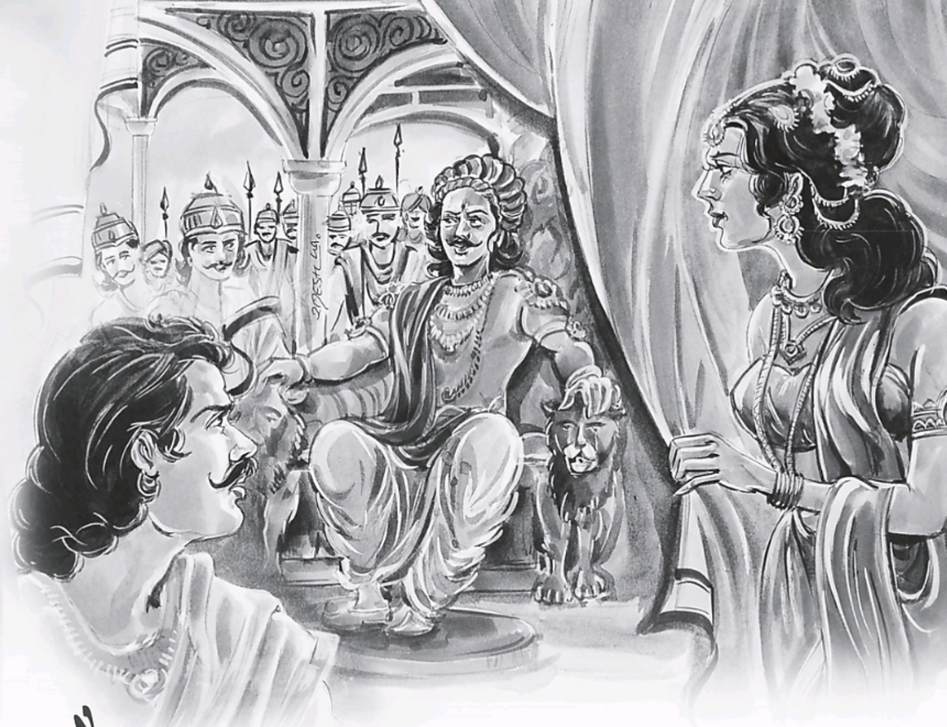

वैशालपुर के ठाकुर प्रताप सिंह की बेटी थी राजबाला. वह बेहद सुंदर और धैर्यवान होने के साथ चतुर भी थी. आसपास के रजवाड़ों में ऐसी गुणों की खान कोई न थी. राजबाला का गोरा रंग, सुतवां नाक, कजरारे बड़ेबड़े नैन और गुलाब की पंखुड़ियों जैसे गुलाबी होंठ, भरा और कसा बदन, कमर तक लटकती स्याह काली केशराशि और मोहक मुसकान देख कर लोग उसे ऐसे ताकते रह जाते थे, जैसे वह किसी दूसरे लोक से आई कोई अप्सरा हो.

मगर हकीकत में वह कोई अप्सरा नहीं, बल्कि राजपूत बाला राजबाला थी. अपने पति को वह प्राणों से अधिक प्यार करती थी और जीवन भर कभी भी ऐसा अवसर न आया, जब उस ने पति की इच्छा के खिलाफ कोई काम किया हो.

राजबाला का विवाह अमरकोट रियासत की सोडा राजधानी के राजा अनार सिंह के पुत्र अजीत सिंह से हुआ था. अनार सिंह के पास बहुत बड़ी सेना थी, जिस से कभीकभी वह लूटमार भी किया करते थे.

एक बार ऐसा हुआ कि राव कोटा का राजकोष कहीं से आ रहा था. इस की खबर अनार सिंह को लग गई. तब अनार सिंह अपनी सेना ले कर राजकोष लूटने चल पड़े. राव कोटा के सिपाही बड़े वीर थे. दोनों सेनाओं में जम कर युद्ध हुआ. अंत में अनार सिंह की पराजय हुई और उन की सारी सेना तितरबितर हो गई.

इस पराजय के कारण अनार सिंह का सोडा में रहना असंभव हो गया. कोटा के राजा राव ने अनार सिंह की जागीर छीन ली और उन्हें देश निकाले का फरमान सुना दिया. अनार सिंह अब अपने किए पर पछता रहे थे.

मगर जो होना था, वह तो हो चुका था. अंत में वह सोडा को छोड़ कर काले वस्त्र धारण कर काले घोड़े पर बैठ कर स्याह काली रात के अंधेरे में दूसरे राज्य के एक छोटे से गांव में जा बसे.

अनार सिंह का हाथ तो पहले से ही तंग था, अब हालत और भी खराब हो गए. कहावत है कि रिजक ( धन ) बिन राजपूत कैसा. यहां तक कि देश निकाला मिलने के थोड़े समय बाद में दुख और लाज के मारे उन्होंने प्राण त्याग दिए.

अनार सिंह की मृत्यु के बाद उन की पत्नी ठकुरानी अपने पुत्र अजीत सिंह को बड़े कष्ट उठा कर पालने लगी. अजीत सिंह की उम्र उस समय 13 वर्ष रही होगी. किंतु बांकपन और वीरता में वह अपनी उम्र के बालकों से कहीं बढ़ कर था. इस कुल की धीरेधीरे यह दुर्दशा हो गई कि अजीत सिंह की माता दूसरों का कामकाज कर के निर्वाह करने लगी. इस प्रकार उस दुखिया की भी कुछ समय बाद मृत्यु हो गई.

राजबाला के साथ अजीत सिंह के विवाह

की बातचीत उस के पिता के जीते जी हो गई थी. हालांकि अनार सिंह का यह कुल अति दरिद्र हो गया था. परंतु राजपूत लोग सदा से अपने वचन का सम्मान करते थे.

राजपूतानियां भी प्राय: अति हठी होती थीं. एक बार जब किसी के साथ उन का नाम निकल जाए, फिर वह कभी किसी दूसरे के साथ विवाह करना उचित नहीं समझती थीं.

अजीत सिंह अब बिलकुल अनाथ था. वह किसी प्रकार अपना निर्वाह न कर सकता था. किंतु उसे आशा थी कि उस के युवा होने पर शायद कोटा का राजा उस के पिता की जागीर उसे दे देगा, जिस का वह वारिस है. बस, वह इसी आशा से जी रहा था.

एक बार अजीत सिंह ने एक राजपूतानी को प्रताप सिंह के यहां इसलिए भेजा था कि वह अपनी पुत्री का विवाह उस के साथ करने को राजी है या नहीं ? उस समय राजबाला भी युवती थी. वह विवाह का समाचार सुन कर अपनी सहेलियों से कहने लगी, ''बहनो, मैं ने अपने पति को नहीं देखा, वह कैसे हैं ?''

सहेलियां बोलीं, ''तुम्हारे पति अति सुंदर, बुद्धिमान और वीर हैं.''

पति की प्रशंसा सुन कर राजबाला अति प्रसन्न हुई और कहने लगी, ''मेरे पति वीर हैं, चतुर हैं और सुंदर हैं. ये ही सब बातें एक राजपूत में होनी चाहिए. सब कहते हैं कि उन के पास धन नहीं है. न सही, जहां बुद्धि और पराक्रम है, वहां धन अपने आप ही आ जाता है.''

राजबाला ने किसी तरह उस राजपूतानी से मिल कर कहा, ''तुम जा कर मेरे पति से कहो कि यहां लोग तुम्हारी दरिद्रता का समाचार कहते रहते हैं, परंतु मैं आज से ही नहीं, कई सालों से आप की हो चुकी हूं. आप मेरे पति हैं, मैं आप की बुराई सुनना नहीं चाहती. इसलिए आप स्वयं आ कर पिताजी से कह कर मुझे ले जाएं. मैं गरीबी और अमीरी में सदा आप का साथ दूंगी. किसी का वश नहीं कि मेरी बात को टाल सके. यदि विवाह होगा तो आप के साथ होगा, नहीं तो राजबाला प्रसन्नतापूर्वक प्राण त्याग करेगी.''

जिस समय राजपूतानी ने राजबाला का यह संदेश अजीत सिंह को सुनाया. वह बहुत खुश हुआ और कहने लगा, ''यह कैसे संभव है कि मेरे जीते जी कोई और राजबाला को ब्याह ले जाए.''

राजबाला के कहे अनुसार अजीत सिंह ने उस के पिता प्रताप सिंह को विवाह के लिए कहलवा भेजा. जिस के जवाब में प्रताप सिंह ने कहा, ''विवाह को तो हम तैयार हैं. क्योंकि हम ने तुम्हारे पिता को वचन दिया था. परंतु इस समय तुम्हारी आर्थिक हालत सही नहीं है. ऐसा करो कि तुम 20 हजार रुपए इकट्ठा कर के लाओ, जिस से यह मालूम हो कि तुम मेरी बेटी को सुखी रख सकोगे. जब तक तुम्हारे पास 20 हजार रुपए न हों तो विवाह के बारे में भी तुम्हारा सोचना व्यर्थ है.''

आखिर प्रताप सिंह की बात भी उचित थी. कोई भी पिता अपनी ऐशोआराम में पली बेटी का विवाह ऐसे किसी व्यक्ति के साथ कैसे कर सकता है, जिस का खुद निर्वाह करना मुश्किल होता हो.

अजीत सिंह सोच में डूब गया. परंतु बेचारा क्या करता. अंत में उसे जैसलमेर के एक सेठ मोहता का ध्यान आया, जिस के यहां से उस के पिता का लेनदेन था.

वह सेठ मोहता के पास गया और उस से कहा, ''सेठजी, तुम मेरे घराने के पुराने महाजन हो. 20 हजार रुपए के बिना मेरा विवाह नहीं हो रहा है. विवाह करना जरूरी है, परंतु तुम जानते हो कि मेरे पास इस समय न जागीर है, न ही कुछ और है. अगर पुराने संबंधों का विचार कर के और मुझ पर विश्वास करते हुए मुझे 20 हजार रुपए दे सको तो दे दो. मैं सूद सहित वापस कर दूंगा.''

सेठ मोहता ने अजीत सिंह को बड़े ध्यान से देख कर कहा, ''ये लो, ये 20 हजार रुपए रखे हैं. लेकिन एक शर्त है, वो यह कि तुम यह वचन दो कि जब तक तुम मेरे रुपए वापस न लौटा दोगे, तब तक अपनी पत्नी से मिलन नहीं करोगे. अगर ऐसा करते हो तो यह रुपए ले लो.''

ऐसे वचन को निभाना बड़ी कठिन बात थी. परंतु रुपए मिलने का और कोई उपाय भी तो न था. अत: वह राजी हो गया और रुपए ले कर अपनी ससुराल वैशालपुर आया.

अपने वचन के अनुसार प्रताप सिंह ने दोनों का विवाह कर दिया. यह किसी को जरा भी खबर न हुई कि रुपए कहां से आए. विवाह के बाद रीतिरिवाज के अनुसार दूल्हा दुलहन दोनों के लिए एक महल दे दिया गया. वे कई दिन तक उस में रहे, परंतु सेज पर सोते समय अजीत सिंह अपने और पत्नी के बीच नंगी तलवार रख कर सोता था.

राजबाला को उन के इस प्रकार के बर्ताव से बड़ा आश्चर्य हुआ और मन ही मन सोचने लगी, 'सचमुच मेरे पति बड़े सुंदर हैं, चतुर और वीर हैं, पर नामालूम बीच में नंगी तलवार रख कर सोने का क्या मतलब है ?'

कई दिन इसी तरह बीत गए, परंतु राजबाला को इतना साहस नहीं हुआ कि कुछ पूछती. अंत में एक दिन दोनों में बातचीत होने लगी. राजबाला ने साहस कर के पूछा, ''प्राणनाथ, मैं देखती हूं कि आप प्राय: ठंडी और गहरी सांसें लेते रहते हैं. इस से पता चलता है कि आप को कोई बड़ा कष्ट हो रहा है. मैं तो आप के चरणों की दासी हूं, मुझ से छिपाना उचित नहीं है. मैं विचार करूंगी कि किस प्रकार आप की चिंता दूर हो सकती है.''

राजबाला की बात सुन कर उस का दिल भर आया और मुंह नीचा कर के उस ने चुप्पी साध ली.

राजबाला ने फिर कहा, ''स्वामी, घबराने की कोई बात नहीं है. इस संसार में सभी पर विपत्ति आती है. चिंता व्यर्थ है. संसार में हर रोग की दवा है. आप चिंता न कीजिए, मुझ से कहिए. यथासंभव मैं आप की सहायता करूंगी. यदि मेरे मरने से भी आप को सुख मिलता है या आप का भला होता है तो मेरे प्राण आप की सेवा को हर समय तैयार हैं.''

राजबाला का इतना कहना था कि अजीत सिंह ने राजबाला का हाथ पकड़ लिया और दुखभरे शब्दों में अपनी सब कथा कह सुनाई.

जब अजीत सिंह यह सब कह चुका तो राजबाला ने कहा, ''स्वामी, आप ने बड़ा त्याग कर के मुझे मोल लिया है. मैं कभी आप की इस कृपा को नहीं भूल सकती. पर यह ऐसी जगह नहीं है, जहां 20 हजार रुपए मिल सकें. इसलिए इसे छोड़ना उचित है.

''मैं इसी समय मरदाना वेश धारण करती हूं. मैं और आप संगसंग रहेंगे. जब कोई आप

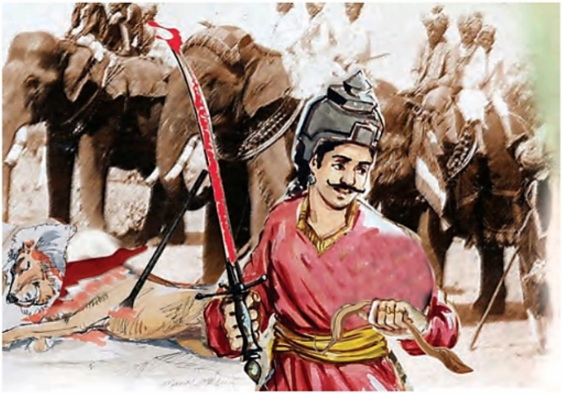

से मेरे बारे में पूछे तो आप साले बहनोई बताएं. चलिए, परदेश चल कर महाजन के 20 हजार रुपए चुकाने का उपाय करें.''

आधी रात का समय था, जब पतिपत्नी में इस प्रकार की बातचीत हुई. सब लोग बेसुध सो रहे थे. राजबाला ने मरदाना वेश धारण किया. अजीत सिंह और राजबाला दोनों महल से बाहर आए और घोड़ों पर सवार हो कर चल दिए.

कई दिन के सफर के बाद 2 सुंदर बांके युवक घोड़ों पर सवार उदयपुर में दिखाई दिए. उस समय मेवाड़ की राजगद्दी पर महाराज जगत सिंह राज करते थे. राणा महल की छत पर बैठे नगर को देख रहे थे. नए राजपूतों को देख कर उन का हाल जानने के लिए राणा ने 2 दूतों को भेजा.

थोड़ी देर में दोनों राजपूत राणा के सामने लाए गए. जब दोनों राजपूत प्रणाम कर चुके तो महाराज ने पूछा, ''तुम कौन हो ? कहां से आए हो ? और कहां जा रहे हो ?''

अजीत सिंह ने उत्तर दिया, ''महाराज, हम दोनों राजपूत हैं. मेरा नाम अजीत सिंह और ये मेरे साले हैं. इन का नाम गुलाब सिंह है. नौकरी की तलाश में आप के यहां आए हैं. सौभाग्य से आप के दर्शन हो गए. अब आगे क्या होगा, नहीं मालूम.''

राजा राजपूतों के ढंग को देख कर बहुत प्रसन्न हुए और राजपूतों के नाम पर मोहित हो कर महाराज ने हंस कर उत्तर दिया, ''तुम लोग मेरे यहां रहो. एक हवेली तुम्हारे रहने के लिए दी जाती है. खानपान के लिए अतिरिक्त 5 हजार रुपए और दिए जाएंगे.''

राजबाला और अजीत सिंह दोनों अब उदयपुर में रहने लगे, परंतु 20 हजार रुपए की चिंता सदा लगी रहती थी. रुपए जुटाने का कोई उपाय नहीं सूझ रहा था. वह वर्षा ऋतु के आरंभ में यहां आए थे और वर्षा ऋतु बीत गई.

फिर दशहरे का त्यौहार आया. इस पर राजपूताना में बड़ा उत्सव मनाया जाता है. उदयपुर में पाड़े ( भैंसे ) का वध किया जाता है. महाराज के साथ सब सामंत, जागीरदार, सरदार घोड़ों पर सवार हुए. उन के साथ गुलाब सिंह और अजीत सिंह भी चल दिए.

इतने में ही एक गुप्तचर ने आ कर खबर दी, ''महाराज की जय हो. पाड़े के स्थान पर एक सिंह की खबर है.''

राणा ने राजपूतों से कहा, ''वीरों, आज का दिन धन्य है जो सिंह आया है. ऐसा अवसर बड़ी कठिनाई से मिलता है. अब पाड़े का ध्यान छोड़ कर सिंह का शिकार करो.''

बस, फिर क्या था. हांके वालों ने सिंह को जा कर घेर लिया और उस के निकलने के लिए केवल एक ही रास्ता रखा जिधर राजा और सरदार उस सिंह का इंतजार कर रहे थे.

महाराज हाथी पर थे. वह चाहते थे कि स्वयं सिंह का शिकार करें. इसलिए उन्होंने और सरदारों को उचितउचित स्थान पर खड़ा कर दिया. जब सिंह ने देखा कि उसे लोग घेर रहे हैं तो वह राणा की ओर बढ़ा.

उसे देख का राणा डर गए क्योंकि उन्होंने पहले कभी इतना बड़ा सिंह नहीं देखा था. उसे मारना आसान काम नहीं था. सब सरदार लोग भी डर गए. सिंह झपट कर राणा के हाथी पर आया और उस के मस्तक से मांस का लोथड़ा नोच कर पीछे हट गया.

राणा के हाथ से भय के मारे तीरकमान भी छूट गए. सिंह फिर छलांग लगाने को ही था कि गुलाब सिंह ने दूर से देखा और अजीत सिंह से कहा, ''ठाकुर साहब, महाराज की जान खतरे में है. उन्हें ऐसे कठिन समय में छोड़ना अति कायरता की बात है. मुझ से अब देखा नहीं जाता. प्रणाम, मैं जाता हूं.''

तभी गुलाब सिंह का घोड़ा तीर की तरह सनसनाता हुआ आगे बढ़ा, हाथी अपना धैर्य छोड़ चुका था. सिंह फिर छलांग लगाने को ही था कि हवा के झोंके की तरह आ कर गुलाब सिंह ने उसे अपने भाले के निशाने पर ले लिया. भाले सहित सिंह जमीन पर गिरा.

बस, फिर क्या था, सवार ने एक ऐसा हाथ तलवार का मारा कि सिंह का सिर अलग जा गिरा. उसी समय उस के कान और पूंछ काट कर घोड़े की जीन के नीचे रख कर लोगों के बीच जा पहुंचा और बातचीत करने लगा.

परंतु उस ने इस काम को इतनी फुरती में किया कि किसी को ज्ञात भी न हुआ कि वह घुड़सवार कौन था, जिस ने सिंह को मारा. सिंह के मरने पर चारों ओर राजा की जयजयकार होने लगी. सब लोगों ने अपनीअपनी जगह से आ कर राजा को घेर लिया. सरदारों ने कहा, ''ईश्वर ने आज बड़ी दया की. हम सब की जान में जान आई.''

जब सभी बधाई दे चुके तो राजा ने कहा, ''वह कौन बहादुर था, जिस ने आज मेरी प्राणों की रक्षा की. उस को मेरे सामने लाओ. मैं उसे ईनाम दूंगा.''

परंतु मारने वाला बहुत दूर खड़ा था. वह अपने को उजागर करना भी नहीं चाहता था. राणा ने थोड़ी देर तक राह देखी. परंतु जब कोई नहीं आया तो खुशामदी दरबारी लोग अपनेअपने मित्रों के नाम बताने लगे.

राणा ने कहा, ''नहीं, मैं ने उसे जाते हुए देखा है. हालांकि ठीकठीक नहीं कह सकता, परंतु पहचान तो उसे अवश्य लूंगा. उस के मुख

की सुंदरता मेरी आंखों में खपी जाती है.''

राजा की बात सुन कर सब चुप हो गए और सवारी महल की ओर चली. जब राणा फाटक पर पहुंचे तो हाथी से उतर कर आज्ञा दी, ''एकएक आदमी मेरे सामने से हो कर निकल जाएं.''

आज्ञानुसार बारीबारी से सभी लोग राणा के सामने से निकल कर महल में चले गए. जब गुलाब सिंह जाने लगा तो राणा ने उसे देख कर पूछा, ''क्या सिंह को तुम ने मारा है ?''

गुलाब सिंह ने सिर झुका कर कहा, ''जिस को श्रीमान कहें, वही सिंह का वध कर सकता है. सिंह की मृत्यु तो आप की आज्ञा के अधीन है''

राणा बोले, ''मैं समझता हूं, सिंह तुम ने ही मारा है परंतु मैं यह यकीन से नहीं कह सकता, क्योंकि तीव्रगति से दौड़ते घोड़े ने मुझे इतना अवसर न दिया कि मैं मारने वाले को ठीक से पहचान सकता.''

अजीत सिंह भी निकट था, वह बोला, ''अनाथों के नाथ, सिंह के कान और पूंछ नहीं हैं, इस से ज्ञात होता है कि उस को मारने वाले ने प्रमाण के लिए उस के कान और पूंछ काट लिए हैं.''

राणा ने गुलाब सिंह से कहा, ''कान और पूंछ हाजिर करो.''

गुलाब सिंह ने तुरंत घोड़े की जीन के नीचे से निकाल कर उन्हें राणा के सामने पेश किया. राणा बोले, ''राजपूतो, तुम बड़े वीर हो. आज से तुम मेरे संग रहो. मैं तुम्हें अपना अंगरक्षक नियुक्त करता हूं.''

हालांकि दोनों राजपूत संग रहते थे परंतु रात के समय दोनों को अलगअलग हो जाना पड़ता था. अजीत सिंह तो रात को दरबार में रहता था और राजबाला ( गुलाब सिंह ) की ड्यूटी राजा के सुख भवन में थी. एक दिन राजबाला अपनी बेबसी पर नीचे स्वर में मल्हार के राग गाने लगी.

अजीत सिंह ने राजबाला के राग को सुना. उस के हृदय में भी वही भाव उद्दीप्त हो गया. उस ने भी राजबाला के राग में स्वर मिला दिया. राणा की रानी बहुत चतुर थी. दोनों गाने वालों के राग की आवाज रात के समय उस के कानों में पड़ी.

उस ने राणा से कहा, ''मुझे ज्ञात होता है कि ये दोनों राजपूत जो तुम्हारी सेवा में हैं स्त्री और पुरुष हैं. यह जो पुरुष रानी निवास पर पहरे पर है, अवश्य यह स्त्री है. कोई कारण है, जिस से ये एकदूसरे से नहीं मिलते और मन ही मन कुढ़ते हैं.''

राणा खूब ठहाके मार कर हंसे फिर बोले, ''खूब, तुम्हें खूब सूझी. ये दोनों सालेबहनोई हैं. सदा से संग रहते हैं. आज यह यहां ड्योढ़ी पर हैं कि कभी अलग नहीं होंगे. इन दोनों में गाढ़ी प्रीत है.''

रानी बोली, ''महाराज, आप जो कहते हैं सत्य होगा, परंतु मेरी भी बात मान लीजिए. इन की परीक्षा कीजिए. अपने आप ही झूठसच ज्ञात हो जाएगा.''

> गुलाब सिंह का घोड़ा तीर की तरह सनसनाता हुआ आगे बढ़ा, हाथी अपना धैर्य छोड़ चुका था. सिंह फिर छलांग लगाने को ही था कि हवा के झोंके की तरह आ कर गुलाब सिंह ने उसे अपने भाले के निशाने पर ले लिया. भाले सहित सिंह जमीन पर गिरा.

राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ और तुरंत ही अजीत सिंह और गुलाब सिंह दोनों को अपने महल में बुला भेजा. दोनों बड़े डरे कि क्या बात है. कोई नई आफत तो नहीं आई.

उन्होंने राणा के सामने जा कर प्रणाम किया. तब राणा ने पूछा, ''गुलाब सिंह और अजीत सिंह यह बताओ कि तुम दोनों मर्द हो या तुम में से कोई स्त्री है ?''

दोनों चुप थे. क्या उत्तर देते. राणा ने फिर वही प्रश्न किया, ''तुम दोनों बोलते क्यों नहीं ? तुम्हें जो दुख हो कहो. मेरे अधिकार में होगा तो अभी इसी समय दूर कर दूंगा. लाज, भय की कोई बात नहीं.''

अजीत सिंह ने सिर झुका कर राणा को अपनी सारी कहानी कह सुनाई. राणा ने उसी समय दासी को बुला कर कहा, ''देखो, यह जो बहन मरदाना वेश में खड़ी है, मेरी पुत्री है. इस को अभी महल में ले जा कर स्त्रियों के कपड़े पहना दो और महल में रहने के लिए अलग स्थान दो, हर प्रकार से इन को आराम दो.''

राजबाला राणा को प्रणाम कर उन की आज्ञा मान कर उसी समय सिर झुका कर महल में चली गई.

इस के बाद राणा ने अजीत सिंह से कहा, ''राजपूत, मैं तेरे बापदादा के नाम को जानता हूं. तेरा वचनबद्ध होना धन्य है. मैं ने आज तक अपनी आयु में ऐसा योगी नहीं देखा था. तू मनुष्य नहीं देवता है. जा महल में अब अपनी स्त्री से बात कर.''

रात को किसी को नींद नहीं आई. सुबह होते ही राणा ने 20 हजार रुपए सूद सहित अजीत सिंह को दिए.

वह उसी समय ऊंटनी पर चढ़ कर जैसलमेर की ओर चल दिया. कई दिन के सफर के बाद अजीत सिंह जैसलमेर मोहता सेठ के पास पहुंचा और सूद सहित 20 हजार रुपए सौंप दिए.

एक बरस से अजीत सिंह का कोई अतापता नहीं था. बनिया अपने रुपयों से निराश हो गया था परंतु उसे कोई रंज न था. क्योंकि वह अजीत सिंह के पिता अनार सिंह से बहुत कुछ ले चुका था. रुपए वापस पा कर सेठ बहुत खुश हुआ और बोला, ''तुम वास्तव में क्षत्रिय हो, तुम जानते हो कि वचन क्या होता है. तुम महान हो.''

अजीत सिंह सेठ के रुपए दे कर उदयपुर आया और राणा के पैरों पर गिर पड़ा, ''आप ने मेरी लाज रख ली.''

राणा ने राजबाला को प्राणरक्षक देवी का खिताब दिया. वह उदयपुर में इसी नाम से विख्यात थीं. वह जब कभी राणा के महल में उन के होते हुए जाती, राणा बेटी कह कर पुकारते थे.

पतिपत्नी दोनों राणा के कृपापात्र बन गए. राणा उन्हें बहुत प्यार करते थे, मानो वे उन के ही बेटेबेटी हों. राजबाला और उस के पति के लिए एक अलग से महल बनवा दिया गया और उन्हें एक जागीर भी अलग प्रदान की कई.

सेठ के रुपए चुका कर उदयपुर जाने के बाद उस रात जब बिस्तर पर अजीत सिंह और राजबाला सोए, तब उन के बीच तलवार नहीं थी. दोनों ने अपना वचन धर्म निभाया था और उस दिन दो जिस्म एक जान बन गए थे. ●

# यह राजा हर साल करता है कुंवारी लड़की से शादी

वैसे तो दुनियाभर में लोकतंत्र है, जहां लोगों द्वारा चुनी हुई सरकार ही सत्ता को संभालती है. लेकिन अफ्रीकी महाद्वीप में एक ऐसा भी देश है, जहां राजशाही सत्ता लागू है. यानी वहां एक राजा राज करता है. यह देश है स्वाजीलैंड. लेकिन सन 2018 में इस देश की आजादी के 50 साल पूरे होने पर वहां के राजा मस्वति तृतीय ने इस देश का नाम बदल कर किंगडम ईस्वातिनि रख दिया है. दक्षिण अफ्रीका और मोजांबिक की सीमाओं से लगा हुआ है किंगडम ईस्वातिनि.

यह देश प्राकृतिक रूप से बहुत खूबसूरत है, इसलिए इसे लोग रहस्यों से भरा देश भी कहते हैं. यहां पर हर साल अगस्त सितंबर महीने में 'उम्हलांगा सेरेमनी' का आयोजन होता है. इस मौके पर देश की सभी कुंवारी लड़कियां शामिल होती हैं. इन की संख्या करीब 10 हजार होती है.

बताया जाता है कि ये सभी लड़कियां राजा के सामने टौपलैस अवस्था में आती हैं. उन में से राजा किसी एक के साथ शादी करता है. जो मातापिता अपनी कुंवारी बेटियों को इस समारोह में नहीं भेजते, राजा उन पर भारी जुरमाना लगाता है.

51 वर्षीय राजा मस्वति तृतीय अब तक 15 शादियां कर चुका है, जिन से 23 बच्चे हैं. मस्वति के पिता राजा शोभुआ द्वितीय की भी 125 पत्नियां थीं. करीब 13 लाख की आबादी वाले इस देश में 63 प्रतिशत लोग बेहद गरीब हैं लेकिन राजा को उन की गरीबी से कोई सरोकार नहीं रहता. वह तो केवल अपना खजाना भरने में लगा रहता है. मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, उस के पास करीब 14 अरब रुपए की संपत्ति है. उस के पास 19 रोल्स रायस, 20 मर्सिडीज और 12 बीएमडब्ल्यू कारें हैं.

राजा मस्वति तृतीय वैसे भारत भी आ चुका है. सन 2015 में भारतअफ्रीका शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए वह अपनी सभी पत्नियों, बच्चों और 100 नौकरों सहित आया था. सभी को दिल्ली के एक फाइवस्टार होटल में ठहराया गया था. ●

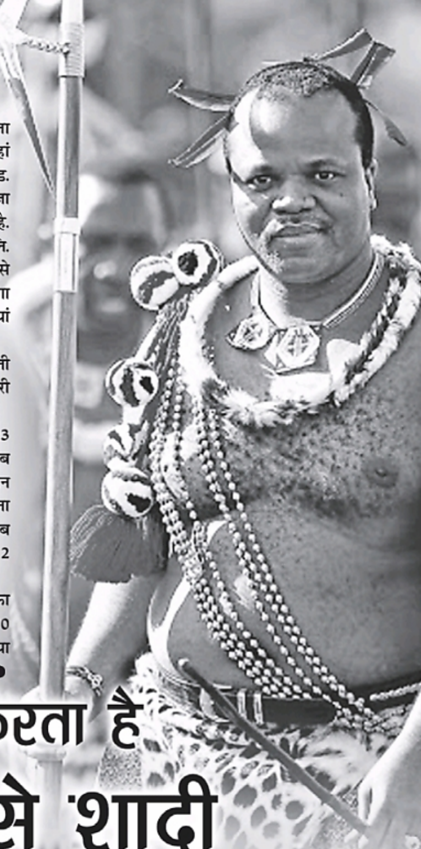

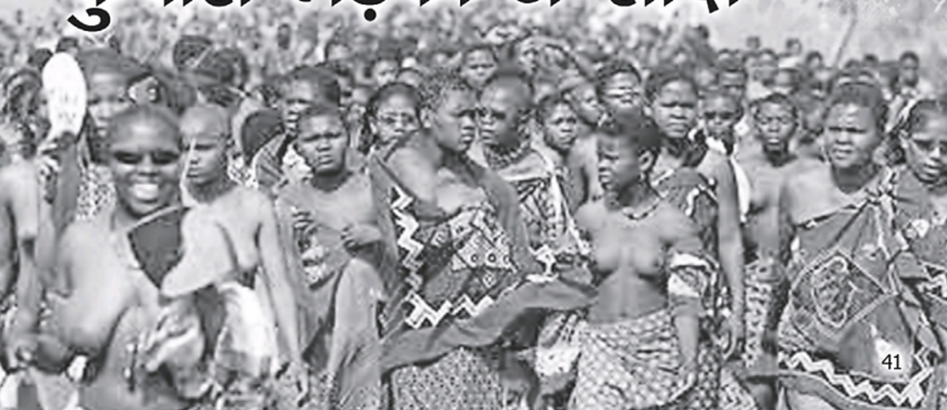

वैसे तो भारत में रोजाना रेप के लगभग 88 केस दर्ज होते हैं, लेकिन शिमला में नाबालिग गुड़िया के साथ हुए रेप केस की गूंज पूरे भारत में गई. सीबीआई जांच में इस केस के आरोपी को सजा तो मिल ही गई. साथ ही हिमाचल पुलिस के आईजी, एसपी, इंसपेक्टर सहित 9 पुलिसकर्मियों को भी सीबीआई ने गिरफ्तार कर जेल भेजा. आखिर यह कैसे हुआ...

## गुड़िया रेपमर्डर केस

# आईजी व एसपी भी हुए गिरफ्तार

❑ शैलेंद्र कुमार 'शैल'

शिमला, हिमाचल प्रदेश

गुड़िया को न्याय दिलाने और आरोपियों को फांसी देने की मांग को ले कर प्रदर्शन करते शिमला के लोग

हिमाचल प्रदेश के शिमला जिले के कोटखाई इलाके की बहुचर्चित गुड़िया रेप-हत्याकांड की जांच पूरी हो चुकी थी. 21 अप्रैल, 2021 को जिला सत्र न्यायालय राजीव भारद्वाज की अदालत में सुनवाई हुई.

अदालत में सीबीआई की ओर से सरकारी वकील अमित जिंदल दमदार तरीके से अपनी दलीलें पेश कर रहे थे तो वहीं बचाव पक्ष की ओर से अधिवक्ता महेंद्र एस. ठाकुर ताल ठोक कर मजबूती से अपने पांव जमाए हुए थे.

आरोपी था अनिल उर्फ नीलू उर्फ चरानी, जो दया का पात्र बना कठघरे में खड़ा था. इस दौरान उस के चेहरे का रंग उड़ा हुआ था. उस पर नाबालिग गुड़िया के रेप और मर्डर का आरोप लगा था.

उसे घटना के करीब एक साल बाद सीबीआई ने गिरफ्तार किया था. नीलू के खिलाफ 29 मई, 2018 को अदालत में आरोप पत्र दाखिल किया गया था. उस के खिलाफ चल रहे ट्रायल में कुछ बिंदुओं पर कोर्ट में बहस हुई.

बचाव पक्ष के अधिवक्ता महेंद्र एस. ठाकुर ने कहा, ''माई लार्ड, मुकदमे की कारवाई शुरू करने की इजाजत चाहता हूं.

''इजाजत है.'' विद्वान न्यायाधीश राजीव भारद्वाज ने मुकदमा शुरू करने की इजाजत दी.

''मी लार्ड, जैसा कि सभी जानते हैं कि नाबालिग गुड़िया रेप एंड मर्डर केस का अदालत में मुकदमा चल रहा है और यह मुकदमा अंतिम पड़ाव पर है.''

''हां, है.''

''तो मेरा मुवक्किल सीबीआई की जांच से संतुष्ट नहीं है. सीबीआई द्वारा नमूने सही नहीं लिए गए. डीएनए, सीमन (वीर्य) से ले कर अन्य जो नमूने लिए गए, वो सीबीआई ने खुद सील किए, इन सैंपल्स को डाक्टरों को सील करना चाहिए था.

''यही नहीं, सीबीआई ने जांच के दौरान 100 से ज्यादा लोगों के ब्लड सैंपल लिए लेकिन किसी को गिरफ्तार नहीं किया, जबकि मेरे मुवक्किल नीलू को गिरफ्तार करने के बाद ब्लड सैंपल लिए. दलील ये दी गई कि सीबीआई ने ठोस सबूत की बिना पर ही अनिल उर्फ नीलू को गिरफ्तार किया. उस के बाद पूरे साक्ष्य इकट्ठे किए गए.

''मी लार्ड, मेरे मुवक्किल नीलू को फंसाने और अन्य किसी अपराधी को बचाने लिए सीबीआई ने सारे सबूतों का जखीरा खुद ही तैयार किया. दैट्स आल मी लार्ड.''

''अभीअभी मेरे काबिल दोस्त ने किसी फिल्म का मजेदार डायलौग बड़े ही मसालेदार ढंग से पेश किया, जो काबिलेतारीफ है.''

सीबीआई की ओर से सरकारी अधिवक्ता अमित जिंदल ने खड़े होते हुए कहा, ''मनगढ़ंत और मसालेदार कहानियां पेश करने में मेरे दोस्त का जवाब नहीं है. मी लार्ड, सच ये नहीं है बल्कि सच ये है कि सरकारी जांच एजेंसी सीबीआई की जांच पूरी तरह सही है और सीबीआई ने हर पहलू को ध्यान में रख कर सैंपल लिए गए हैं.''

''सच ये नहीं है.'' बचाव पक्ष के वकील ने जोरदार तरीके से प्रतिरोध किया.

तभी सरकारी वकील ने जवाब दिया, ''यही सच है. केस के मद्देनजर एकएक बिंदु पर पैनी नजर रखते हुए रिपोर्ट तैयारी की गई है तो लापरवाही का सवाल ही नहीं पैदा होता. मैं अदालत से दरख्वास्त करूंगा कि सबूतों और गवाहों के मद्देनजर आरोपी नीलू उर्फ अनिल उर्फ चरानी को फांसी की सजा सुनाई जाए.''

बचाव पक्ष के वकील ने अपने मुवक्किल का बचाव करते हुए कहा, ''मेरे मुवक्किल का इस से पहले कोई आपराधिक इतिहास नहीं है, माई लार्ड. यह उस का पहला अपराध है, इसलिए उस के पिछले जीवन को देखते हुए उसे कम से कम सजा देने की अदालत से मेरी गुहार है श्रीमान. और मुझे कुछ नहीं कहना है.''

इस के बाद सम्मान के साथ न्यायाधीश के सामने सिर झुकाते हुए एडवोकेट महेंद्र एस. ठाकुर अपनी सीट पर जा कर बैठ गए तो सरकारी अधिवक्ता अमित जिंदल भी अपनी कुरसी पर जा बैठे. कोर्ट की यह सुनवाई 21 अप्रैल को दोपहर पौने 3 बजे से शुरू हो कर 4 बजे तक चली थी.

कोर्टरूम में कुछ पल के लिए ऐसा गहरा सन्नाटा पसरा था कि एक सुई गिरने की आवाज साफ सुनी जा सकती थी. खैर, जज राजीव भारद्वाज ने दोनों पक्षों के अधिवक्ताओं की बहस सुनी. बहस सुनने के बाद अपने निर्णय को सुरक्षित रखते हुए 28 अप्रैल, 2021 को फैसला सुनाने का ऐलान करते हुए उस दिन की कोर्ट को मुल्तवी किया.

किसी कारणवश तय तिथि 28 अप्रैल को कोर्ट नहीं बैठ सकी, जिस से यह तिथि 11 मई तक बढ़ा दी गई कि मुलजिम की किस्मत का फैसला इस दिन सुनाया जाएगा. लेकिन लौकडाउन की वजह से वह तिथि भी टाल दी गई. फिर 18 जून को फैसला सुनाए जाने की तिथि तय हुई और ऐसा हुआ भी.

नाम के अनुरूप गुड़िया थी ही गुड़िया जैसी एकदम मासूम, चपल, चंचल और बेहद खूबसूरत, शिमला की खूबसूरत वादियों की तरह जिसे हर कोई प्यार किए बिना थकता नहीं था. मांबाप की लाडली गुड़िया उतनी ही अव्वल थी पढ़ने में.

अदालत के दाईं ओर बने कटघरे में मुलजिम नीलू उर्फ अनिल उर्फ चरानी मुंह लटकाए खड़ा था और उस के चेहरे का रंग पीला पड़ा था. जज राजीव भारद्वाज अपनी न्याय की कुरसी पर विराजमान थे. अदालत कक्ष में दोनों पक्षों यानी बचाव पक्ष के अधिवक्ता महेंद्र एस ठाकुर और सरकार की ओर से अधिवक्ता अमित जिंदल मौजूद थे.

## न्यायाधीश ने सुनाई सजा

मुकदमे की कारारवाई शुरू की गई. जिला एवं सत्र न्यायाधीश राजीव भारद्वाज ने अपना फैसला सुनाते हुए कहा, ''दोनों पक्षों के विद्वान अधिवक्ताओं की दलीलें सुनी गईं. इस मामले में सीबीआई ने 55 गवाहों के बयान दर्ज किए. मामले के 14 में से 12 बिंदू नीलू के खिलाफ गए थे और 2 बिंदू आरोपी के पक्ष में. गौरतलब बात यह है कि आरोपी की हत्या वाली जगह पर मौजूदगी, पोस्टमार्टम रिपोर्ट, डीएनए रिपोर्ट आरोपी के खिलाफ रहीं.

''मिट्टी के सैंपल, शरीर पर निशान भी नीलू के दोषी होने को साबित करते हैं. नीलू के पक्ष में यह रहा कि पुलिस या सीबीआई उस की आपराधिक पृष्ठभूमि साबित नहीं कर सकी.

''इस जघन्य अपराध के आरोपी अनिल कुमार उर्फ नीलू को भादंवि की धारा 372

घटनास्थल और उस के आसपास की जांच करती सीबीआई टीम

हैवानियत का शिकार बनी मासूम गुड़िया

(फाइल फोटो)

(2) (आई) और 376 (ए) के तहत बलात्कार का दोषी माना जाता है. साथ ही भारतीय दंड संहिता की धारा 302 के तहत उसे हत्या और धारा 4 के तहत दमनकारी यौन हमला करने की सजा का दोषी माना जाता है. चूंकि पीड़िता नाबालिग थी इसलिए अदालत उसे पोक्सो एक्ट का दोषी भी करार देती है.''

न्यायाधीश राजीव भारद्वाज ने आगे कहा, ''सीबीआई की ओर से दायर चार्जशीट के तथ्यों को आधार मानते हुए यह अदालत इस नतीजे पर पहुंची है कि दोषी अनिल कुमार उर्फ नीलू उर्फ चरानी को नाबालिग से दुष्कर्म के जुर्म में मरते दम तक आजीवन कारावास और हत्या के मामले में आजीवन कारावास सहित 10 हजार रुपए जुरमाना लगाती है.

''जुरमाना न भरने की सूरत में दोषी को एक साल का अतिरिक्त कारावास काटना होगा. आरोपी की सजा फैसले के दिन से मानी जाएगी. आरोपी अनिल कुमार उर्फ नीलू उर्फ चरानी को न्यायिक हिरासत में लेते हुए यह अदालत उसे जेल भेजने की आदेश देती है अत: आरोपी को तत्काल पुलिस कस्टडी में लिया जाए. आज के मुकदमे की काररवाई यहीं खत्म की जाती है.''

न्यायाधीश राजीव भारद्वाज ने 10 मिनट में फैसला सुना कर उस दिन की अदालत की काररवाई को विराम दिया और न्याय की कुरसी से उठ कर अपने कक्ष में चले गए. इस के बाद शिमला पुलिस ने अभियुक्त अनिल कुमार को हिरासत में लिया और उसे जेल ले गई.

आइए पढ़ते हैं कि गुड़िया रेप और मर्डर केस की दिल दहला देने वाली सनसनीखेज कहानी. इस दर्दनाक और शर्मनाक घटना ने देश तक को हिला कर रख दिया था, जिस में पुलिस महानिरीक्षक से ले कर कांस्टेबल सहित 9 पुलिसकर्मियों तक को जेल की हवा खानी पड़ी थी. आखिर क्या हुआ था इस कहानी में, आइए पढ़तें हैं.

16 वर्षीय गुड़िया मूलरूप से शिमला के विधानसभा चौपाल के छोग की रहने वाली थी. पिता शिवेंद्र कुमार और मां अर्पिता की 5 संतानों में वह चौथे नंबर पर बेटियों में सब से छोटी थी लेकिन बेटा अमन से बड़ी थी. बड़ी होने के नाते गुड़िया अपने मांबाप और बहनों की लाडली और भाई की दुलारी थी.

मुख्य आरोपी अनिल उर्फ नीलू उर्फ चरानी को कोर्ट में पेश करने ले जाती सीबीआई टीम

## स्कूल से घर नहीं लौटी गुड़िया

नाम के अनुरूप गुड़िया थी ही गुड़िया जैसी एकदम मासूम, चपल, चंचल और बेहद खूबसूरत, शिमला की खूबसूरत वादियों की तरह जिसे हर कोई प्यार किए बिना थकता नहीं था. मांबाप की लाडली गुड़िया उतनी ही अव्वल थी पढ़ने में.

पढ़लिख कर वह जीवन में बड़ा अफसर बनने की जिजीविषा रखती थी. तो मांबाप भी बेटी के सपने को पूरा करने के लिए हमेशा तत्पर रहते थे. बच्चों की बेहतर परवरिश और शिक्षा पर वह पानी की तरह पैसे बहाते थे.

शिवेंद्र कुमार एक बड़े किसान थे. उन का अपने क्षेत्र में बड़ा नाम था. नाम के साथसाथ बड़ी पहचान भी थी. उन के पास पैसों की कोई कमी नहीं थी, इसीलिए बच्चों की शिक्षा पर वह खूब पैसे खर्च करते थे.

लेकिन होनी को कौन टाल सकता है, जो होना है वह तो हो कर ही रहता है. ऐसा ही कुछ शिवेंद्र के साथ भी हुआ.

उन्हें क्या मालूम था कि उन के साथ बड़ा भयानक और कड़वा मजाक होने वाला है जिस का जख्म समय के मरहम के साथ तो भर जाएगा, लेकिन उस के निशान ताउम्र नासूर की तरह सालता रहेगा.

वह तारीख थी 4 जुलाई, 2017. गुड़िया, महासू के सीनियर सैकेंडरी हायर स्कूल में 10वीं कक्षा में पढ़ती थी. उन दिनों शाम साढ़े 4 बजे उस के स्कूल की छुट्टी हुआ करती थी. उस दिन भी उस के स्कूल की नियत समय पर छुट्टी हुई थी.

छुट्टी होते ही गुड़िया स्कूल से घर के लिए निकल गई थी लेकिन देर शाम तक वह घर नहीं पहुंची थी. बेटी के घर न पहुंचने पर मां अर्पिता को चिंता हुई.

उन्होंने फोन कर के पति को बताया, ''शाम होने वाली है, बेटी अभी तक घर नहीं लौटी. मुझे चिंता हो रही है, जरा स्कूल फोन कर के पता करिए, आखिर बेटी कहां रह गई.''

पत्नी की बात सुन कर औफिस गए शिवेंद्र

भी परेशान हो गए. शिवेंद्र ने पत्नी से कहा अभी स्कूल के प्रधानाचार्य को फोन कर के पता करता हूं. तुम चिंता मत करो.

फिर उन्होंने फोन काट दिया और स्कूल के प्रधानाचार्य को फोन मिला कर बेटी के बारे में पूछा.

शिवेंद्र की बात सुन कर प्रधानाचार्य भी हैरान रह गए थे. उन्होंने गुड़िया के पिता को बताया कि बेटी गुड़िया स्कूल आई थी और समय से घर के लिए निकल गई थी.

प्रधानाचार्य से बात करने के बाद शिवेंद्र की चिंता और बढ़ गई. उन्होंने नातेरिश्तेदारों के यहां फोन कर के बेटी के बारे में पूछा लेकिन वह वहां भी नहीं पहुंची थी. अब घर वाले यह सोच कर परेशान होने लगे कि गुड़िया गई तो गई कहां? मन में यह सवाल उठते ही शिवेंद्र की धड़कनें तेज हो गईं.

उन्हें ये समझते देर न लगी कि कहीं बेटी के साथ कोई अनहोनी तो न हो गई. औफिस से देर रात घर लौटे शिवेंद्र पत्नी के साथ सोफे पर बैठेबैठे बेटी के घर लौटने के इंतजार में मुख्यद्वार को टकटकी लगाए ताकते रहे और बेटी की चिंता में पूरी रात दोनों पतिपत्नी ने आंखों में काट दी थी.

## जंगल में नग्नावस्था मिली थी लाश

इस बीच शिवेंद्र ने कोटखाई थाने में तहरीर दे कर बेटी की गुमशुदगी की सूचना दर्ज करा दी थी. इंसपेक्टर राजिंदर सिंह मुकदमा अपराध संख्या 97/2017 पर गुमशुदगी दर्ज कर के जरूरी काररवाई में जुट गए थे.

खैर, अगली सुबह शिवेंद्र बेटी की खोज में निकल गए तो उन के व्यवहार के कायल रिश्तेदार भी गुड़िया की तलाश में शिमला के जंगलों की खाक छानते फिरते रहे लेकिन गुड़िया का कहीं पता नहीं चला.

रहस्यमय तरीके से गुड़िया को लापता हुए 24 घंटे से ऊपर बीत चुके थे. लेकिन उस का कहीं पता नहीं चला.

6 जुलाई की सुबह कोई पौने 8 बजे कोटखाई थाना स्थित हलाइला गांव के पास तांदी के जंगल के एक गड्ढे के भीतर एक लड़की की नग्नावस्था में लाश मिली. उस की उम्र यही कोई 16-17 साल के करीब रही होगी.

आरोपी अनिल उर्फ नीलू

लाश मिलते ही वन अधिकारी ने इस की सूचना कोटखाई थाने के इंसपेक्टर राजिंदर सिंह को दे दी थी. सूचना मिलते ही वह एसआई दीपचंद, हैडकांस्टेबल सूरत सिंह, कांस्टेबल मोहन लाल, रफीक अली, महिला कांस्टेबल नेहा को साथ ले कर घटनास्थल पहुंच गए थे.

घटनास्थल पहुंच कर उन्होंने मुआयना किया और गुड़िया के पिता शिवेंद्र को भी मौके पर बुलवा लिया था. उन्हें आशंका थी कि यह लाश कहीं 2 दिनों से लापता गुड़िया की तो नहीं है. उन के यहां होने से लाश की शिनाख्त करने में आसानी होगी.

हलाइला गांव के निकट स्थित तांदी के जंगल में लड़की की लाश मिलने की सूचना मिलते ही शिवेंद्र के हाथपांव फूल गए और वह तुरंत मौकाएवारदात पर चल दिए. रास्ते भर वह यही प्रार्थना करते रहे कि बेटी जहां भी हो, सुरक्षित रहे.

खैर, थोड़ी देर बाद बेटे अमन के साथ वह मौके पर पहुंच गए. वहां भारी भीड़ जमा थी और जंगल बीच एक गड्ढे के भीतर लाश के ऊपर सफेद चादर डाल दी गई थी.

चादर से ढकी लाश देख कर शिवेंद्र का दिल जोरजोर से धड़कने लगा था. मानो अभी हलक के रास्ते मुंह के बाहर आ जाएगा.

पिता को एक किनारे खड़ा कर अमन ने हिम्मत जुटा कर लाश के ऊपर से चादर उठाई. चेहरा देखते ही अमन का कलेजा मुंह को आ गया और वह दहाड़ मार कर रोने लगा.

## पुलिस अधिकारी भी पहुंचे मौके पर

अमन को रोता देख इंसपेक्टर राजिंदर सिंह को समझते देर न लगी कि 2 दिनों से रहस्य बनी लाश की शिनाख्त हो गई है. बेटे को रोता देख कर पिता की आंखें भी नम हो गई थीं. तब तक घटना की सूचना पा कर एसपी डी.डब्ल्यू. नेगी, एएसपी (ग्रामीण) भजन देव नेगी और डीएसपी मनोज जोशी मौके पर पहुंच चुके थे.

लाश की स्थिति देख कर पुलिस अधिकारियों की रूह कांप गई थी. गुड़िया के शरीर पर कई जगह चोट और वक्षस्थल पर दांत काटने के निशान पाए गए थे. ये देख कर लगता था कातिलों ने इंसानियत की सारी हदें पार कर दी थीं.

घटना चीखचीख कर कह रही थी हत्यारों ने दुष्कर्म करने के बाद अपनी पहचान छिपाने के लिए मासूम गुड़िया को मार डाला था.

खैर, काफी खोजबीन के बाद मौके पर लाश के अलावा कुछ नहीं मिला था. गुड़िया के स्कूल की ड्रेस, जूतेमोजे और स्कूल का बैग नहीं मिला था. हत्यारों ने कहां छिपा रखा था, किसी को कुछ पता नहीं था.

जंगल में आग की तरह गुड़िया की हत्या की खबर शिमला में चारों ओर फैल गई थी. खबर मिलते ही शिवेंद्र की जानपहचान वाले

7 जुलाई की सुबह गुड़िया रेपमर्डर केस ने शिमला की सड़कों पर विद्रोह और जनआंदोलन की जो रफ्तार पकड़ी, उस से पुलिस प्रशासन हिल गया था. मामला डीजीपी के दफ्तर तक जा पहुंचा था. मामले की गंभीरता को देखते हुए डीजीपी ने कड़ा रुख अपनाया और 10 जुलाई को एसआईटी का गठन करने का आदेश दिया. जिस में आईजी (दक्षिणी रेंज) जहूर हैदर जैदी, एसपी डी.डब्ल्यू. नेगी, एएसपी (ग्रामीण) भजन देव नेगी और इंसपेक्टर कोटखाई राजिंदर सिंह शामिल हुए.

तत्कालीन एसपी डी.डब्ल्यू. नेगी सीबीआई की हिरासत में और (दाहिने इनसेट में) आईजी जहूर हैदर जैदी

मौके पर पहुंचने लगे थे. ये देख कर पुलिस के पसीने छूटने लगे थे. एसपी नेगी ने जल्द लाश का पंचनामा भर कर उसे पोस्टमार्टम भेजने का आदेश दिया.

आननफानन में इंसपेक्टर राजिंदर सिंह ने मौके की काररवाई निपटा कर लाश पोस्टमार्टम के लिए जिला चिकित्सालय शिमला भेज दी और गुमशुदगी की धारा को धारा 302, 376 आईपीसी एवं पोक्सो एक्ट की धारा 4 में तरमीम कर अज्ञात के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया था.

## विद्रोह और जन आंदोलन ने पकड़ी रफ्तार

7 जुलाई की सुबह गुड़िया रेपमर्डर केस ने शिमला की सड़कों पर विद्रोह और जनआंदोलन की जो रफ्तार पकड़ी, उस से पुलिस प्रशासन हिल गया था. शिमला प्रशासन के हाथों से यह मामला निकल कर डीजीपी के दफ्तर तक पहुंच चुका था.

मामले की गंभीरता को समझते हुए डीजीपी ने कड़ा रुख अपनाया और 10 जुलाई को स्पेशल इनवैस्टीगेशन टीम (एसआईटी) का गठन करने का आदेश दिया. जिस में आईजी (दक्षिणी रेंज) जहूर हैदर जैदी, एसपी डी.डब्ल्यू. नेगी, एएसपी (ग्रामीण) भजन देव नेगी और इंसपेक्टर कोटखाई राजिंदर सिंह शामिल हुए.

अपने मातहतों को कड़े शब्दों में डीजीपी ने कह दिया था कि मासूम बेटी के कातिल हर हाल में सलाखों के पीछे कैद होने चाहिए.

इस बीच गुड़िया के कातिलों को सलाखों तक पहुंचाने के लिए शिमला की जानीमानी एनजीओ मदद सेवा ट्रस्ट के चेयरमैन विकास थाप्टा और उन की सहयोगी तनुजा थाप्टा जन आंदोलन में कूद पड़े थे.

पुलिस की नाकामी की पोल स्थानीय समाचारपत्रों ने खोल कर रख दी थी. पुलिस के ऊपर कातिलों को गिरफ्तार करने के लिए प्रदेश के मुख्यमंत्री और डीजीपी का भारी दबाव था. वह पलपल जांच की काररवाई की रिपोर्ट तलब करा रहे थे.

पुलिस की 3 दिनों की कड़ी मेहनत ने अपना रंग दिखाया. शक के आधार पर पुलिस ने 13 जुलाई की शाम को 5 लोगों को धर दबोचा. जिन के नाम सूरज सिंह, राजेंद्र सिंह उर्फ राजू निवासी हलाइला, सुभाष बिष्ट निवासी गढ़वाल, लोकजन उर्फ छोटू और दीपक निवासी पौड़ी गढ़वाल थे.

## एसआईटी ने निर्दोषों को बनाया आरोपी

सभी आरोपी शिमला में ही रह रहे थे और आपस में गहरे दोस्त थे. पुलिस ने उक्त पांचों को फर्द पर नामजद करते हुए रेप और मर्डर केस का आरोपी बना दिया था. पांचों आरोपियों से लगातार 5 दिनों तक थाने में कड़ाई से पूछताछ चलती रही. पुलिस ने सूरज सिंह को गैंगरेप का सरगना मानते हुए उसे खूब प्रताड़ित किया.

पुलिस के बेइंतहा जुल्म से हिरासत में सूरज सिंह ने दम तोड़ दिया था. पुलिस हिरासत में गैंगरेप आरोपी सूरज सिंह की मौत होते ही शिमला की ठंडी वादियों में अचानक ज्वालामुखी फट गया, जिस की तपिश से पुलिस महकमा धूधू कर जलने लगा था. ये 18 जुलाई, 2021 की बात है.

आरोपी सूरज सिंह की मौत के बाद सियासी मामला गरमा गया. कांग्रेस के वीरभद्र सिंह की सरकार के खिलाफ भाजपा ने मोरचा खोल दिया और मामले की जांच सीबीआई को सौंपने पर अड़ गई.

आखिरकार सरकार को उन के आगे झुकना पड़ा और 19 जुलाई को मामले की जांच सीबीआई की झोली में आ गिरी.

जांच की कमान सीबीआई के तेजतर्रार एसपी एस.एस. गुरम ने संभाली और उन का साथ दिया था डीएसपी सीमा पाहूजा ने. जांच की कमान संभालते ही एसपी गुरम ने दिल्ली मुख्यालय सीबीआई के दफ्तर में अपने तरीके से 2 अलगअलग मामले दर्ज किए.

पहला मुकदमा गुड़िया रेप और मर्डर केस में आरोपी सूरज सिंह की पुलिस हिरासत में हुई मौत का था. यह मुकदमा संख्या 101/2017 भादंवि की धारा 120बी, 302, 330, 331, 348, 323, 326, 218, 195, 196

और 201 भादंसं के तहत 22 जुलाई 2017 को दर्ज किया गया था. इस मुकदमे के आरोपी बनाए गए थे- आईजी (दक्षिणी रेंज) जहूर हैदर जैदी, एसपी डी.डब्ल्यू. नेगी, एएसपी (ग्रामीण) भजन देव नेगी, इंसपेक्टर (कोटखाई) राजिंदर सिंह, एएसआई दीप चंद, हैडकांस्टेबल सूरत सिंह, कांस्टेबल मोहन लाल, रफीक मोहम्मद और रंजीत.

पुलिस अधिकारियों पर आरोप था कि आरोपी सूरज सिंह को हिरासत में ले कर बेरहमी से पिटाई की गई थी. जिस से हिरासत में उस की मौत हो गई थी.

वहीं आईजी जैदी ने सूरज की मौत पुलिस हिरासत की बजाय आरोपी राजेंद्र सिंह उर्फ राजू के सिर पर मढ़ कर नया बवाल खड़ा कर दिया था. लेकिन जांचपड़ताल में यह बात झूठी साबित हुई थी.

खैर, सीबीआई एसपी एस.एस. गुरम ने हिमाचल पुलिस द्वारा शक के बिना पर आरोपी बनाए गए चारों लोगों राजेंद्र सिंह उर्फ राजू, सुभाष बिष्ट, लोकजन उर्फ छोटू और दीपक को जमानत पर छोड़ दिया और गुड़िया रेपमर्डर केस की जांच नए सिरे से शुरू कर दी.

उन्होंने जांच की काररवाई जहां से गुड़िया की लाश पाई गई थी, वहीं से शुरू की. सब से पहले उन्होंने जंगल की भौगोलिक परिस्थितियों को जांचापरखा. फिर उस के आनेजाने वाले रास्ते का अवलोकन किया.

## सीबीआई के हाथ लगा चश्मदीद

इधर सीबीआई के द्वारा पकड़े गए चारों आरोपियों को छोड़े जाने पर मदद सेवा ट्रस्ट के चेयरमैन विकास थाप्टा और तनुजा थाप्टा मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह से मिले और सीबीआई के क्रियाकलापों पर नाराजगी जताई.

उधर सीबीआई अपने कानों में तेल डाल कर अपनी जांच प्रक्रिया में जुटी रही. सीबीआई के 9 महीने के अथक प्रयास के बाद हलाइला जंगल से एक लकड़ी काटने वाले राजू नाम के संदिग्ध को पकड़ा और उस से कड़ाई से पूछताछ की.

खुद को निर्दोष बताते हुए राजू ने सीबीआई अधिकारी गुरम को बताया कि 5 जुलाई के दिन जंगल में अनिल उर्फ नीलू परेशान हाल में देखा गया था. उस के बाद से वह कहीं नहीं दिखाई दिया. वह मंडी जिला के बटोर का रहने वाला है और यहां पर एक ठेकेदार के पास लकड़ी चिरान का काम करता था.

राजू के बयान के बाद एसपी गुरम ने उसे छोड़ दिया और मुखबिर के जरिए नीलू का पकड़ने के लिए जाल फैला दिया. 13 अप्रैल, 2018 को सीबीआई ने आखिरकार शिमला के हाटकोटी इलाके से अनिल उर्फ नीलू समय गिरफ्तार कर लिया जब वह शिमला छोड़ कर कहीं भागने की फिराक में जुटा था.

एसपी एस.एस. गुरम गिरफ्तार नीलू को सीधे सीबीआई मुख्यालय दिल्ली ले आए और यहां उस से कड़ाई से पूछताछ की.

> नीलू ने गुड़िया को जंगल की ओर जैसे ही आते देखा, वह सतर्क हो गया और उस ने शिकारी भेड़िए की तरह पीछे से मुंह पर हाथ रख उसे दबोच लिया. अचानक हुए हमले से गुड़िया डर गई. और नीलू के मजबूत हाथों से छूटने की कोशिश करने लगी, लेकिन उस के चंगुल से निकल नहीं पाई.

आखिरकार सीबीआई के सवालों की बौछार के आगे नीलू टूट ही गया और अपना जुर्म कुबूलते हुए गुड़िया रेपमर्डर केस को खुद अंजाम देने की बात कुबूल ली. फिर उस ने आगे की पूरी कहानी रट्टू रोते की तरह उगल दी, जो कुछ ऐसे सामने आई—

28 वर्षीय अनिल उर्फ नीलू उर्फ कमलेश उर्फ चरानी मूलरूप से मंडी जिले के बटोर का रहने वाला था. शिमला के कोटखाई थाने के महासू में किराए का कमरा लेकर अकेला रहता था. हलाइला गांव के पास तांदी के जंगल में एक ठेकेदार के यहां वह लकड़ी चीरने का काम करता था.

अनिल उर्फ नीलू अविवाहित था. इकहरे बदन का दुबलापतला नीलू देखने में तो एकदम मरियल सा था, लेकिन था अव्वल दरजे का इश्कबाज रोमियो. राह गुजरती किसी महिला को देखता तो उस के मुंह से वासना की लार टपकने लगती थी. यहीं नहीं उसे खा जाने वाली नजरों से तब तक घूरता था, जब तक वह उस की नजरों से ओझल नहीं हो जाती थी.

## अनिल उर्फ नीलू की हो गई नीयत खराब

गुड़िया तांदी के जंगल के रास्ते हो कर रोजाना घर से स्कूल और स्कूल से घर जाया करती थी. नीलू की गुड़िया पर कई दिनों से नजर गड़ी हुई थी. गुड़िया थी तो नाबालिग, लेकिन स्वस्थ देह में उस का अंगअंग विकसित हो चुका था. उस के बदन पर जब भी नीलू की नजरें पड़ती थीं, उस की रगों में वासना के गंदे कीड़े कुलबुलाने लगते थे. लेकिन मन मसोस कर रह जाता था.

गुड़िया नीलू की आंखों के रास्ते उस के दिल में उतर चुकी थी. उस ने सोच लिया था कि गुड़िया के जिस्म को जब तक वह मन के मुताबिक नहीं भोग लेगा, तब तक उसे संतुष्टि नहीं होगी.

बात जुलाई, 2017 की है. उन दिनों बारिश की वजह से जंगल में चिरान का काम बंद चल रहा था लेकिन नीलू ठेके पर रोजाना पहुंचता था. उधर गुड़िया का स्कूल खुल चुका था. वह 10वीं कक्षा में पढ़ती थी. वह रोज समय से स्कूल जाया करती थी. उसे तांदी के जंगल के रास्ते से हो कर ही जाना पड़ता था.

4 जुलाई, 2017 को शाम साढ़े 4 बजे स्कूल से छुट्टी हुई तो वह जंगल के रास्ते घर निकल पड़ी. इधर नीलू जंगल में घात लगा कर उस के आने का इंतजार करने लगा कि आज वह अपनी हसरतें पूरी कर के ही रहेगा.

नीलू ने गुड़िया को जंगल की ओर जैसे ही आते देखा, वह सतर्क हो गया और उस ने शिकारी भेड़िए की तरह पीछे से मुंह पर हाथ रख उसे दबोच लिया. अचानक हुए हमले से गुड़िया डर गई. और नीलू के मजबूत हाथों से छूटने की कोशिश करने लगी, लेकिन उस के चंगुल से निकल नहीं पाई.

वहशी दरिंदा नीलू घसीटता हुआ उसे जंगल के बीच ले गया और उस के साथ जबरदस्ती कर डाली. जब वासना की आग ठंडी हुई तो उस के सामने जेल की सलाखें

नजर आने लगीं कि अगर इसे जिंदा छोड़ दिया तो यह अपने घर वालों को जा कर बता देगी.

फिर क्या था ? ये सवाल दिमाग में आते ही नीलू गुड़िया पर फिर से टूट पड़ा और फिर एक बार और उस के साथ अपना मुंह काला किया और गला घोंट कर मौत के हवाले झोंक दिया.

उस की पहचान मिटाने के लिए उस के स्कूल के कपड़े, जूतेमोजे, स्कूल बैग सब जला दिए और फरार हो गया. जहां 2 दिनों बाद उस की नग्नावस्था में लाश बरामद हुई.

## सीबीआई पर भी अंगुली उठा रहे हैं लोग

बहरहाल, फिर शुरू हुआ एसआईटी और सीबीआई का खेल. एसआईटी ने जिन 5 आरोपियों को गिरफ्तार किया था, जिन में एक आरोपी सूरज सिंह की हिरासत में मौत हो चुकी थी, उन आरोपियों को सीबीआई ने दोषी नहीं माना और उन्हें जमानत पर छोड़ दिया.

सीबीआई ने गुड़िया रेप मर्डर केस में जिस एक आरोपी कमलेश उर्फ अनिल उर्फ नीलू उर्फ चरानी को आरोपी बनाया है, उस की जांच से न तो गुड़िया के घरवाले खुश हैं और न ही मदद सेवा ट्रस्ट के चेयरमैन विकास थाप्टा.

सामाजिक संस्था के चेयरमैन विकास थाप्टा का कहना है, ''मैं इस बात से कतई इंकार नहीं करता कि नीलू दोषी नहीं है, लेकिन मैं इस बात को भी नहीं स्वीकार करता कि एक अकेला नीलू ही इस घटना को अंजाम दे सकता है. नीलू के अलावा भी इस केस में और भी दोषी हैं, जिन्हें बचाया गया है. उन दोषियों को सजा दिलाने तक संस्था चुप नहीं बैठेगी, संघर्ष करती रहेगी.''

इस के बाद इसी संस्था की ओर से हिमाचल प्रदेश हाईकोर्ट में गुड़िया दुष्कर्म मामले की जांच दोबारा करवाए जाने की मांग को ले कर न्यायाधीश त्रिलोक सिंह चौहान और न्यायाधीश सी.बी. बारोवलिया के समक्ष एक याचिका दायर की. याचिका पर सुनवाई करने वाले न्यायाधीश त्रिलोक सिंह चौहान ने सुनवाई करने वाली बेंच से खुद को अलग कर लिया.

खैर, गुड़िया को न्याय दिलाने के लिए मदद सेवा ट्रस्ट के चेयरमैन विकास थाप्टा, उन की सहयोगी तनुजा थाप्टा और ट्रस्ट के वकील भूपेंद्र चौहान ने एड़ीचोटी एक कर दी थी. आखिरकार उन की मेहनत रंग ले आई और गुड़िया का कातिल नीलू अपने कुकर्मों की सजा मृत्यु होने तक जेल में काटता रहेगा.

सीबीआई ने आईजी और एसपी सहित जिन 9 पुलिसकर्मियों को गिरफ्तार किया था, कथा लिखने तक उन में से आईजी जहूर हैदर जैदी और एसपी डी.डब्ल्यू. नेगी जमानत पर जेल से बाहर आ चुके हैं.

इन के केस में कोर्ट से अभी फैसला नहीं हुआ है. अब देखना यह है कि रस्सी को सांप बनाने में माहिर इन पुलिसकर्मियों के खिलाफ अदालत क्या सजा सुनाती है. ●

(कथा में मृतका का नाम और स्थान परिवर्तित है. कथा दस्तावेजों और पुलिस सूत्रों पर आधारित है)

---

# महिला के शरीर में बनती है शराब

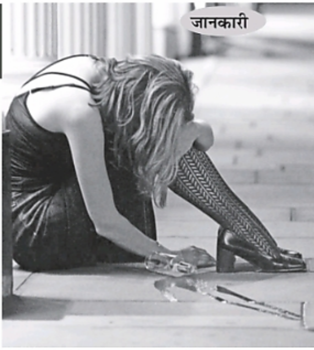

इस खबर का शीर्षक पढ़ कर ही आप शायद चौंक गए होंगे और सोच रहे होंगे कि शराब महिला के शरीर में आखिर कैसे बनती है. और शराब का सेवन किए बिना ही वह महिला नशे में रहती होगी.

आप सही सोच रहे हैं. न्यूयार्क की रहने वाली वह महिला शराब पिए बिना ही नशे में रहती है. महिला के शरीर में शराब बनने की जानकारी पुलिस काररवाई के बाद ही पता चली.

दरअसल, हुआ यह कि न्यूयार्क के हैमबर्ग में ट्रैफिक पुलिस ने एक कार चालक महिला को जांच के लिए रोका. उस की ड्राइविंग से लग रहा था कि वह महिला जैसे एल्कोहल पीने के बाद कार चला रही हो.

ट्रैफिक पुलिस ने जब उस महिला से शराब पीने के बारे में बात की तो उस ने बताया कि वह शराब पीती ही नहीं है. लेकिन पुलिस ने जब ब्रेथ एनलाइजर से जांच की तो उस के शरीर में एल्कोहल होने की पुष्टि हो गई. ट्रैफिक पुलिस ने महिला का चालान कर के उसे गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया.

महिला के वकील मारुसफ ने जज को बताया कि उन पर पुलिस ने गलत आरोप लगाया है. वह शराब नहीं पीती हैं. तब कोर्ट के आदेश पर उस महिला की शारीरिक जांच हुई. जांच में पता चला कि उस महिला को आटो ब्रेवरेज सिंड्रोम नामक बीमारी है. इसे गट फर्मेंटेशन सिंड्रोम भी कहा जाता है.

डाक्टर ने बताया कि यह दुर्लभ स्थिति तब होती है जब गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल यीस्ट सामान्य भोजन से मिलने वाले कार्बोहाइड्रेट को एथेनाल में बदलने लगता है.

इस संबंध में पैनोला कालेज औफ नर्सिंग की डीन बारबरा कार्डेल ने बताया कि ऐसे लोग 0.03 और 0.04 एल्कोहल लेवल पर भी सामान्य ढंग से काम करते रहते हैं.

डाक्टर की रिपोर्ट के बाद जज ने ट्रैफिक पुलिस द्वारा गिरफ्तार महिला को छोड़ने का आदेश दिया. ●

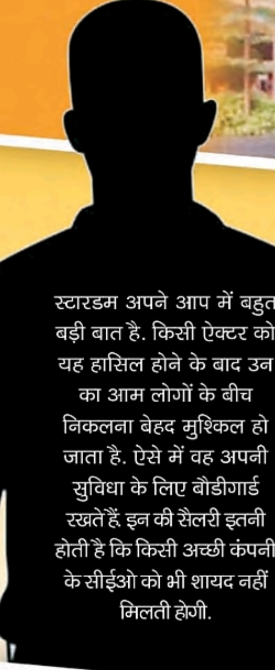

# करोड़ों कमाते हैं सितारों के बौडीगार्ड

स्टारडम अपने आप में बहुत बड़ी बात है. किसी ऐक्टर को यह हासिल होने के बाद उन का आम लोगों के बीच निकलना बेहद मुश्किल हो जाता है. ऐसे में वह अपनी सुविधा के लिए बौडीगार्ड रखते हैं. इन की सैलरी इतनी होती है कि किसी अच्छी कंपनी के सीईओ को भी शायद नहीं मिलती होगी.

❑ भारत भूषण श्रीवास्तव

नब्बे के दशक के दौरान जब फिल्मों की आउटडोर शूटिंग का चलन बढ़ा तो एक नई दिक्कत फिल्मी सितारों की सुरक्षा की पेश आने लगी. ऐसा नहीं कि इस के पहले आउटडोर शूटिंग नहीं होती थी और फिल्म स्टार्स के चाहने वाले उन्हें देखने और छूने के लिए बेकाबू होने की हद तक बेताब नहीं रहते थे, बल्कि ऐसा पहले भी होता था. जहां भी फिल्मों की शूटिंग हो रही होती थी, वहां लोगों की अच्छीखासी भीड़ लग जाती थी.

प्रसिद्ध साहित्यकार फणीश्वरनाथ रेणु के आंचलिक उपन्यास 'मारे गए गुलफाम' पर आधारित फिल्म 'तीसरी कसम' के कुछ दृश्यों की शूटिंग जब मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड इलाके में हो रही थी, तब फिल्म के हीरो राज कपूर और हीरोइन वहीदा रहमान को देखने के लिए लोगों का सैलाब उमड़ पड़ा था.

साल 1966 में प्रदर्शित इस फिल्म का बड़ा हिस्सा बिहार के अररिया जिले के गांव औराही हिंगना में भी फिल्माया गया था. वहां भी लोग राज कपूर और वहीदा रहमान को रूबरू देखने के लिए उमड़ पड़े थे. तब आज की तरह गैजेट्स नहीं थे कि आप अपने हाथ में दबे मोबाइल की स्क्रीन पर फोटो और वीडियो जब चाहे देख लें.

तब फिल्मी सितारे या तो थिएटर में दिखते थे या फिल्म के पोस्टरों में. लेकिन उन के फोटो काट कर दीवार पर चिपकाना हो या सीने से लगाना हो तो वो मैग्जीन्स खरीदनी पड़ती थीं, जिन में इन के फोटो छपते थे.

'तीसरी कसम' की यूनिट को बिहार और मध्य प्रदेश दोनों जगह दिक्कतें पेश आई थीं. दिक्कतें इस तरह की कि राज कपूर और वहीदा रहमान को देखने के लिए कई जगह कालेज के छात्रों ने हुड़दंग किया था.

शूटिंग देखने आए लोगों को काबू करने में स्थानीय पुलिस का रौब ही काफी होता था. लेकिन उस दौर के युवाओं पर भी पुलिसिया रौब नहीं चलता था.

शूटिंग के दौरान एक बार जब राज कपूर और वहीदा रहमान ललितपुर से मुंबई लौट रहे थे तो विदिशा रेलवे स्टेशन पर छात्रों ने ट्रेन ही रोक ली थी. तब अधिकतर ट्रेनों में एसी कोच नहीं हुआ करते थे फर्स्ट क्लास का डब्बा होता था, जो केबिनों में बंटा रहता था.

छात्रों का जमावड़ा और हुड़दंग देख राज कपूर घबरा उठे थे और विदिशा स्टेशन पर उतर कर उन्हें छात्रों के सामने हाथ जोड़ना पड़ा था. तब कहीं जा कर आधे घंटे बाद ट्रेन रवाना हो पाई थी.

आज अगर ऐसा हो तो क्या होगा, इस सवाल का जबाब यही निकलता है कि आज ऐसा नहीं हो सकता. क्योंकि तमाम बड़े और नामी फिल्म स्टार्स अपनी सिक्योरिटी की जिम्मेदारी खुद उठाते हैं और उस पर तगड़ी रकम भी खर्च करते हैं.

हाल तो यह है कि फिल्म स्टार्स के बौडीगार्ड की सालाना सैलरी ही करोड़ों तक में होती है और इन बौडीगार्ड्स की शोहरत

SOFIT
INSTITU
FRANÇA

और रुतबा भी किसी फिल्म स्टार से कम नहीं होता.

## सलमान और शेरा से हुई शुरुआत

बात साल 1995 की है जब सलमान खान का सितारा बुलंद था. लिहाजा उन्हें एक तजुर्बेकार और भरोसेमंद बौडीगार्ड की सख्त जरूरत थी. ऐसे में चंडीगढ़ की एक पार्टी में उन की मुलाकात सिख समुदाय के शेरा, जिन का असली नाम गुरमीत सिंह है, से हुई.

सलमान खान के भाई अरबाज खान को शेरा उपयुक्त लगे तो उन्होंने शेरा को बुला भेजा. बात जम गई और पहली ही मीटिंग में शेरा सलमान खान के बौडीगार्ड बन गए. अब तो आलम यह है कि शेरा को सलमान की परछाई और मालिक तक कहा जाने लगा है.

26 साल के अरसे में फिल्म इंडस्ट्री में कई उतारचढ़ाव और बदलाव आए, लेकिन इन दोनों का साथ नहीं छूटा. यह एक रिकौर्ड है कि शेरा के रहते कोई सलमान को छू भी नहीं पाया.

हिफाजत करने के एवज में शेरा को सैलरी कितनी मिलती है, यह आंकड़ा सुन कर आप भी चौंक सकते हैं कि तकरीबन ढाई करोड़ रुपए सालाना यानी कम से कम 20 लाख रुपए महीना.

इतनी सैलरी तो बड़ीबड़ी कंपनियों के सीईओ की भी नहीं होती और कई फिल्म स्टार्स हाड़तोड़ मेहनत के बाद भी इतना नहीं कमा पाते, जितनी शेरा जैसे कई बौडीगार्ड की तनख्वाह है.

लेकिन शेरा का काम या जिम्मेदारी सिर्फ अपने बौस के साथ या आगेपीछे बुत जैसे खड़े रहने की नहीं है, बल्कि यह बेहद चुनौतीपूर्ण काम है जिसे शेरा 26 साल से बखूबी अंजाम दे रहे हैं.

सलमान जहां भी जाते हैं, वहां शेरा एक दिन पहले पहुंच कर जायजा लेते हैं. इस के लिए उन्हें कई किलोमीटर पैदल भी चलना पड़ता है.

सलमान के आते ही वह उन्हें जौइन कर लेते हैं और फिर पलभर को भी नहीं छोड़ते. शेरा के रहते सलमान किसी बात की चिंता नहीं करते, क्योंकि शेरा उन के फैंस को भी बड़ी सूझबूझ से मैनेज करते हैं.

असल में सलमान का बौडीगार्ड बनने से पहले शेरा हौलीवुड स्टार्स को सिक्योरटी दिया करते थे और साल 1993 में उन्होंने अपनी खुद की सिक्योरटी कंपनी खोली थी, जिस का नाम 'टाइगर सिक्योरिटी' था. यह कंपनी फिल्म स्टार्स को सिक्योरिटी उपलब्ध कराती थी. उन के क्लाइंट्स में अमिताभ बच्चन का नाम भी शुमार होता है.

यह वह दौर था, जब देश भर में धड़ल्ले से सिक्योरिटी कंपनियां खुल रहीं थीं और हर सेक्टर में सिक्योरिटी गार्ड्स की मांग बढ़ रही थी. लेकिन बौडीगार्ड केवल खास किस्म के लोगों की ही डिमांड और जरूरत थे.

किसी हस्ती का बौडीगार्ड बनने की काबिलियत केवल तगड़ा शरीर ही नहीं, बल्कि अक्ल की भी जरूरत रहती है कि सिचुएशन देखते आप में त्वरित निर्णय लेने की क्षमता कितनी और कैसी है.

अनुष्का शर्मा ने अपने बौडीगार्ड प्रकाश सिंह को सोनू नाम दे रखा है. अकसर ग्रे कलर का सूट पहने रहने वाले सोनू की यह अहम जिम्मेदारी है कि कोई अनुष्का को टच भी न कर ले.

शेरा इन मापदंडों पर लगातार खरे उतरते गए तो उन की चर्चा भी खूब होने लगी. जिस में शोहरत का तड़का सलमान खान अभिनीत फिल्म बौडीगार्ड से लगा.

## बन जाते हैं फैमिली मेंबर

इस फिल्म के टाइटल ट्रैक में दोनों एक साथ डांस करते दिखे थे और इस से भी खास बात यह थी कि सलमान ने यह फिल्म शेरा को डेडिकेट की थी.

यह किसी नौकर को सम्मान देने की एक बेहतर मिसाल थी, जिस ने सलमान और शेरा को और नजदीक ला दिया. बाद में सलमान ने शेरा के बेटे टाइगर को सुलतान फिल्म का असिस्टेंट डायरेक्टर भी बनाया था.

अच्छेबुरे दिनों में साथ निभाने वाले शेरा अब सलमान के फैमिली मेंबर बन गए हैं तो यह कतई हैरानी की बात नहीं. ठीक यही नामी ऐक्ट्रैस दीपिका पादुकोण के साथ भी हुआ, जो अपने बौडीगार्ड जलाल को भाई मानती हैं और रक्षाबंधन पर उन्हें राखी भी बांधती हैं.

नायकों से ज्यादा नायिकाओं को फैंस का खतरा रहता है क्योंकि वे ज्यादा जोश में उन के नजदीक पहुंच कर उन्हें छू लेना चाहते हैं.

अब वह दौर गया, जब 90 फीसदी फिल्मों की शूटिंग मुंबई के स्टूडियोज में हो जाया करती थी और सितारे बंद गाड़ी मैं बैठ कर सेट पर पहुंच जाया करते थे. जिस की किसी को भनक भी नहीं लगती थी सिवाय सितारों के सेक्रेट्रियों के, जिन की अहमियत बौडीगार्ड से कमतर नहीं थी.

फर्क इतना भर है कि सेक्रेट्री व्यावसायिक काम देखता है और बौडीगार्ड उन की हिफाजत का जिम्मा उठाता है. अब 90 फीसदी फिल्मों की शूटिंग देश के तमाम छोटेबड़े शहरों में होती है, इसलिए फिल्म स्टार्स को अपनी सुरक्षा की चिंता स्वाभाविक है.

साल 2018 में जब दीपिका पादुकोण ने रणवीर सिंह से इटली के लेक कोमो शहर में शादी की थी, तब लड़की वालों की तरफ से प्रमुखता से जलाल वहां मौजूद थे.

हालांकि जलाल की सैलरी शेरा से आधी ही है, लेकिन वह दीपिका जैसी स्टार की

हिफाजत में इतने से ही खुश हैं. यह खुशी दरअसल समय के साथसाथ बांडिंग बढ़ते जाने की भी है, जो एक खास तरह का भावनात्मक संबंध भी बना देती है फिर पैसा खास माने नहीं रखता.

यही हाल शाहरुख खान और उन के बौडीगार्ड रवि सिंह का है, जो 10 साल से साथ हैं. शाहरुख खान की हर छोटीबड़ी खुशी और फंक्शन में दिखने वाले रवि को शेरा से भी ज्यादा सैलरी मिलती है तकरीबन 2.75 करोड़ रुपए सालाना, जो फिल्म इंडस्ट्री में सब से ज्यादा है.

लेकिन रवि शेरा की तरह लोकप्रिय नहीं हैं, शायद इसलिए भी कि वह सोशल मीडिया पर ज्यादा सक्रिय नहीं रहते. उलट इस के जलाल भी जब कभीकभार दीपिका की तसवीरें शेयर करते हैं तो उन की फैन फालोइंग बढ़ जाती है. आजकल के दौर में इस से बड़ा सुख और कोई है भी नहीं कि सोशल मीडिया पर आप के कितने ज्यादा फालोअर्स हैं.

## हिफाजत की तगड़ी कीमत

सलमान, दीपिका और शाहरुख के अलावा तमाम बड़े फिल्म स्टार्स हिफाजत की कितनी कीमत अपने बौडीगार्ड्स को अदा करते हैं, इस पर नजर डालें तो आखें फटी रह जाती हैं. सुपरस्टार अमिताभ बच्चन की एक झलक पाने को प्रशंसक बेताब रहते हैं, जो उन्हें नजदीक से एक बार देख और छू लेता है उस की तो मानो जिंदगी धन्य हो जाती है.

लेकिन लोग उन तक न पहुंचें और पहुंचें तो कैसे पहुंचें, यह तय करते हैं. उन के बौडीगार्ड जितेंद्र शिंदे जो अमिताभ को घेरे रखने के डेढ़ करोड़ रुपए सालाना लेते हैं और अमिताभ खुशीखुशी देते भी हैं.

आमिर खान के बौडीगार्ड युवराज घोरपडे की सैलरी 2 करोड़ रुपए सालाना है. युवराज पूरी मुस्तैदी से आमिर के इर्दगिर्द नजर आते हैं. कई बार आमिर गुपचुप यात्राएं करते हैं, जिन की खबर सिर्फ युवराज को ही रहती है.

इन दोनों का साथ भी सालों का है और आमिर खान की विदेश यात्राओं में भी युवराज उन के साथ रहते हैं. युवराज की यह खूबी है कि वह आमिर के बिना कहे काफी कुछ समझ जाते हैं और एक बड़े सेलिब्रेटी का पर्सनल बौडीगार्ड होने का सोशल मीडिया पर ज्यादा ढिंढोरा नहीं पीटते. आमिर खान के पास सिक्योरिटी की बड़ी टीम है, जिस के मुखिया युवराज हैं.

श्री के नाम से मशहूर श्रेयस ठेले अपने बौस अक्षय कुमार की तरह ही फिट और तेजतर्रार हैं और हमेशा उन के साथ दिखते हैं. अक्षय के बेटे आरव की हिफाजत की भी जिम्मेदारी श्रेयस निभाते हैं. इस के एवज में उन्हें कोई सवा करोड़ रुपए सालाना मिलते हैं.

आमिर की तरह अक्षय भी इस भरोसेमंद और वफादार बौडीगार्ड को विदेशों में भी साथ रखते हैं और उन का पूरा खयाल रखते हैं. क्योंकि श्रेयस के रहते 15 साल में उन्हें कभी दुश्वारी का सामना नहीं करना पड़ा.

श्रद्धा कपूर ने अपने बौडीगार्ड अतुल कांबले को उस के जन्मदिन पर बधाई देते हुए लिखा—मेरे जीवन के एक अद्भुत और महत्त्वपूर्ण व्यक्ति को जन्मदिन मुबारक हो. मुझे हमेशा सेफ रखने के लिए धन्यवाद.

इन दोनों की बांडिंग का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि अक्षय श्रेयस को राजू नाम से पुकारते हैं.

क्रिकेटर विराट कोहली की अभिनेत्री पत्नी अनुष्का शर्मा ने भी अपने बौडीगार्ड प्रकाश सिंह को सोनू नाम दे रखा है. अकसर ग्रे कलर का सूट पहने रहने वाले सोनू की यह अहम जिम्मेदारी है कि कोई अनुष्का को टच भी न कर ले.

अनुष्का और विराट दोनों सोनू को फैमिली मेंबर की तरह ही ट्रीट करते हैं. गौरतलब है कि विराट की सुरक्षा की जिम्मेदारी भी सोनू के कंधों पर है. कोरोना की दूसरी लहर के दौरान सोनू अपनी मालकिन की सुरक्षा के लिए पीपीई किट पहने रहते थे. उन की सैलरी भी सवा करोड़ है.

इसी तरह श्रद्धा कपूर अपने बौडीगार्ड अतुल कांबले को 80 लाख रुपए सालाना देती हैं तो वहीं कैटरीना कैफ अपने बौडीगार्ड दीपक सिंह को साल भर में एक करोड़ रुपए पगार देती हैं. सनी लियोनी भी अपनी हिफाजत के लिए रखे यूसुफ इब्राहीम को डेढ़ करोड़ रुपए सालाना सैलरी के रूप में देती हैं.

## इसलिए जरूरी हैं बौडीगार्ड

तमाम नामी फिल्म स्टार्स बौडीगार्ड रखते हैं क्योंकि उन्हें हिफाजत की गारंटी चाहिए रहती है. फिल्म इंडस्ट्री में अगर बेशुमार दौलत और शोहरत है तो खतरे भी कम नहीं हैं.

अकसर बड़ा खतरा ज्यादा नजदीक रहता है, इसलिए बौडीगार्ड्स को मुंहमांगी सैलरी दी जाती है. क्योंकि इन अंगरक्षकों को बौस से पहले जागना और बाद में सोना नसीब होता है. चौकन्नापन बौडीगार्ड्स की एक अतिरिक्त खूबी होती है. यानी जितना पैसा वे लेते हैं उतना सुखचैन उन्हें छोड़ना भी पड़ता है.

अभी तक अच्छी बात यह है कि तमाम फिल्मी बौडीगार्ड अपने मालिकों के प्रति वफादार रहे हैं और फिल्म स्टार्स ने भी तगड़ी पगार के अलावा उन्हें अपनापन और सम्मान दोनों बराबरी से दिए हैं. क्योंकि वे समझते हैं कि जो काम बौडीगार्ड्स करते हैं, उस में आराम कम काम ज्यादा है.

इन फिल्मी सितारों के लिए यह सोचना बेमानी है कि बौडीगार्ड रखना कोई स्टेटस सिंबल है बल्कि यह उन की खासी जरूरत है, जिसे पूरा करने के लिए वे अपनी कमाई का बड़ा हिस्सा इन्हें देते हैं. ●

**तंजावुर, तमिलनाडु**

हेलीकौप्टर ब्रदर्स के नाम से मशहूर मरियूर रामदास गणेश और मरियूर रामदास स्वामीनाथन

# हेलीकौप्टर ब्रदर्स ने की 600 करोड़ की ठगी

❑ प्रगति अग्रवाल

भारत के दक्षिणी राज्य तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई से करीब ढाई सौ किलोमीटर दूर तंजावुर जिला मुख्यालय है. इसी जिले का एक प्राचीन शहर कुंभकोणम है. यह शहर तंजावुर जिला मुख्यालय से कोई 40 किलोमीटर दूर है.

कुंभकोणम शहर के उत्तर में कावेरी और दक्षिण में अरसालर नदी बहती है. यह शहर टेंपल टाउन के नाम से भी विख्यात है. इस का कारण है कि यहां बड़ी संख्या में मंदिर हैं. कुंभकोणम शहर में हर साल होने वाले 'महामहम' फेस्टिवल में पूरे देश से लोग आते हैं.

मूलरूप से तिरवरूर जिले के गांव मरियूर के रहने वाले 2 भाई मरियूर रामदास गणेश और मरियूर रामदास स्वामीनाथन कोई 5-6 साल पहले कुंभकोणम शहर में आ कर बसे थे. इन के पिता रामदास बिजली विभाग में अधिकारी थे.

नौकरी के सिलसिले में रामदास पहले मदुलमपेट्टई और बाद में चेन्नई रहने लगे थे. बाद में वे सिंगापुर चले गए. सिंगापुर से कुंभकोणम में आ कर बसने पर उन्होंने विदेशी नस्ल की गायों से डेयरी कारोबार शुरू किया. दोनों भाई शहर के पौश इलाके श्रीनगर कालोनी में रहते थे.

देखते ही देखते ही उन का कारोबार तेजी से फलनेफूलने लगा. उन के व्यापार में खूब बरकत होने लगी. पैसा आने लगा तो वे अपना कारोबार धीरेधीरे बढ़ाने लगे. उन्होंने सिंगापुर सहित दूसरे देशों में भी अपना व्यापार फैला लिया. फार्मास्युटिकल का काम शुरू कर दिया.

इस बीच, उन्होंने कुंभकोणम में ही विक्ट्री फाइनेंस नामक एक वित्तीय कंपनी शुरू कर दी. यह कंपनी कर्ज देने और लोगों के पैसे जमा करने का काम करती थी. कुछ दिनों बाद उन्होंने अर्जुन एविएशन प्राइवेट लिमिटेड नामक एक विमानन कंपनी बना ली.

इस कंपनी को केंद्र सरकार से पंजीकृत भी करा लिया. इस कंपनी के नाम से उन्होंने एक हेलीकौप्टर भी खरीद लिया. उन्होंने हेलीकौप्टरों के लिए कोरुक्कई गांव में एक विशाल हेलीपैड भी बना लिया. उस समय प्रचारित किया गया कि एंबुलेंस सेवा और यात्रा के लिए हेलीकौप्टर उपलब्ध रहेंगे.

VFN
VICTORY FINANCE
VICTORY FINANCE
விக்டரி பைனான்ஸ்
VPN
VICTORY PAWN BROKER
VICTORY PAWN BROKER
விக்டரி அடகு கடை
19, Gandhi Nagar, Kumbakonam-612 001.
Ph : 0435-2411755

जफरुल्लाह और फैराज़ बानो ने एसपी के पास शिकायत दी कि हेलीकौप्टर ब्रदर्स की कंपनी में जमा 15 करोड़ रुपए की अवधि पूरी हो गई थी, लेकिन उन्हें पैसे वापस नहीं मिले

मरियूर रामदास गणेश और उस के भाई मरियूर रामदास स्वामीनाथन का जीवन शाही था. लग्जरी कारों के अलावा उन के पास निजी हेलीकौप्टर भी था. एक साल में पैसा डबल करने का लालच दे कर उन्होंने लोगों से करीब 600 करोड़ रुपए ठगे. जैसे ही वे पुलिस के हत्थे चढ़े...

2 साल पहले की बात है. जून 2019 के पहले सप्ताह में एक दिन सुबह के समय कुंभकोणम शहर के आसमान में एक हेलीकौप्टर मंडरा रहा था. इस हेलीकौप्टर से काफी देर तक पूरे शहर पर गुलाब के फूलों की वर्षा की गई. हेलीकौप्टर ने पुष्पवर्षा के लिए कई बार उड़ान भरी.

फूलों की वर्षा देख कर शहर के लोगों को आश्चर्य हुआ, क्योंकि इस शहर में पहले कभी ऐसा नहीं हुआ था. उन दिनों न तो कोई बड़ा त्योहार था और न ही कोई नेता शहर में आ रहा था. इसलिए लोग इस बात पर चर्चा करने लगे.

पता चला कि उस दिन एम.आर. गणेश ( मरियूर रामदास गणेश ) के बेटे अर्जुन का जन्मदिन था. बेटे के जन्मदिन की खुशी में ही एम.आर. गणेश ने पूरे शहर पर हेलीकौप्टर से पुष्पवर्षा कराई थी. उस दिन गणेश ने अपने बेटे के जन्मदिन की खुशी में बड़े स्तर पर भोज का भी आयोजन किया था.

## दोनों भाइयों को हेलीकौप्टर ब्रदर्स के नाम से जानते थे लोग

गणेश के बेटे के जन्मदिन पर हुए भव्य आयोजन ने दोनों भाइयों को पूरे शहर में चर्चित कर दिया. उस दिन से लोग उन्हें 'हेलीकौप्टर ब्रदर्स' के नाम से पुकारने लगे.

दोनों भाई गणेश और रामदास जल्दी ही आसपास के इलाके में ही नहीं, राजधानी चेन्नई सहित पूरे तमिलनाडु में हेलीकौप्टर ब्रदर्स के नाम से मशहूर हो गए. इस के बाद से इन भाइयों का हेलीकौप्टर कई बार शहर में मंडराता और इधरउधर उड़ान भरता नजर आता था.

कारोबार अच्छा चलने से वे पैसा तो पहले ही खूब कमा रहे थे. नए नाम से ख्याति मिलने से उन का रुतबा भी बढ़ गया था. आलीशान जिंदगी जीते हुए लग्जरी गाड़ियों के काफिले और सुरक्षाकर्मियों के साथ तो वे पहले से ही चलते थे. बाद में राजनीति में भी आ गए.

भारतीय जनता पार्टी ने गणेश को ट्रेडर्स विंग में जिला अध्यक्ष बना दिया. भाजपा में शामिल होने से पूरे प्रदेश में उन की राजनीतिक ताकत भी बढ़ गई. दिग्गज भाजपा नेता उन के घर आनेजाने लगे.

कोई 2 साल पहले उन्होंने अपनी कंपनी

विक्ट्री फाइनेंस और दूसरी कंपनियों के जरिए एक साल में दोगुनी रकम करने का वादा कर लोगों से पैसा जमा करना शुरू कर दिया.

अच्छाखासा कारोबार करने और कई कंपनियां चलाने के कारण हेलीकौप्टर ब्रदर्स ने पहले से ही शहर की जनता पर अपना विश्वास बना लिया था. इसी विश्वास के भरोसे लोग उन की कंपनी में पैसा जमा कराने लगे.

सैकड़ों लोगों ने अपनी जमापूंजी उन की कंपनी में जमा करा दी. योजना की अवधि पूरी होने पर इन भाइयों ने लोगों को वादे के मुताबिक समय पर दोगुनी रकम वापस दे दी. इस से लोगों का विश्वास जमता गया. इस से उन की जमापूंजी भी बढ़ने लगी. पिछले साल तक सब कुछ ठीकठाक चला. जमाकर्ताओं को अपना पैसा वापस मिल गया.

हालांकि न तो सरकारी स्तर पर और न ही चिटफंड कंपनियों तथा साहूकारी स्तर पर एक साल में पैसा दोगुना करने की पहले कोई योजना थी और न अब है. लेकिन लालच में लोग हेलीकौप्टर ब्रदर्स की कंपनी में अपनी मेहनत की कमाई जमा कराते रहे. जिन लोगों ने पहले पैसा जमा कराया था, उन्होंने दोगुनी रकम वापस मिलने पर वही रकम फिर से एक साल के लिए जमा करा दी.

लोगों के लालच का दोनों भाइयों ने फायदा उठाया. उन्होंने पैसा जमा कराने के लिए कमीशन पर अपने एजेंट नियुक्त कर दिए. एक साल में उन की कंपनी की साख बन गई थी.

## लालच में फंस रहे थे लोग

इस का नतीजा यह हुआ कि रोजाना सैकड़ों लोग बिना आगेपीछे सोचे उन की कंपनी में पैसा जमा कराने लगे. बहुत से लोगों ने बैंकों या साहूकारों के पास जमा अपनी रकम निकाल कर हेलीकौप्टर ब्रदर्स की फाइनेंस कंपनी में जमा करा दी.

नौकरीपेशा लोगों ने भी एक साल में रकम दोगुनी होने के लालच में अपनी जमापूंजी का निवेश उन की कंपनी में कर दिया. दोनों भाइयों के झांसे में आ कर कई व्यापारियों और अमीर लोगों ने भी उन की कंपनी में करोड़ों रुपए की राशि जमा करा दी.

हेलीकौप्टर ब्रदर्स एम.आर. गणेश और एम.आर. स्वामीनाथन अपने औफिस में

इस साल जब अवधि पूरे होने पर जमाकर्ता अपने पैसे वापस मांगने लगे तो कंपनी की ओर से उन्हें कोरोना महामारी के कारण कामकाज ठप होने की बात कह कर कुछ दिन रुकने के लिए कहा गया.

अप्रैल के महीने में कोरोना का असर ज्यादा बढ़ने पर लोगों को पैसों की आवश्यकता हुई तो उन्हें फिर टाल दिया गया. जमाकर्ताओं को दोगुनी रकम तो दूर कुछ राशि या ब्याज का पैसा भी नहीं दिया गया.

छोटे जमाकर्ता रोजाना उन की कंपनियों के चक्कर लगा कर निराश लौट जाते थे. जिन लोगों के करोड़ों रुपए जमा थे, वे सब से ज्यादा परेशान थे. अवधि पूरी होने के बावजूद न तो उन का मूलधन वापस मिल रहा था और न ही कोई ब्याज दिया जा रहा था.

कुछ बड़े जमाकर्ताओं ने अपनी रकम वापस लेने के लिए हेलीकौप्टर ब्रदर्स गणेश और रामदास स्वामीनाथन से संपर्क किया तो उन्होंने कोरोना के कारण नुकसान होने की बात कह कर उन सभी को जल्द भुगतान करने का आश्वासन दिया.

## ले भागे 600 करोड़ रुपए

भुगतान में लगातार देर हो रही थी. जमाकर्ताओं को किसी न किसी बहाने से टाला जा रहा था. ज्यादा बातें करने पर जमाकर्ताओं को धमकाया भी गया.

इस से लोगों को कंपनी के मालिकों की नीयत पर शक होने लगा. उन्हें अपनी जमापूंजी की चिंता होने लगी. कुछ ही दिनों में पूरे शहर में यह बात फैलने लगी कि दोनों भाइयों का अब जमाकर्ताओं को पैसा वापस देने का मन नहीं है.

लोगों को असलियत का पता चलने पर दोनों भाई शहर से लापता हो गए. इस पर कुछ लोगों ने इसी साल के जुलाई महीने में शहर में जगहजगह हेलीकौप्टर ब्रदर्स के पोस्टर लगवा दिए. इन में आरोप लगाया था कि दोनों भाई लोगों के 600 करोड़ रुपए ले कर उड़ गए हैं.

इन पोस्टरों के माध्यम से लोगों ने दोनों भाइयों के खिलाफ कारवाई की मांग की. कहा जाता है कि ये पोस्टर दोनों भाइयों के एजेंटों ने लगवाए थे, क्योंकि इन भाइयों ने एजेंटों को भी उन का कमीशन नहीं दिया था.

पुलिस कोई कारवाई करने की सोच रही थी कि एक दंपति जफरुल्लाह और फैराज बानो ने तंजावुर जिले के एसपी देशमुख शेखर संजय के पास जुलाई के तीसरे सप्ताह में एक शिकायत दी.

इस शिकायत में दंपति ने कहा कि उन्होंने दोनों भाइयों की कंपनी में 15 करोड़ रुपए जमा कराए थे. योजना की अवधि पूरी होने के बाद भी उन्हें पैसे वापस नहीं दिए गए. दोनों भाइयों ने उन्हें अपने निजी सुरक्षाकर्मियों से पिटवाने की धमकी भी दी.

पुलिस ने दंपति की शिकायत पर भारतीय दंड संहिता की धारा 406, 420 और 120बी के तहत मुकदमा दर्ज कर लिया.

इन के अलावा एक निवेशक गोविंदराज ने पुलिस को बताया कि उस ने दोस्तों और परिवार से कर्ज ले कर हेलीकौप्टर ब्रदर्स की

हेलीकौप्टर ब्रदर्स की कंपनी में एकाउंटेंट का काम करने वाले भाईबहन श्रीराम और मीरा

कंपनी में 25 लाख रुपए जमा कराए थे, लेकिन ये रकम वापस नहीं दे रहे हैं.

एक और निवेशक ए.सी.एन. राजन ने 50 लाख रुपए जमा कराने की बात पुलिस को बताई. पुलिस के पास कई और शिकायतें भी दोनों भाइयों के खिलाफ आईं.

कुछ लोगों ने बताया कि उन्हें कुछ राशि का चैक दिया गया, लेकिन वह बाउंस हो गया. कोरकाई के रहने वाले पझानिवेल ने 10 लाख रुपए जमा कराए थे. बदले में उसे 20 लाख रुपए मिलने थे, लेकिन बारबार चक्कर काटने पर भी उसे पैसे नहीं मिले.

## भाजपा ने गणेश को पार्टी से निकाला

ज्यादा कहासुनी करने पर एक दिन 10 लाख रुपए का चैक दिया. वह चैक बाउंस हो गया. जब उस ने चैक बाउंस होने की बात इन भाइयों को बताई तो उन्होंने अपने राजनीतिक संपर्क होने की धमकी दी.

मुकदमा दर्ज होने पर पुलिस ने दोनों भाइयों गणेश और रामदास स्वामीनाथन की तलाश शुरू की, लेकिन उन के मकान और दफ्तर बंद मिले.

इस बीच, भाजपा ने गणेश को पार्टी के जिलाध्यक्ष पद से हटा दिया. इस संबंध में तंजावुर ( उत्तर ) के भाजपा नेता एन. सतीश कुमार ने 18 जुलाई को बयान जारी किया.

दोनों भाइयों के आवास, कार्यालय और दूसरे ठिकाने बंद मिलने पर पुलिस ने उन की तलाश के लिए कई टीमों का गठन किया. मोबाइल फोन की लोकेशन से उन का पता लगाने का प्रयास किया. पता नहीं चलने पर पुलिस की टीमों को विभिन्न स्थानों पर भेजा गया.

दोनों भाइयों के विभिन्न कारोबार के ब्यौरे जुटाए गए. साथ ही पुलिस ने इन भाइयों की कंपनियों में काम करने वाले लोगों का पता लगाना शुरू किया.

कुछ कर्मचारियों का पता चलने पर पुलिस ने उन से पूछताछ की, लेकिन दोनों भाइयों का सुराग नहीं मिला. कर्मचारी यह नहीं बता सके कि दोनों भाई कहां गए.

पूछताछ के बाद पुलिस ने 23 जुलाई को इन भाइयों की कंपनी के मैनेजर 56 साल के श्रीकांत को गिरफ्तार कर लिया.

जांचपड़ताल में पता चला कि दोनों भाइयों के विदेशों में भी कारोबारी संपर्क हैं. इस से उन के विदेश भाग जाने की आशंका हुई. इस आधार पर पुलिस ने उन के पासपोर्ट का पता लगा कर विदेश भागने से रोकने के लिए कारवाई शुरू कर दी.

पुलिस ने इन भाइयों के ठिकानों का पता लगाया. इन्होंने कई जगह अपने कार्यालय और ठहरने के ठिकाने बना रखे थे. एक बड़ा मकान तो केवल कारें रखने के लिए ही था. इन के पास दरजनों लग्जरी कारें थीं.

जांच के दौरान पुलिस ने इन के ठिकानों से 2 बीएमडब्ल्यू सहित 12 लग्जरी कारें जब्त कीं. एक कार्यालय से कंप्यूटर, हार्ड डिस्क और दस्तावेज जब्त किए.

दोनों भाइयों की तलाश के दौरान पुलिस ने एक दिन उन की कंपनी में अकाउंटेंट का काम करने वाले भाईबहन मीरा और श्रीराम को कुंभकोणम के बसस्टैंड से गिरफ्तार कर लिया. वे शहर छोड़ कर भाग रहे थे. इन के अलावा दोनों भाइयों की कंपनी के एक और मैनेजर वेंकटेशन को भी गिरफ्तार कर लिया गया.

इन से पूछताछ के आधार पर फरार एम.आर. गणेश की पत्नी अखिला को भी पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया.

## क्राइम ब्रांच के हत्थे चढ़े हेलीकौप्टर ब्रदर

लगातार कई दिनों की भागदौड़ के बाद तंजावुर जिले की क्राइम ब्रांच पुलिस ने 5 अगस्त, 2021 को दोनों भाइयों एम.आर. गणेश और एम.आर. स्वामीनाथन को पुडुककोट्टई जिले में वेंथनपट्टी गांव के एक फार्महाउस से गिरफ्तार कर लिया. यह फार्महाउस उन के दोस्त का था. इसे उन्होंने छिपने के लिए किराए पर लिया था.

कथा लिखे जाने तक दोनों भाइयों के अलावा गणेश की पत्नी और इन की कंपनी के 2 मैनेजर व 2 अकाउंटेंट गिरफ्तार किए जा चुके थे.

पुलिस इन से पूछताछ कर जमा की गई रकम का पूरा ब्यौरा हासिल करने के प्रयास में जुटी थी. इस के साथ ही इन के बैंक खाते भी सीज करने की कारवाई चल रही थी.

बहरहाल, अभी यह तो किसी को नहीं पता कि हेलीकौप्टर ब्रदर्स की कंपनी में निवेश करने वाले लोगों को उन का पैसा वापस मिल सकेगा या नहीं.

लेकिन इस में कोई दोराय नहीं कि लोगों ने एक साल में रकम दोगुनी होने के लालच में बिना कोई जांचपड़ताल किए एक निजी फाइनेंस कंपनी में अपनी जमापूंजी निवेश कर दी. यह लालच ही अब उन निवेशकों की रात की नींद और दिन का चैन छीने हुए है.

यह अकेले तमिलनाडु की बात नहीं है. पूरी दुनिया में ऐसा हो रहा है. चालाक लोग लोगों की लालच की मानसिकता का फायदा उठा कर ठगी कर रहे हैं.

भारत ही नहीं, पूरी दुनिया में एक साल में कोई भी सरकारी या निजी कंपनी पैसा दोगुना नहीं करती. ऐसा करने का दावा करने वाले केवल ठगी करते हैं. लोगों को ऐसे ठगों की यह मानसिकता पहचाननी चाहिए. ●

**नागपुर, महाराष्ट्र**

# साली का नशा

❑ अशोक शर्मा

आलोक की साली अमिषा और सास लक्ष्मीबाई

हंसीमजाक के रिश्ते में रंगीनमिजाजी जब नशा बन जाता है, तब इस में किसी भी तरह की रुकावट बरदाश्त नहीं होती. ऐसा ही नागपुर के एक कारोबारी के साथ हुआ, जिस ने अपनी साली के रिश्ते को न केवल नापाक कर दिया, बल्कि विरोध होने पर 5 लोगों को मौत के घाट भी उतार दिया...

भरी दोपहर का वक्त था. आलोक की दुकान में मटकतीलचकती अमिषा घुसते ही बोली, ''क्यों जीजाजी, अब लेडीज का भी सामान बेचने लगे?''

''आप के लिए ही तो लाए हैं,'' आलोक मुसकराते हुए बोला.

''मेरे लिए! क्या मतलब है आप का?'' अमिषा बोली.

''मतलब यह कि अब आप को अंडरगारमेंट्स के लिए दूसरी दुकान पर नहीं जाना पड़ेगा. ब्रांडेड आइटम लाया हूं. एकदम आप की फिटिंग के लायक.'' आलोक दुकान के एक कोने की ओर इशारा करते हुए बोला, जहां मौडलों की बड़ी फोटो लगी थी.

''जीजाजी, तब तो आप को सेल्सगर्ल रखनी पड़ेगी,'' अमिषा झट से बोल पड़ी.

''सेल्सगर्ल क्यों, ग्राहक को मैं नहीं दिखा सकता क्या?'' आलोक बोला.

''अच्छा चलो, मैं ट्रायल करती हूं. मेरे लिए दिखाइए.''

''तुम्हारा साइज तो मुझे पता है,'' आलोक चुटकी लेते हुआ बोला.

''धत्त! बड़े बेशर्म हो.'' यह कहती अमिषा शरमाती हुई जैसे मटकती आई थी, वैसी ही तेज कदमों से चली गई. आलोक देर तक उसे जाते देखता रहा.

यह बात 2 साल पहले की है. अधेड़ उम्र के आलोक माथुरकर नागपुर में गारमेंट की दुकान चलाता था. दुकान से मात्र 10 मीटर की दूरी पर ही बोबडे परिवार रहता था. बोबडे परिवार से उस का गहरा रिश्ता था, कारण वह उस की ससुराल थी.

परिवार में उस के 60 वर्षीय ससुर देवीदास बोबडे, 55 वर्षीया सास लक्ष्मी बाई और 22

आलोक की बेटी परी, पत्नी विजया और बेटा साहिल

छायांकन: मॉडलिंग

वर्षीया अविवाहित साली अमिषा बोबड़े रहते थे. ससुर देवीदास एक प्राइवेट लिमिटेड कंपनी में सुरक्षा गार्ड की नौकरी करते थे.

देवीदास की बड़ी बेटी विजया से आलोक ने प्रेम विवाह किया था. विजया भी विवाह से पहले अकसर आलोक की दुकान पर आती थी, वहीं वह आलोक से प्रेम करने लगी थी. अमिषा विजया से करीब 10 साल छोटी थी.

## मिट गईं दूरियां

आलोक के पिता उपेंद्र माथुरकर सालों पहले रोजीरोटी के लिए नागपुर शहर आ कर बस गए थे. उन्होंने पांचपावली इलाके में कपड़ों की सिलाई का काम शुरू किया था. आलोक उन का इकलौता बेटा था.

उस का पढ़ाई में मन नहीं लगा. इस कारण वह पिता के पुश्तैनी काम में लग गया था. कपड़े की सिलाई के अलावा कपड़े की अच्छी जानकारी थी, सो उस ने अच्छीखासी गारमेंट की दुकान खोल ली थी, जिस से परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी हो गई थी.

आलोक का अपना सुखीसंपन्न परिवार था. उस के 2 बच्चे थे, जिन में बेटी परी 14 साल की और बेटा साहिल 11 साल का था. विजया आलोक के साथ खुश रहते हुए दांपत्य जीवन का निर्वाह कर रही थी, लेकिन आलोक रंगीनमिजाज किस्म का आदमी था.

दूसरी लड़कियों पर नजरें रखना और फूहड़ मजाक करना उस की आदत में शामिल था. साली को देखते ही उस के मन में तरहतरह के रोमांटिक विचार उमड़ने लगते थे.

जब भी मौका लगता, दुकान से ससुराल चला जाता था, साली के साथ हंसीमजाक कर समय बिताया करता था. उस की सास न चाहते हुए भी चुप रहती थी.

मजाकमजाक में एक दिन आलोक ने साली को अकेला पा कर बांहों में भर लिया. अमिषा उस दिन किसी तरह से उस की बाहों से छूटी, लेकिन जल्द ही जीजा के आगे आत्मसमर्पण कर दिया. आलोक ने इस बारे में किसी को नहीं बताने की हिदायत दी.

अमिषा भी एक बार सैक्स का स्वाद लगने पर बेचैन रहने लगी. दूसरी तरफ आलोक उस के साथ अंतरंग संबंध बनाने के लिए मौके की तलाश में रहने लगा.

साली की सुंदरता और सैक्स का काकटेल उस के दिमाग में नशे की तरह छा गया था. और फिर उन्होंने अनैतिक संबंध को ही जीवन का एक हिस्सा बना लिया.

दोनों इस रिश्ते को ज्यादा दिनों तक छिपा कर नहीं रख पाए. पहले आलोक की पत्नी विजया ने जीजासाली को अंतरंग रिश्ते बनाते रंगेहाथों पकड़ा. उस ने अपने पति की जम कर झाड़ लगाई. बहन को भी समझाया. फिर भी दोनों अपनी मस्ती में डूबे रहे.

जल्द ही इस की भनक अमिषा की मां और पिता को भी लग गई. उन्होंने अमिषा को तो आड़े हाथों लिया ही, साथ में आलोक माथुरकर को भी नहीं छोड़ा. हालांकि बेटी की इस हरकत पर उन्हें गहरा धक्का लगा था.

उन्होंने अमिषा को प्यार से समझाया. अपनी रिश्तेदारी, समाज में बदनामी और उस की बहन के घर की बरबादी का वास्ता दिया. मांबाप के समझानेबुझाने का असर अमिषा पर सिर्फ इतना हुआ कि उस ने आलोक से दूरियां बना लीं. यह बात जनवरी, 2021 की थी.

सिर से पांव तक अमिषा के रंग में डूबे आलोक को उस की दूरियां बरदाश्त नहीं हो रही थीं. वह जितना ही अमिषा के पास जाने की कोशिश कर रहा था, वह उस से उतनी दूर होती जा रही थी.

कई बार मौका देख कर अपनी ससुराल भी गया, लेकिन सासससुर के मौजूद रहने के कारण अमिषा से बात तक नहीं कर पाया. वह जब भी ससुराल जाता, उसे नसीहत सुनने को मिलती.

बेटी और दामाद का रिश्ता न खराब हो, इस के लिए उन्होंने अमिषा के योग्य कोई अच्छा सा लड़का ढूंढ कर उस की शादी कर देने में ही भलाई समझी.

इस बात की जानकारी जब आलोक को लगी तो उस का खून खौल उठा. उस ने मन ही मन यह तय किया कि अगर अमिषा उस की नहीं तो वह उसे किसी और की भी नहीं होने देगा. इसी बात को ले कर वह अमिषा को फोन पर तरहतरह की धमकियां भी देने लगा था.

अप्रैल, 2021 के महीने में लौकडाउन के समय तो आलोक ने हद ही कर दी. एक दिन दोपहर को मौका देख कर वह अपनी ससुराल गया. जाते ही अमिषा के साथ जोरजबरदस्ती करने लगा. वह अपनी हरकत में कामयाब होता, इस के पहले वहां अमिषा के मांबाप आ गए.

साली, सास, पत्नी और दोनों बच्चों की हत्या के बाद आत्महत्या करने वाला आलोक माथुरकर

उन्होंने आलोक को न केवल डांटाफटकारा, बल्कि उस के खिलाफ स्थानीय थाने में शिकायत भी दर्ज करवा दी. पुलिस ने परिवारिक मामले को ध्यान में रखते हुए आलोक पर फौरी तौर पर काररवाई की. उस से माफीनामा लिखवाया और चेतावनी दे कर छोड़ दिया.

## बदले की आग

बात आईगई हो गई, किंतु आलोक अमिषा के साथ वासना पूर्ति की आग में तपता रहा. वह मौके की ताक में रहते हुए बदले की भावना से भी भर चुका था.

पुलिस के हस्तक्षेप के बाद अमिषा के घर वालों को थोड़ी राहत जरूर मिली थी, जबकि आलोक ने पुलिस की काररवाई और माफीनामे को प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया था. अब उसे अपनी ससुराल और अमिषा से नफरत हो गई थी. उन्हें सबक सिखाने के लिए उस ने एक खतरनाक योजना बना ली थी.

उस ने मई महीने में औनलाइन कुछ घरेलू सामान मंगाया. उस में उस ने एक लंबा मटन काटने का चाकू भी मंगवा लिया.

23 जून की रात 10 बजे के करीब आलोक अपनी ससुराल जा पहुंचा. घर पर अमिषा अकेली थी. पिता देवीदास अपनी ड्यूटी पर चले गए थे. मां लक्ष्मीबाई पड़ोस के बच्चे के नामकरण कार्यक्रम में गई हुई थी.

अमिषा अपने कमरे में बैठी अपनी दोस्त के साथ मोबाइल पर चैट कर रही थी. अचानक अपने कमरे में आलोक को देख वह चौंक गई. हड़बड़ाते हुए पूछा, ''जीजाजी आप?''

उस ने मोबाइल को वैसे ही छोड़ दिया. जिस में उन के बीच की बातें रिकौर्ड होने लगीं.

''हां मैं, तुम किस से बातें कर रही थीं?'' आलोक ने कहा.

''आप से मतलब, मैं अपने मन की मालकिन हूं, जिस से चाहूंगी बात करूंगी.'' अमिषा ने कड़क शब्दों में कहा.

आलोक जलभुन गया. वह बोला, ''तुम ने मेरी शिकायत पुलिस में क्यों की थी?''

अप्रैल, 2021 के महीने में लौकडाउन के समय तो आलोक ने हद ही कर दी. एक दिन दोपहर को मौका देख कर वह अपनी ससुराल गया. जाते ही अमिषा के साथ जोरजबरदस्ती करने लगा. वह अपनी हरकत में कामयाब होता, इस के पहले वहां अमिषा के मांबाप आ गए.

''आप की हरकत से घर वाले सब परेशान हो गए थे. बेशर्मी की हद होती है. सब के सामने मुझे जलील कर दिया.'' अमिषा ने सख्ती से कहा.

इस बात पर आलोक का गुस्सा फूट पड़ा था. उस ने कहा, ''अब मैं तुम्हें इस लायक ही नहीं छोड़ूंगा कि तुम पुलिस थाने जा सको.''

यह कहते हुए आलोक ने अमिषा को पकड़ लिया था. अमिषा खुद को आलोक से छुड़ाने की कोशिश करने लगी. काफी कोशिशें कीं मगर सफल नहीं हुई. सैक्स का उन्माद उतर जाने के बाद ही अमिषा उस के चंगुल से आजाद हो पाई.

आलोक द्वारा हाथ से मुंह बंद किए जाने के कारण शोर नहीं मचा पाई. घर से बाहर जाने की कोशिश करने लगी. मगर आलोक ने उसे इस का मौका नहीं दिया. छिपा कर लाए चाकू से एक झटके में अमिषा का गला रेत दिया. वह जमीन पर गिर पड़ी.

खून से लथपथ अमिषा तड़पती रही और आलोक बुत बना उसे देख रहा. इस के पहले कि अमिषा के प्राणपखेरू उड़ते, कमरे में अमिषा की मां लक्ष्मीबाई आ गई. बेटी अमिषा की हालत देख कर चीखते हुए बोली, ''आलोक, यह तुम ने क्या किया?''

आलोक ने लक्ष्मीबाई के गले पर चाकू फिराते हुए कहा, ''चिल्लाओ मत, पड़ोसी आ जाएंगे.''

और फिर उस ने लक्ष्मीबाई का गला भी एक झटके में रेत डाला. आधे घंटे तक वहीं रहने के बाद वह अपने घर आ गया था.

बताते हैं कि अपनी ससुराल से वापस घर आने के बाद भी आलोक का क्रोध शांत नहीं हुआ. उसी क्रोध में उस ने पहले अपनी पत्नी की हत्या कर दी. फिर मासूम बेटे साहिल और बाद में बेटी परी को भी मौत की नींद सुला दिया.

अपने पूरे परिवार की हत्या के बाद आलोक का मन शांत हुआ, लेकिन वह विक्षिप्तावस्था में आ चुका था. उस ने कमरे के पंखे से लटक कर अपनी जीवनलीला भी समाप्त कर ली. इस तरह से एक घंटे के भीतर 6 हत्या-आत्महत्या की वारदात की जानकारी अगले रोज हुई.

जून महीने की 24 तारीख को दिन के करीब 11 बज चुके थे, नागपुर में में पाचपावली के रहने वाले आलोक माथुरकर का दरवाजा नहीं खुला था. उन के पड़ोस में रहने वाले भोसले परिवार को हैरानी हुई.

रोज सुबह 8 बजे फ्रैश हो कर अपने काम में लग जाने वाले का घर बंद होने पर भोसले परिवार के लोगों ने मकान की कालबेल दबाई. दरवाजा खटखटाया, आवाज दी.

कई बार ऐसा करने के बाद भी जब दरवाजा नहीं खुला और न मकान के भीतर से कोई आवाज आई, तब वह किसी अनहोनी की आशंका से घबरा गए.

मकान के पीछे लगी खिड़की के पास गए. हलके से धक्के के साथ खिड़की खुल गई. भीतर का मंजर देख कर भोसले परिवार के होश उड़ गए. उन की आंखों के सामने आलोक का सब से छोटा बेटा खून से लथपथ जमीन पर पड़ा था.

थानाप्रभारी जयेश भंडारकर

उन्होंने मामले की खबर पहले मकान मालिक प्रमोद भिभिकर और फिर थानाप्रभारी जयेश भंडारकर को दी.

## कई हत्याओं से सहमा शहर

थाने की ड्यूटी पर तैनात एसआई राज राठौर को मामले की डायरी बनाने का आदेश मिला. जबकि इस की सूचना वरिष्ठ अधिकारियों को देने के बाद एएसआई संदीप बागुल, एसआई राज राठौर, हैडकांस्टेबल रवि पाटिल कुछ समय में ही घटनास्थल पर पहुंच गए. इस बीच यह खबर आग की तरह पूरे इलाके में फैल गई थी.

पुलिस टीम ने दरवाजा तोड़ कर मकान में प्रवेश किया. अंदर 3 लाशें जमीन पर खून से सनी हुई थीं, जबकि एक पंखे से झूल रही थी. पंखे से झूलती लाश की पहचान आलोक माथुरकर के रूप में हुई और बाकी लाशें उस की पत्नी विजया और उस के बच्चों परी एवं साहिल की थीं.

थानाप्रभारी जयेश भंडारकर अपने सहायकों के साथ अभी घटनास्थल का निरीक्षण कर ही रहे थे कि तभी पुलिस कमिश्नर अमितेश कुमार, एडिशनल पुलिस कमिश्नर सुनील फुलारी के साथ फोटोग्राफर और फिंगरप्रिंट एक्सपर्ट भी मौकाएवारदात पर पहुंच गए.

उसी समय उन्हें पास में ही एक दूसरे हत्याकांड की सूचना मिली. थानाप्रभारी ने पुलिस की दूसरी टीम को दूसरे घटनास्थल पर भेज दिया.

दोनों घटनास्थल महज 10 मीटर की दूरी पर ही थे. दूसरा स्थान आलोक की ससुराल था, जहां उस की सास लक्ष्मीबाई और साली अमिषा मृत पड़ी थीं. दोनों घटनाओं में सभी की गरदन भी चाकू से रेती गई थी.

परिवार के मुखिया देवीदास ने पुलिस को बताया कि सभी हत्याओं के पीछे उस के दामाद आलोक का ही हाथ है.

दोनों घटनास्थल की तमाम औपचारिकताएं पूरी करने के बाद लाशों का पंचनामा कर पोस्टमार्टम के लिए नागपुर मैडिकल कालेज भेज दिया गया. उस के एकमात्र गवाह के तौर पर देवीदास से थाने में पूछताछ की गई.

मौके पर बरामद मोबाइल की रिकौर्डिंग से आलोक और अमिषा के बीच संबंधों का खुलासा हो गया. फिंगरप्रिंट से भी आलोक द्वारा हत्याओं को अंजाम दिए जाने की पुष्टि हो गई.

एक ही दिन में 6 लोगों की हत्या और आत्महत्या के मामले की गुत्थी को कुछ घंटों में ही सुलझा लिया गया और जांच एडिशनल पुलिस कमिश्नर सुशील फुलारी को सौंप दी गई. 2 परिवारों में अगर कोई बचा था तो वह थे आलोक के ससुर देवीदास. उन की किस्मत थी जो उस रात अपनी ड्यूटी पर थे. किंतु वे उस किस्मत का क्या करते, जब उन्हें कोई अपना कहने वाला ही नहीं रहा. ●

छायांकन: मॉडलिंग

पुलिया नंबर 162 से बरामद बबीता की लाश

# नैनीताल की घाटी में रोमांस के बहाने मिली मौत

❑ शाहनवाज

नैनीताल, उत्तराखंड

राजधानी दिल्ली के गोविंदपुरी में किराए पर रहने रहने वाले राजेश और बबीता के बीच लगभग हर दिन की तरह उस रोज भी झगड़ा शुरू हो गया था. उन की रोजरोज की तूतूमैंमैं के झगड़े से मकान में रहने वाले दूसरे किराएदार तंग आ चुके थे. समय सुबह के साढ़े 7 बजे का था. तारीख थी 7 जून. लौकडाउन का दौर चल रहा था, किंतु अनलौक की कुछ छूट भी मिली हुई थी.

लोगों का अपनेअपने कामधंधे पर आनेजाने का सिलसिला शुरू हो चुका था. जबकि कमरे में राजेश अपने बिस्तर पर औंधे मुंह लेट कर फोन पर फेसबुक चला रहा था. शायद वह कोई वीडियो देखने में मग्न था.

यह उस के रोज के रूटीन में शामिल हो चुका था. वह कभी वाट्सऐप मैसेज कर रहा होता या फिर यूट्यूब का वीडियो देख रहा होता था. इसी को ले कर उस की पत्नी बबीता चिढ़ती रहती थी.

उस रोज भी बबीता यह देख कर भड़क गई थी. तीखे शब्दों में गुस्से से चीखती हुई बोली, ''कुछ कामधंधा भी करना है या सारा दिन बिस्तर पर पड़ेपड़े दांत निपोरते रहते हो? जब देखो तब फोन पर लगे रहते हो. कम से कम मेरे काम में तो हाथ बंटा दो.''

बिस्तर पर पड़ेपड़े राजेश बोला, ''कर लूंगा न काम, चिल्ला क्यों रही है. कौन सा भूखा रखा हुआ है मैं ने.''

राजेश की इस बात से खीझते हुए बबीता ने कहा, ''हांहां, क्यों नहीं. याद है कि नहीं? लौकडाउन में मेरी मां नहीं होती तो भूखे मर जाते. तुम से शादी कर मैं ने सच में अपनी जिंदगी बरबाद कर ली है.''

''तो नहीं करती शादी मुझ से. किसी ने जबरदस्ती थोड़े न की थी.'' राजेश ने बबीता की बातों का जवाब देते हुए कहा.

यह सुन कर बबीता का गुस्सा सातवें आसमान पर जा पहुंचा. उस

बबीता (फाइल फोटो)

घरवालों की रजामंदी के बाद राजेश और बबीता का प्यार भले ही शादी में बदल गया था, लेकिन गुस्सा दोनों की ही नाक पर रहता था, जिस से छोटी सी बात ही बहस का मुद्दा बन जाती थी. एक दिन राजेश बबीता को नैनीताल घुमाने ले गया फिर वहां जो हुआ वह...

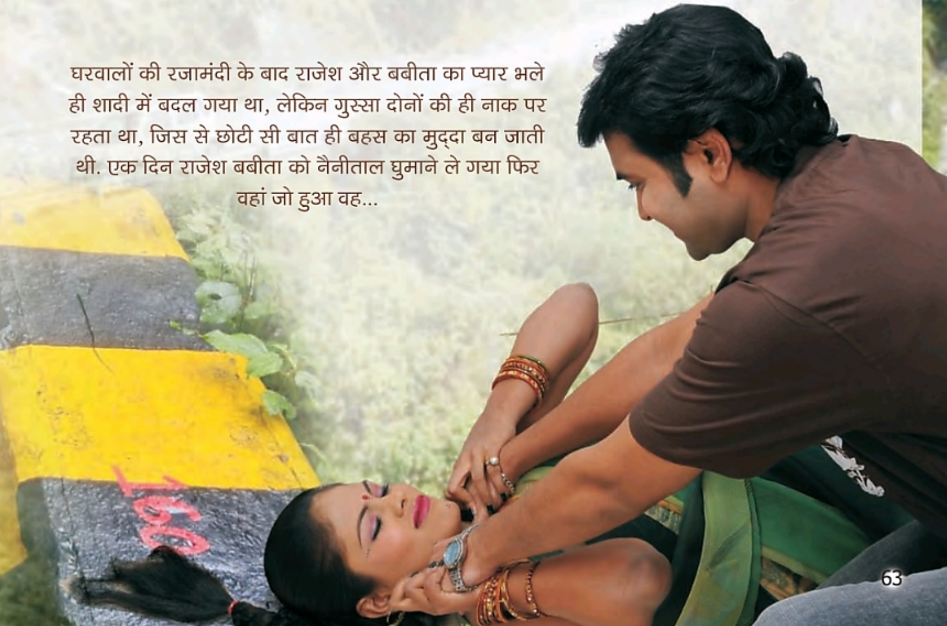

ने गुस्से में कहा, ''जबरदस्ती ? याद दिलाऊं क्या ? जबरदस्ती किस ने की थी ? अगर तुम से शादी नहीं की होती तो जेल में सड़ रहे होते.''

बबीता की इस बात से राजेश का दिमाग झनझना गया. वह तुरंत बिस्तर पर उठ बैठा. गुस्से में एक ओर मोबाइल पटकता हुआ खड़ा हो गया.

एक पल के लिए अतीत आंखों के आगे घूम गया. अचानक गुस्से में उस ने बबीता का मुंह दबा दिया. नाराजगी जताते हुए बोला, ''तुझे कितनी बार मना किया है. आइंदा अपना मुंह खोलने से पहले सोच लिया करो. याद रखना पहले क्या किया था और मैं अब क्या कर सकता हूं.''

बबीता भी राजेश की इस धमकी से कहां चुप रह जाने वाली थी. राजेश के हाथ से मुंह छुड़ा कर कड़ाई के साथ जवाब देते हुए बोली, ''तुम्हारी इस धमकी से डरने वाली नहीं हूं मैं, बड़े आए धमकी देने वाले. अगर आगे से ऐसी धमकियां दीं तो तुम याद रखना कि मैं क्या कर सकती हूं.''

कहते हुए बबीता ने बाथरूम में जा कर फटाफट अपने कपड़े बदले. बैड के पास रखा अपना हैंडबैग उठाया. गुस्से में कपड़े के एक थैले में अपने 3-4 जोड़ी कपड़े भरे. पैरों में सैंडल डाली और बिना राजेश को बताए घर से निकल गई.

राजेश सामने खड़ाखड़ा देखता रह गया. उस ने बबीता से यह पूछने की हिम्मत भी नहीं की कि वह कहां जा रही है. राजेश को पता था कि बबीता अपने मायके जा रही है. वह अकसर ऐसा ही करती थी.

दोनों की शादी के बाद जब कभी उन के बीच झगड़ा होता और बबीता रूठ कर या झगड़ कर अपनी मां के पास चली जाती थी. 4-5 दिनों बाद खुद ही वापस आ भी जाती थी.

दरअसल, 25 वर्षीय राजेश रोय और 29 वर्षीय बबीता दोनों एकदूसरे को साल 2020 की शुरुआत से ही जानते थे. उस समय भारत में कोरोना की वजह से लौकडाउन नहीं लगा था. राजेश तब दिल्ली में जनकपुरी के नजदीक सिटी माल में सेल्समैन का काम करता था.

नए साल के मौके पर जब बबीता अपने दोस्तों के साथ शौपिंग करने के लिए सिटी माल गई थी तो उस की जानपहचान वहां काम कर रहे राजेश से हुई थी.

राजेश के हावभाव और बातचीत करने के अंदाज पर बबीता फिदा हो गई थी. जबकि वह उस से उम्र में बड़ी थी. न जाने उसे क्या सूझी कि वह बारबार माल जाने लगी. राजेश ने भी महसूस किया कि बबीता उस से ही मिलने आती है.

जल्द ही दोनों की जानपहचान दोस्ती में बदल गई. 2 महीने के दौरान उन के बीच नजदीकियां काफी बढ़ गईं. यौवनावस्था की उम्र में एक समय ऐसा भी आया, जब उन के प्रेम पर वासना हावी हो गई. दोनों खुद को रोक नहीं पाए और उन के बीच शारीरिक संबंध बन गए.

उत्तराखंड के तल्लीताल में बबीता की लाश बरामद करने के लिए राजेश को ले गई पुलिस टीम

मांबाप की लाडली बेटी होने कारण बबीता कुछ अधिक ही आजाद खयाल की हो गई थी. मातापिता ने शादीब्याह के मामले में उस पर अपनी मरजी नहीं थोपी थी. वह केवल इतना चाहते थे कि बबीता की शादी जानपहचान में ही हो तो अच्छा है. बबीता भी यही चाहती थी.

मार्च, 2020 के अंतिम सप्ताह में कोरोना प्रकोप के चलते लौकडाउन लग गया था. 2 प्रेमी अपनेअपने घरों में कैद हो चुके थे. मिलने के लिए उन की बचैनी और बेकरारी बढ़ती जा रही थी. वे फोन पर बातें कर अपने दिल को तसल्ली दे दिया करते थे. इसी बीच बबीता ने पेट से होने की बात राजेश को बताई.

राजेश यह सुनते ही नाराज हो गया. उस ने बच्चे को अपनाने से साफ इनकार कर दिया. इस से बबीता के मन को काफी ठेस पहुंची. राजेश ने लौकडाउन के दौरान बबीता से बच्चा गिराने की भी बात कही, लेकिन वह इस के लिए हिम्मत नहीं जुटा सकी.

जून 2020 में लौकडाउन में कुछ राहत मिलने पर एक दिन राजेश बबीता को घुमाने के बहाने गुड़गांव के एक प्राइवेट अस्पताल में ले गया. वहां उस ने गर्भपात की दवा दिलवाई. बबीता इस के तैयार तो नहीं थी, लेकिन उस ने राजेश की जिद को मान लिया और दवा खा ली. कुछ ही दिनों में बबीता का गर्भपात हो गया.

उस के बाद राजेश ने बबीता से बातचीत करना कम कर दिया. वह बबीता से अपने रिश्ते खत्म करना चाहता था. राजेश बबीता के फोन काल इग्नोर करने लगा था. उस के मैसेज का भी कोई जवाब नहीं देता था.

बबीता भी समझने लगी थी कि राजेश उस से पीछा छुड़ाना चाहता है. बबीता को यह बात अच्छी नहीं लगी. वह खुद को धोखा खाया हुआ महसूस कर रही थी.

एक दिन जब बबीता की राजेश से बात हुई तो उस ने सीधे शब्दों में पूछ ही लिया,

बबीता का पति राजेश

''राजेश, हमारे बीच में जो कुछ हुआ और मुझे जो सहना पड़ा है, उस की जिम्मेदारी तुम्हारी भी है. तुम आखिर चाहते क्या हो, सीधेसीधे जवाब दो.''

बबीता का सवाल सुन कर राजेश ने कोई स्पष्ट जवाब नहीं दिया. घुमाफिरा कर बोला, ''देखो बबीता, हमारे बीच जो कुछ हुआ, उसे हमेशा के लिए भूल जाओ. नए सिरे से अपनी जिंदगी शुरू करो. मुझ से भी कोई उम्मीद मत रखना.''

यह कहते हुए राजेश ने फोन काट दिया. राजेश की बात सुन कर बबीता को धक्का लगा. उसे विश्वास ही नहीं हुआ कि जिस इंसान के साथ उस ने गहरे संबंध बनाए, वही अब उसे भूल जाने की बात कह रहा है.

धोखा खाई बबीता ने गुस्से में 14 जुलाई, 2020 को दिल्ली के डाबड़ी मोड़ थाने में राजेश के खिलाफ बलात्कार की रिपोर्ट दर्ज करवा दी. जिसे संज्ञान में लेते हुए पुलिस ने भादंवि की धारा 376 के तहत राजेश को गिरफ्तार कर 8 अगस्त, 2021 को जेल भेज दिया.

राजेश के जेल जाने पर उस के घर वाले परेशान हो गए. उन्होंने बबीता के घर वालों से राजेश को छुड़ाने के लिए काफी मिन्नतें कीं. केस वापस लेने का आग्रह किया, लेकिन बबीता और उस के घर वालों ने इस मामले में किसी भी तरह की बात करने से इनकार कर दिया.

कुछदिनों बाद राजेश के घर वालों ने बबीता के मांबाप से उस की शादी राजेश से करने की गुजारिश की. इस पर वे तैयार हो गए.

कुछ शर्तों के आधार पर बबीता ने 19 अक्तूबर, 2020 को राजेश के खिलाफ अपनी शिकायत वापस ले ली. शादी का एक एफिडेविट भी जमा करवा दिया. इस तरह से कोर्टमैरिज की प्रक्रिया पूरी होने के बाद दिसंबर, 2020 में राजेश और बबीता की शादी डाबड़ी मोड़ के नजदीक आर्यसमाज मंदिर में हो गई, उस के बाद दोनों दिल्ली के गोविंदपुरी इलाके में रहने लगे.

कहते हैं न प्रेम की डोर अगर एक बार टूट जाए तो उसे जोड़ना मुश्किल होता है. यदि उसे जोड़ लिया जाए, तब भी उस में बनने वाली गांठ संबंध की मधुरता में हमेशा खलल डालती रहती है. यही कारण था कि राजेश और बबीता शादी के बाद भी मधुर संबंध नहीं बना पाए.

उन के बीच मोहब्बत की मिसाल जैसा प्रेम पनप ही नहीं पाया. छोटीछोटी खुशियां नोकझोंक में दफन होने लगीं. कारण दोनों के बीच अकसर झगड़े होते रहते थे.

बातबात पर झगड़े से नाराज हो कर बबीता अपने मायके चली जाया करती. राजेश का काम तो लौकडाउन में छूट ही चुका था, लेकिन अब उसे कहीं और काम मिल भी नहीं रहा था.

ऐसे में किराए पर रहना अब राजेश के लिए भारी पड़ने लगा था. ऊपर से घरेलू खर्चे अलग थे. राजेश की बचीखुची बचत भी अब खत्म होने वाली थी. इस बारे में जब बबीता ने अपनी मां लक्ष्मी देवी को राजेश की इस हालत के बारे में बताया तब उन्होंने राजेश को अपने इलाके में ही किराए पर एक कमरा दिलवा दिया. उस का किराया पहले से कम था. इस राहत के बावजूद राजेश तंगी से जूझ रहा था.

लक्ष्मी देवी ने कुछ समय तक अपनी बेटी की आर्थिक मदद की. वह डाबरी मोड़ के पास महिंद्रा पार्क में रहती थी. बबीता वहीं अपनी मां के घर चली जाती थी. राजेश इस बात से और ज्यादा परेशान होने लगा था कि बबीता बातबात पर झगड़ा कर के अपनी मां के घर चली जाती है.

## सास को समझता था झगड़े की जड़

लक्ष्मी देवी ने कुछ समय तक अपनी बेटी की आर्थिक मदद की. वह डाबरी मोड़ के पास महिंद्रा पार्क में रहती थी. बबीता वहीं अपनी मां के घर चली जाती थी. राजेश इस बात से और ज्यादा परेशान होने लगा था कि बबीता बातबात पर झगड़ा कर के अपनी मां के घर चली जाती है.

राजेश इस झगड़े की असली जड़ लक्ष्मी देवी को मानता था. झगड़ा होने पर उसे सबक सिखाने को ले कर धमकाता रहता था. कई बार कह भी चुका था कि वह जेल से बाहर अपने अपमान का बदला लेने के लिए आया है. इस बारे में बबीता अपनी मां को भी बताती थी.

बबीता के पिता डालीराम का निधन हो चुका था. बबीता ही लक्ष्मी देवी के जीने की सहारा थी और उस का पूरा ध्यान रखती थी.

राजेश कुछ समय तक महिंद्रा पार्क में रहा, लेकिन 3-4 महीने बाद दोनों फिर से गोविंदपूरी शिफ्ट हो गए. 7 जून, 2021 को भी झगड़े के बाद बबीता अपने मायके चली गई.

बारबार की इस समस्या से राजेश काफी परेशान हो गया था. 3-4 दिन तक बबीता की हरकतों से छुटकारा पाने के बारे में सोचता रहा. उस ने 11 जून की सुबह 10 बजे बबीता को फोन कर कहा, ''बबीता, गांव में मेरी मां की तबीयत बहुत खराब है. गांव चलना है.''

बबीता ने इस की जानकारी अपनी मां को दी. लक्ष्मी देवी भी उन के बीच झगड़ों से काफी परेशान हो गई थी. वह भी सोच में पड़ गई कि क्या करे, क्या नहीं? वह समझ नहीं पर रही थी कि आखिर उन के बीच झगड़ा कैसे खत्म हो पाएगा? सिर पर हाथ रख कर बैठ गई.

थोड़ी देर बाद लक्ष्मी देवी ने बबीता के हाथ से फोन ले कर राजेश को मिलाया. बोली,

''सुनो राजेश, तुम्हारे कारण मेरी बेटी बारबार मायके आ जाती है. तुझे जरा भी शर्म है या नहीं. मेरी बेटी को ले जाना है तो थाने आ. यहां आ कर ले जा.''

राजेश गुस्से का घूंट पी कर रह गया. चुपचाप गोविंदपुरी से डाबड़ी मोड़ थाने पहुंचा. थाने में उस ने बताया कि बबीता उस की पत्नी है. वह उस अपने साथ गांव ले जाना चाहता है, जहां उस की मां बीमार है.

## बेटी से नहीं हुई बात

बबीता ने राजेश द्वारा धमकियां देने की शिकायत भी की, लेकिन पुलिस ने राजेश का पक्ष मजबूत पाया और उसे बबीता को साथ ले जाने को कह दिया.

वहीं से राजेश बबीता को ले कर आटो से दिल्ली के आनंद विहार बसअड्डा चला गया. राजेश का गांव उत्तराखंड के जिला ऊधमसिंह नगर के छोटे से कस्बे तिलियापुर में था.

अगले दिन 12 जून को दोपहर करीब 2 बजे लक्ष्मी देवी ने बबीता को हालचाल जानने के लिए फोन किया. लेकिन बबीता का फोन बंद था. उन्होंने सोचा कि शायद रास्ते में होंगे और फोन की बैटरी खत्म हो गई होगी.

उस दिन तो जैसेतैसे लक्ष्मी देवी ने अपना मन मना लिया. उस के अगले दिन भी जब बबीता का फोन बंद पाया तब उसे अपनी बेटी को ले कर तरहतरह की शंकाए होने लगीं. इसी तरह से 14 और 15 जून को भी जब बबीता का फोन बंद मिला, तब लक्ष्मी देवी की बेचैनी और बढ़ गई.

16 जून, 2021 को लक्ष्मी देवी ने डाबड़ी मोड़ थाने के थानाप्रभारी सुरेंद्र संधू को बबीता के लापता होने जानकारी दी और रिपोर्ट दर्ज करने का आग्रह किया. रिपोर्ट दर्ज होने के बाद पुलिस ने राजेश को फोन मिलाया और बबीता के बारे पूछा.

राजेश ने बबीता के साथ होने से इनकार कर दिया. राजेश ने पुलिस को बताया कि उसे नहीं पता बबीता कहां है. 11 जून को थाने से निकलने के बाद बबीता अपनी मां के साथ ही घर चली गई थी. यह सुन कर लक्ष्मी देवी दंग रह गई. पुलिस 2 तरह के बयान से हैरत में पड़ गई. एक तरफ बबीता की मां लक्ष्मी देवी का अपने दामाद राजेश पर आरोप था कि बबीता 11 जून को उसी के साथ उत्तराखंड के लिए निकली थी. दूसरी तरफ राजेश अपनी सास लक्ष्मी देवी पर आरोप लगा रहा था कि बबीता अपनी मां के साथ महिंद्रा पार्क अपने घर गई थी. दोनों में से कौन सही है, इस का पता लगाने के लिए पुलिस ने एक टीम बनाई.

बबीता की चिंता में मां लक्ष्मी देवी की रातों की नींद हराम होने लगी. उन्होंने एक वकील की मदद से जिला कोर्ट द्वारका में राजेश के खिलाफ सीआरपीसी धारा 97 का इस्तेमाल करते हुए अपनी बेटी को अपहरण कर बंदी बना लेने की अपील दर्ज कर दी.

थानाप्रभारी
सुरेंद्र संधू

मामले की गंभीरता को देखते हुए द्वारका कोर्ट ने पुलिस को जांच जल्द से जल्द निपटाने के आदेश दिए. कोर्ट के आदेश का पालन करते हुए डीसीपी संतोष कुमार मीणा ने डाबड़ी मोड़ के थानाप्रभारी सुरेंद्र संधू को इस केस में तुरंत कारवाई करने के निर्देश दिए.

थानाप्रभारी ने 8 जुलाई, 2021 को एसआई नरेंदर सिंह के हाथों इस केस की जिम्मेदारी सौंपी. नरेंदर सिंह ने काल डिटेल्स और टैक्निकल टीम की मदद से 11 जून से राजेश और बबीता के फोन की आखिरी लोकेशन का पता लगाया.

उन्हें पता लगा कि राजेश के फोन की आखिरी लोकेशन 11 जून को दिल्ली में थी. अगले दिन उस की लोकेशन उत्तराखंड के ऊधमसिंह नगर में मिली. जबकि बबीता के फोन की लोकेशन लगातार बदल रही थी. जो पहले दिल्ली, फिर पूर्वी उत्तर प्रदेश और अंत में उत्तराखंड के नैनीताल की मिली.

इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए राजेश को पूछताछ के लिए हिरासत में लिया गया. उस ने पूछताछ के दौरान पहले तो एसआई नरेंदर सिंह और पुलिस टीम को गुमराह करने की कोशिश की.

उस ने बताया कि 11 जून को बबीता अपनी मां के साथ महिंद्रा पार्क अपने घर चली गई थी. किंतु जब उसे यह बताया गया कि बबीता के फोन की अंतिम लोकेशन नैनीताल में थी, तब यह सुन कर वह हकला और सकपका गया.

फिर क्या था, उस से सख्ती से पूछताछ की जाने लगी. गहन पूछताछ के सवालों के सामने राजेश टिक नहीं पाया. उस ने स्वीकार कर लिया कि उस ने नैनीताल ले जा कर बबीता की हत्या कर दी है और उस की लाश खाई में फेंक दी थी. उस ने सिलसिलेवार ढंग से हत्याकांड से ले कर लाश को ठिकाने लगाने की बात इस प्रकार बताई—

एसआई
नरेंदर सिंह

11 जून की शाम के करीब 6 बजे जब बसअड्डे से बस उत्तराखंड के लिए रवाना हो रही थी, तब उस ने प्लान के मुताबिक अपना फोन बंद कर लिया था. बस दिल्ली से निकल कर उत्तर प्रदेश से होते हुए अगले दिन 12 जून की सुबह करीब 9 बजे उत्तराखंड के नैनीताल पहुंचा.

राजेश और बबीता दोनों नैनीताल बसअड्डे पर उतरे. वहां थोड़ा आराम किया और पैदल ही आगे की ओर निकल गए.

नैनीताल से करीब 12 किलोमीटर पैदल चलने के बाद रास्ते में पड़ने वाले हनुमान मंदिर पर दोनों ने चाय पी, थोड़ा आराम किया और फिर आगे की ओर निकल पड़े.

नैनीताल हल्द्वानी रोड पर स्थित हनुमान

मंदिर पर आराम करने के बाद करीब 40-50 मीटर उसी रास्ते पर आगे चलते रहे. फिर राजेश बल्दियाखान गांव के पास रिया गांव की तरफ जाने वाली सड़क पर सुस्ताने के बहाने से रुका. वह जगह काफी सुनसान थी. उस के साथ बबीता भी रुक गई.

दोनों रास्ते के किनारे बनी पुलिया नंबर 162 पर 10-15 मिनट तक बैठे रहे. उस पुलिया के नीचे 7-8 फीट गहरा एक गड्ढा था. वह जगह दूर से नहीं दिखती थी.

बातोंबातों में राजेश उस गहरे गड्ढे में उतर गया. उस ने बबीता का हाथ पकड़ कर उसे नीचे आने का इशारा किया. जब बबीता ने पूछा कि यहां क्यों, तब उस ने नए अंदाज में प्यार का इजहार करने की बात कही. बबीता राजेश की बातों में आ गई और वह गड्ढे में उतर आई.

जैसे ही बबीता गड्ढे में उतरी, राजेश ने पहले उसे गले लगाया. एक पल के लिए बबीता शांत हो गई. राजेश ने वक्त बरबाद न करते हुए अचानक से बबीता का गला दबोच लिया.

बबीता ने गला छुड़ाने की कोशिश की लेकिन राजेश की पकड़ मजबूत थी. कुछ ही पलों में बबीता की सांसें उखड़ने लगीं. कुछ मिनटों में जब बबीता का शरीर पूरी तरह से शांत हो गया तो निर्जीव हो चुके शरीर को राजेश ने वहीं छोड़ दिया.

उस के बाद राजेश गड्ढे से बाहर आ कर अपने गांव जाने वाले रास्ते की ओर बढ़ गया. थोड़ा चलने के बाद पीछे से आ रही गाड़ी पर सवार हो गया. अपने गांव पहुंचने से पहले आनंदनगर के पास शक्ति फार्म के धान के खेतों में बबीता का फोन फेंक दिया. 12 जून की दोपहर करीब 2 बजे के आसपास वह अपने गांव पहुंच गया.

राजेश के यह सब कबूलने के बाद बबीता की लाश तलाशने के लिए दिल्ली पुलिस की टीम ने 2 दिनों का सर्च औपरेशन चलाया. लाश ढूंढने के लिए दिल्ली पुलिस ने उत्तराखंड की स्थानीय तल्लीताल पुलिस की मदद ली.

पुलिस की सर्च टीम ने 26 जुलाई, को बबीता की लाश पुलिया नंबर 162 से ढूंढ निकाली.

27 जुलाई को एसआई नरेंदर सिंह ने आरोपी राजेश को गिरफ्तार कर लिया. फिर उसे कोर्ट में पेश कर जेल भेज दिया गया. ●

---

# मालिक की खातिर कुत्तों ने दी कुरबानी

कुत्ता समझदार के साथसाथ बहुत वफादार होता है. इन की वफादारी के किस्से आप ने बहुत सुने होंगे, लेकिन उत्तर प्रदेश के भदोही जिले में 2 कुत्तों ने समझदारी का परिचय देते हुए जो हिम्मत और वफादारी दिखाई, उस की सभी लोग सराहना कर रहे हैं. इस काम में दोनों कुत्तों को अपनी जान तक गंवानी पड़ गई.

भदोही जिले के औराई क्षेत्र के जयराम गांव में डा. राजन रहते हैं. उन के पास शेरू और कोको नाम के 2 जरमन शेफर्ड नस्ल के कुत्ते थे. दोनों कुत्तों की डा. राजन ही नहीं बल्कि उन का पूरा परिवार अच्छी देखभाल करता था. लेकिन 8 अगस्त की रात को उन के यहां जो हुआ, उस की किसी ने कल्पना तक नहीं की थी.

हुआ यह कि 8 अगस्त की रात को डा. राजन और घर के सभी लोग गहरी नींद में सो रहे थे. चौकीदार गुड्डू भी अपनी ड्यूटी पर था. तभी मेनगेट से एक जहरीला सांप अंदर घुस गया. चौकीदार को इस की भनक तक नहीं लगी. घर की बाउंड्री में शेरू और कोको थे.

जैसे ही उन दोनों कुत्तों ने सांप को देखा तो उन्होंने जोरजोर से भौंकना शुरू कर दिया. कुत्तों की आवाज सुन कर चौकीदार गुड्डू अंदर की तरफ गया तो सांप को देख कर वह भी घबरा गया. सांप के सामने जाने की उस की हिम्मत नहीं हो रही थी, लेकिन दोनों कुत्ते मोर्चा संभाले हुए थे. कुत्ते सांप को कमरों की तरफ जाने से रोके हुए थे.

वे सांप को वहां से भगाने की कोशिश कर रहे थे. सांप भी जिद्दी बना हुआ था. वह वहां से टस से मस नहीं हो रहा था.

करीब एक घंटे तक सांप और कुत्तों के बीच लड़ाई होती रही. वे एकदूसरे पर हमला करने की कोशिश करते रहे. चौकीदार भी कुत्तों को सांप से बचाने की कोशिश डरतेडरते कर रहा था.

मौका मिलते ही एक कुत्ते ने सांप का फन अपने मुंह में दबोच लिया तो सांप ने उस के गरदन में खुद को लपेट लिया. छटपटाते हुए सांप भी शेरू की गरदन दबाने की कोशिश करने लगा.

तभी दूसरे कुत्ते कोको ने अपने पंजों से शेरू की गरदन में लिपटे सांप को हटाया और बीच में से चबा कर सांप के 2 टुकड़े कर दिए.

इस दौरान चौकीदार गुड्डू अपने मालिक डा. राजन को बुला लाया. तब तक सांप की मृत्यु हो चुकी थी. लेकिन दोनों कुत्तों की भी हालत बिगड़ने लगी क्योंकि सांप के जहर का असर उन पर होने लगा था. डा. राजन ने तुरंत पशु चिकित्सक को बुला लिया, मगर डाक्टर के आने तक दोनों कुत्तों शेरू और कोको की मौत हो चुकी थी.

करीब 5 फीट लंबे उस जहरीले सांप से घर के सदस्यों को बचाने के लिए शेरू और कोको ने अपनी जान कुरबान कर दी. उन की हिम्मत और वफादारी से घर के सभी लोग न केवल आश्चर्यचकित थे बल्कि उन की मौत पर वे खूब रोए. ●

**पटियाला, पंजाब**

मंजीत कौर के दोनों बच्चे जश्नदीप और हरनदीप सिंह (फाइल फोटो)

# किसी की मां ऐसी न हो

❑ **सुनील वर्मा**

बलजीत सिंह और मंजीत कौर (नीचे)

दीदार सिंह के छोटे से परिवार में पत्नी मंजीत कौर के अलावा 2 बेटे थे. घर में किसी भी चीज की कमी नहीं थी, इस के बावजूद मंजीत कौर ने पति के मौसेरे भाई बलजीत सिंह से अवैध संबंध बना लिए. इसी दौरान मंजीत कौर ने अपने दोनों बेटों की हत्या करा दी. आखिर ऐसी क्या वजह रही कि मंजीत कौर माता से कुमाता बन गई?

पंजाब के पटियाला जिले की घनौर तहसील के राजपुरा रोड पर बसे गांव खेड़ी गंडियां में रहने वाले दीदार सिंह के लिए शाम जीवन में अंधकार बन कर आई थी. उन के दोनों बेटे 10 साल का जश्नदीप सिंह और 6 साल का हरनदीप सिंह शाम करीब साढ़े 8 बजे घर के पास ही कोल्डड्रिंक लेने के लिए गए थे.

लेकिन जब वे आधे घंटे तक लौट कर घर नहीं आए तो उन की मां मंजीत कौर को चिंता होने लगी. थोड़ी देर बाद करीब 9 बजे मंजीत कौर के पति दीदार सिंह भी अपनी भांजी को गांव के बाहर बसअड्डे छोड़ कर घर लौटे तो उन्हें दोनों बच्चे घर में दिखाई नहीं दिए.

''मंजीते... ओ मंजीते, जश्न... त हरन किधर हैं ? भई दिखाई नहीं दे रहे.'' दीदार सिंह ने बीवी मंजीत कौर से बच्चों के बारे में पूछा.

''बच्चे तो एक घंटा पहले पास की दुकान से कोल्डड्रिंक खरीदने गए थे. बहुत देर से कोल्डड्रिंक पीने की जिद कर रहे थे, इसलिए मैं ने पैसे दे कर लाने के लिए भेज दिया था.'' मंजीत कौर ने बताया.

मंजीत कौर को भी चिंता हुई. क्योंकि बच्चों को गए तो बहुत देर हो गई थी अब तक तो उन्हें आ जाना चाहिए था.

वह पति से बोली, ''सुनो जी, मुझे भी अब चिंता हो रही है. पता नहीं बच्चे कहीं खेलने के लिए इधरउधर न निकल जाएं, इसलिए आप बाहर जा कर देख आओ. तब तक मैं किचन का काम निबटा लेती हूं. बच्चे आते ही खाना मांगेंगे.''

दीदार सिंह को बच्चों के प्रति बीवी की लापरवाही पर गुस्सा तो बहुत आया, लेकिन मन मसोस कर बड़बड़ाता हुआ घर के बाहर निकल गया.

दीदार सिंह ने आसपास के सभी लोगों से पूछा, लेकिन कोई भी हरन व जश्न के बारे में ऐसी जानकारी नहीं दे सका, जिस से उन का कुछ पता चलता.

जब घर आ कर दीदार सिंह ने बताया कि हरन व जश्न गांव में कहीं नहीं मिले तो मंजीत कौर के पांव तले की जमीन खिसक गई. आखिर एक मां के एक नहीं 2-2 बेटे एक साथ रात के ऐसे वक्त लापता हो जाएं तो उस का कलेजा तो फटना ही था.

घर में रोनापीटना शुरू हो गया. रोनापीटना शुरू हुआ तो आसपड़ोस के लोग जमा हो गए. गांवदेहात में अगर किसी के घर परेशानी हो तो पूरा गांव उस परेशानी को दूर करने में जुट जाता है. लिहाजा आधी रात होतेहोते पूरे गांव में हरन व जश्न के लापता होने की खबर जंगल की आग की तरह फैल गई. यह बात 22 जुलाई, 2019 की थी.

गांव के नौजवान और दीदार सिंह के परिवार के लोग टौर्च और मोबाइल की फ्लैश लाइट जला कर गांव के ऐसे हिस्सों में टोली बना कर ढूंढने के लिए निकल पड़े. कुछ लोग करीब 2 किलोमीटर दूर भाखड़ा नहर की तरफ भी बच्चों की तलाश करने चले गए, जहां आमतौर पर गांव के बच्चे शाम को घूमने टहलने चले जाया करते थे.

सुबह होते ही परिवार के लोग और गांव वाले खेड़ी गंडियां थाने पहुंच गए. उन्होंने थाने में दोनों बच्चों के लापता होने की सूचना दे कर पुलिस से बच्चों की तलाश करने का अनुरोध किया. पुलिस ने उसी दिन गुमशुदगी दर्ज कर ली.

पुलिस ने बच्चों के फोटो ले कर आसपास के इलाकों में उन के पोस्टर चिपकवा दिए. गुमशुदगी के मामलों में पुलिस आमतौर पर इस से ज्यादा कोई काररवाई करती भी नहीं है. इसी तरह 3 दिन बीत गए, लेकिन बच्चों का कहीं पता नहीं चला. अब दीदार सिंह व गांव वालों का धीरज जवाब देने लगा था.

लिहाजा पहले तो पीड़ित परिवार और सभी गांव वालों ने मिल कर खेड़ी गंडियां के बाहर राजपुरा रोड पर प्रदर्शन कर जाम कर दिया. धरनाप्रदर्शन शुरू होते ही जिले के आला अधिकारियों के कान खड़े हो गए. इलाके की सांसद परनीत कौर व कांग्रेस के विधायकों

मंजीत कौर और कंवलजीत सिंह पुलिस हिरासत में

ने एसएसपी के ऊपर इस मामले का जल्द खुलासा करने का दबाव बनाना शुरू कर दिया था.

अधिकारियों के निर्देश पर जश्न व हरन की गुमशुदगी के मामले को गलत नीयत से हुए अपहरण की धारा में दर्ज कर लिया गया. मामले का खुलासा करने के लिए थाना खेड़ी गंडियां इंचार्ज कुलविंदर सिंह के नेतृत्व में थाने के तेजतर्रार पुलिसकर्मियों की टीम गठित कर दी गई.

जिस के बाद पुलिस ने दीदार सिंह के आसपड़ोस के दुकानदारों से पूछताछ तेज कर दी. पड़ोसियों से भी पूछताछ कर ली गई. लेकिन किसी ने भी इस बात की तस्दीक नहीं की कि दोनों बच्चे उन के यहां कोल्डड्रिंक लेने आए थे.

## एक बच्चे की मिली लाश

पुलिस ने दीदार सिंह के परिवार की कुंडली भी खंगालनी शुरू कर दी. दीदार सिंह के पिता दर्शन सिंह के 3 बच्चे हैं. सब से बड़ी बेटी है गुरमेज कौर जिस की शादी हो चुकी है. छोटा भाई जसंवत सिंह भी शादीशुदा है. जिस घर में दीदार अपनी पत्नी मंजीत कौर व दोनों बेटों हरन व जश्न के साथ रहता है वह उस का पैतृक मकान है.

दोनों बेटों की शादी के बाद दर्शन सिंह ने मकान 2 हिस्सों में बांट दिया. दोनों भाई अपने परिवारों के साथ अपनेअपने हिस्सों में रहने लगे. दीदार सिंह और जसवंत सिंह दोनों ही पेशे से ड्राइवर थे.

दीदार पटियाला की एक बड़ी ट्रांसपोर्ट कंपनी में ड्राइवर था और ज्यादा समय घर के बाहर ही रहता था. वैसे दोनों भाइयों और उन के परिवार अलग जरूर रहते थे, लेकिन उन के बीच भाईचारे और प्यार की कोई कमी नहीं थी.

पुलिस को दुश्मनी के बिंदु पर जांच करने के बाद कोई सुराग नहीं मिला. जांच चल ही रही थी कि 27 जुलाई, 2019 को भाखड़ा नहर नरवाना ब्रांच में करीब 6-7 साल के एक बच्चे का शव सड़ीगली अवस्था में तैरते हुए पुलिस ने बरामद किया.

पुलिस ने जब आसपास के इलाकों में इस उम्र के लापता बच्चों के बारे में जानकारी हासिल की तो पता चला कि दीदार सिंह के छोटा बेटा हरनदीप सिंह भी इसी उम्र का था.

थानाप्रभारी कुलविंदर सिंह ने परिवार वालों को बुलवा कर जब शव की शिनाख्त का प्रयास किया तो उन्होंने शव को पहचानने से ही इनकार कर दिया.

दरअसल शव इतनी बुरी तरह सड़गल गया था कि उस में पहचान करने के लिए कोई चिह्न ही नहीं बचा था. बहरहाल पुलिस ने शव को बिना पहचान के ही डीएनए टेस्ट के लिए उस का सैंपल ले कर मोर्चरी में सुरक्षित रखवा दिया.

जश्नदीप और हरनदीप सिंह की तसवीरें लिए उन के घर वाले

दरअसल, दीदार सिंह को यकीन ही नहीं था कि उस के बच्चे की कोई हत्या भी कर सकता है. इसीलिए उसे यकीन ही नहीं हो रहा था कि भाखड़ा नहर के नरवाना इलाके में जो शव बरामद हुआ है वह उन के बेटे का हो सकता है.

इधर खेड़ी प्रभारी कुलविंदर सिंह को लगने लगा कि अगर नहर से एक बच्चे का शव बरामद हो गया है तो निश्चित ही दूसरा शव भी नहर में ही मिलेगा.

लिहाजा उन्होंने उच्चाधिकारियों से अनुमति ले कर तैराक व गोताखोरों को बुला कर भाखड़ा नहर के खेड़ी गंडिया से लगे 5 किलोमीटर इलाके में दूसरे शव की तलाश शुरू कर दी.

आखिरकार 4 अगस्त, 2019 को भाखड़ा नहर से करीब 10 साल के एक और बच्चे का सड़ागला शव बरामद हुआ. उस की उम्र दीदार सिंह के बड़े बेटे जशनदीप सिंह जितनी थी. लेकिन इस बार बच्चे के हेयरस्टाइल, काला धागा व कपड़ों को देख कर दीदार सिंह के पिता दर्शन सिंह ने उस की पहचान अपने बड़े पोते जश्न के रूप में कर दी.

अब दीदार सिंह की समझ में भी यह बात आ गई थी कि अगर बड़े बेटे का शव नहर में मिला है तो जाहिर है पहले जो शव मिला था वह छोटे बेटे का ही होगा.

आखिरकार 5 अगस्त को दीदार सिंह के परिवार ने दोनों बच्चों की लाश पहचानने व उन के शव अपनी सुपुर्दगी में लेने की काररवाई पूरी कर दी. उसी दिन दोनों बच्चों के शवों का अंतिम संस्कार कर दिया गया.

सवाल था कि दीदार के दोनों बच्चों की मौत नहर में डूबने से हुई थी या उन्हें किसी ने

दीदार सिंह पिता दर्शन सिंह के साथ

नहर में ले जा कर धकेल दिया था. दीदार का तो कोई ऐसा दुश्मन भी नहीं था जो ऐसा कर सके. आखिर कौन ऐसा शख्स हो सकता है.

बच्चों का अंतिम संस्कार होने के बाद पुलिस ने दीदार सिंह से एक बार फिर पूछताछ की और उस से ऐसे लोगों के बारे में जानकारी ली जो उस के बच्चों को अपहरण कर हत्या कर सकते थे.

लेकिन दिमाग पर पूरा जोर डालने के बाद भी दीदार सिंह या उन का परिवार किसी ऐसे शख्स के बारे में नहीं बता सका, जिस पर शक किया जा सके.

धीरेधीरे वक्त तेजी से गुजरने लगा. 17 अगस्त, 2019 को पटियाला के एसएसपी विक्रमजीत दुग्गल ने हत्या की आशंका को देखते हुए एक स्पैशल इनवैस्टीगेशन टीम गठित कर दी, जिस में डीएसपी ( घनौर ) जसविंदर सिंह टिवाणा, डीएसपी ( हैडक्वार्टर ) गुरदेव सिंह धालीवाल तथा थानाप्रभारी कुलविंदर सिंह को शामिल किया गया.

इस बीच अक्तूबर, 2019 को पोस्टमार्टम रिपोर्ट भी आ गई, जिस से साफ हो गया कि बच्चों की मौत डूबने से हुई थी.

इस मामले में दर्ज अपहरण के केस को दोनों बच्चों के शव मिलने के बाद अज्ञात लोगों के खिलाफ हत्या का केस दर्ज कर लिया गया था. चूंकि इस मामले में कोई खास जानकारी मिल नहीं रही थी, लिहाजा पुलिस केवल धूल में लट्ठ मारती रही.

वक्त तेजी से गुजरता चला गया. पहले दिन बीते, फिर महीने बीतने लगे. दीदार सिंह थाने से ले कर एसआईटी के अफसरों और उच्चाधिकारियों के सामने अपने बच्चों के कातिलों का सुराग जल्द लगाने के लिए धक्के खाता रहा.

इधर इलाके के विधायक व सांसद भी पुलिस पर दबाव देते रहे. पुलिस अपने काम में कुछ कदम आगे बढ़ती, इस से पहले ही मार्च 2020 में कोरोना महामारी के कारण देशव्यापी लौकडाउन लग गया.

5 महीने तक लौकडाउन लगा रहा, जिस कारण पुलिस की जांच जहां की तहां फाइलों में कैद हो कर रह गई. इस दौरान एक साल का वक्त गुजर चुका था. दिसंबर, 2020 में एसएसपी दुग्गल ने हरन व जश्न की जांच के मामले में गठित हुई एसआईटी के इंचार्ज डीएसपी घनौर जसविंदर सिंह टिवाणा को बुला कर जांच को तेजी से आगे बढ़ाने के निर्देश दिए.

> एसआईटी ने अपना काम शुरू कर दिया. इस बार जब दोबारा जांच शुरू हुई तो एसआईटी को हरन व जश्न के अपहरण व हत्याकांड की जांच में एक के बाद एक कई ऐसे क्लू मिलने शुरू हो गए, जिस से इस बहुचर्चित केस की कड़ियां एक साथ जुड़ती चली गईं.

एसआईटी ने अपना काम शुरू कर दिया. इस बार जब दोबारा जांच शुरू हुई तो एसआईटी को हरन व जश्न के अपहरण व हत्याकांड की जांच में एक के बाद एक कई ऐसे क्लू मिलने शुरू हो गए, जिस से इस बहुचर्चित केस की कड़ियां एक साथ जुड़ती चली गईं. आखिर 4 मार्च, 2021 को पुलिस ने जांच का पटाक्षेप करते हुए दीदार सिंह की पत्नी व हरन व जश्न की मां मंजीत कौर तथा दीदार सिंह के मौसेरे भाई बलजीत सिंह को गिरफ्तार कर लिया.

दोनों से पूछताछ के बाद 2 मासूम बच्चों के बहुचर्चित व सनसनीखेज हत्याकांड की ऐसी हैरतअंगेज कहानी सामने आई, जिसे सुन कर हर किसी ने दांतों तले अंगुली दबा ली और लोग कहने को मजबूर हो गए कि ऐसी मां किसी को न दे.

## घटनास्थल से पलटी हत्याकांड की थ्यौरी

दरअसल, कोरोना महामारी के दौरान लौकडाउन लगने के बाद जब पुलिस की जांचपड़ताल और गतिविधियां धीमी पड़ गईं तो दीदार सिंह की पत्नी मंजीत कौर अचानक अपने पति का घर छोड़ कर शहर में अपनी बहन के पास रहने के लिए पटियाला चली गई थी. इस के बाद एक के बाद एक ऐसे घटनाक्रम हुए, जिस ने दोनों बच्चों के अपहरण व हत्याकांड की थ्यौरी ही पलट दी.

हुआ यूं कि कई महीने गुजर जाने के बाद भी जब पुलिस और परिवार वालों को दोनों बच्चों के कातिल का कोई सुराग नहीं मिला तो दीदार सिंह ने गंभीरता से सोचना शुरू किया कि ऐसा कौन शख्स हो सकता है जो बिना किसी लाभ के दोनों बच्चों को अगवा कर के उन की हत्या कर सकता है.

इन्हीं सब बातों को सोचतेसोचते अचानक दीदार सिंह को अपने मौसेरे भाई बलजीत का

खयाल आया. क्योंकि जब से उस के दोनों बेटे लापता हुए और बाद में उन की लाशें मिली थीं, तब से दोस्तों और रिश्तेदारों में एक ही इंसान था, जो न तो उस के पास हमदर्दी के दो बोल बोलने के लिए आया और न ही उस ने फोन कर के इस दुख में अपना शोक व्यक्त किया था.

इस के बाद नंवबर 2020 में वह हरन व जश्न की हत्या का राज खोलने के लिए बनी एसआईटी के हैड डीएसपी जसविंदर सिंह टिवाणा के पास पहुंचा और बोला, ''सर अभी तक मुझे किसी पर शक नहीं था, लेकिन अब मैं दावा करता हूं कि अगर आप बलजीत को बुला कर सख्ती से पूछताछ करेंगे तो मेरे बच्चों की मौत का राज पता चल जाएगा.''

''इस की कोई खास वजह ?'' डीएसपी जसविंदर सिंह ने दीदार सिंह को हैरतभरी नजरों से देखते हुए पूछा.

## मौसेरा भाई बलजीत आया शक के दायरे में

इस के बाद दीदार ने एक के बाद एक वह सारा घटनाक्रम बयान कर दिया, जिस के चलते उसे बलजीत सिंह पर शक हुआ था. सारी बात सुनने के बाद डीएसपी टिवाणा ने कहा, ''दीदार सिंह, तुम ने देर से ही सही मगर बड़े काम की जानकारी हमें दी है. अगर पहले ये सब बातें बताई होतीं तो शायद अब तक हम तुम्हारे बच्चों के कातिल तक पहुंच चुके होते.''

उन्होंने आगे कहा, ''लेकिन तुम्हारी बात सुन कर मुझे लगता है कि हो न हो अगर बलजीत का इस मामले में हाथ है तो तुम्हारी बीवी मंजीत कौर का भी इस में जरूर हाथ रहा होगा.''

''नहीं साहब नहीं.. रब न करे आप की बात में सच्चाई हो... क्योंकि कोई मां अपने बच्चों का कत्ल करा सकती है, ये बात मेरे गले से नहीं उतर रही.'' दीदार सिंह ने हैरत से खुले अपने मुंह पर हाथ रखते हुए कहा.

''रब न करे ऐसा हो, लेकिन दीदार तुम ने जो हालात बयान किए हैं, उस में ऐसा संभव हो सकता है.'' डीएसपी बोले.

लाई डिटेक्टर का परिणाम आने के बाद डीएसपी टिवाणा ने एसएसपी दुग्गल व एसआईटी के सभी अधिकारियों के समक्ष जब मंजीत कौर व बलजीत सिंह से पूछताछ की तो उन के पास छिपाने के लिए कुछ भी नहीं था. दोनों ने अपनेअपने गुनाह की कहानी कबूल कर ली.

इस के बाद डीएसपी टिवाणा ने एसएसपी विक्रमजीत दुग्गल को दीदार सिंह के बच्चों के केस में आए इस नए इस खुलासे से अवगत कराया तो उन्होंने कहा कि जो भी संदिग्ध लगे, उस से पूछताछ करो. लेकिन अब मुझे इस केस का जल्द से जल्द खुलासा चाहिए.

इस के बाद डीएसपी टिवाणा ने एसआईटी की मीटिंग बुलाई और बलजीत को बुला कर पूछताछ करने की रणनीति तय की. बलजीत को बुलाया गया. सवालों की एक लंबी फेहरिस्त पुलिस के पास थी, जिन का बलजीत ने बेखौफ हो कर जवाब दिया.

चूंकि पुलिस के पास न तो बलजीत के खिलाफ ठोस सबूत था और न ही कोई गवाह, लिहाजा जब उसे छुड़ाने के लिए कुछ लोगों ने पुलिस पर दबाव बनाना शुरू किया तो बलजीत को मजबूरन छोड़ना पड़ा.

बलजीत के बाद पुलिस ने दीदार सिंह की पत्नी मंजीत कौर को भी पूछताछ के लिए बुलाया. मंजीत कौर ने शक जताया कि उस के पति का घर से बाहर किसी औरत से संबध है, वह चाहता है कि बच्चों को खत्म करने के बाद मुझ से छुटकारा मिल जाए और वह दूसरी शादी कर ले.

मंजीत कौर से पूछताछ के बाद तो थ्यौरी ही बदल गई.

पुलिस ने अगले एक महीने में 2-3 बार बलजीत और मंजीत कौर को पूछताछ के लिए बुलाया. पूछताछ में पुलिस को हत्यारों का सुराग तो नहीं मिला, लेकिन उन्होंने हर बार दीदार सिंह पर उलटे ऐसेऐसे इलजाम लगाए कि इस से दोनों बच्चों की हत्या की गुत्थी और ज्यादा उलझ गई.

एसएसपी के निर्देश पर डीएसपी टिवाणा ने दिसंबर 2020 में पटियाला की जिला अदालत में दीदार सिंह, मंजीत कौर तथा बलजीत कौर के लाई डिटेक्टर टेस्ट के लिए अरजी लगा दी.

मार्च के पहले हफ्ते में सब से पहले पुलिस ने दीदार सिंह का लाई डिटेक्टर टेस्ट कराया, उस के बाद एकएक कर के बलजीत सिंह और मंजीत कौर के लाई डिटेक्टर टेस्ट कराए गए.

पुलिस के पास इन से पूछने के लिए सवालों की एक लंबी फेहरिस्त पहले से तैयार थी. इस टेस्ट का परिणाम सामने आया तो पता चला

दीदार सिंह पत्नी मंजीत कौर और दोनों बच्चों के साथ

(फाइल फोटो)

दीदार सिंह: पत्नी और मौसेरे भाई ने मिल कर घर उजाड़ दिया

कि दीदार सिंह ने सभी सवालों के जवाब एकदम सही दिए थे. जबकि मंजीत कौर तथा बलजीत ने ज्यादातर सवालों के जवाब में झूठ बोला था.

टेस्ट के बाद यह साफ हो गया कि हरनजीत सिंह व जश्नजीत सिंह के अपहरण व हत्याकांड को उन दोनों ने ही अंजाम दिया था.

लेकिन इस वारदात को क्यों और कैसे अंजाम दिया गया, इस का खुलासा होना बाकी था. लाई डिटेक्टर का परिणाम आने के बाद डीएसपी टिवाणा ने एसएसपी दुग्गल व एसआईटी के सभी अधिकारियों के समक्ष जब मंजीत कौर व बलजीत सिंह से पूछताछ की तो उन के पास छिपाने के लिए कुछ भी नहीं था. दोनों ने अपनेअपने गुनाह की कहानी कबूल कर ली.

दीदार सिंह पटियाला में जिस ट्रांसपोर्ट कंपनी में काम करता था, वह ज्यादातर वहीं रहता था. महीने में 3-4 बार ही वह परिवार से मिलने आता था.

पति से रहने वाली यही दूरी मंजीत के लिए गैरमर्द के करीब जाने का सबब बन गई. दीदार सिंह की मौसी का लड़का बलजीत अकसर ही दीदार सिंह के घर आताजाता था.

लेकिन करीब 3 साल पहले जब बलजीत दीदार की पत्नी मंजीत कौर की तरफ आकर्षित हुआ तो उस का घर में आनाजाना कुछ ज्यादा ही बढ़ गया. दोनों के बीच पैदा हुआ आकर्षण जल्द ही नाजायज रिश्तों में बदल गया.

दीदार सिंह ने अपनी पत्नी मंजीत कौर को गांव में ही मनियारी की दुकान ( सौंदर्य प्रसाधनों और कौस्मेटिक के सामान ) खुलवा रखी थी. मंजीत पढ़ीलिखी और तेजतर्रार महिला थी. मनियारी की दुकान के कारण उस का समय भी व्यतीत हो जाता था और इस से होने वाली आमदनी में दीदार सिंह का हाथ भी बंटा देती थी.

बलजीत खेड़ी गंडियां से करीब 5 किलोमीटर दूर स्थित गांव महमा का रहने वाला था. अपने गांव के बाहर ही राजपुरा रोड पर उस ने गाड़ियों की डेंटिंगपेंटिंग की वर्कशौप खोल रखी थी.

जब तक बलजीत के मंजीत कौर से नाजायज संबंध नहीं बने थे, तब तक वह अकसर दीदार सिंह जब भी गांव आता तो उस के साथ शराब पीने की बैठकबाजी होती रहती थी. लेकिन अचानक बलजीत ने दीदार के साथ ऐसी शराब की बैठक करना बंद कर दी.

इधर, अब बलजीत अपनी वर्कशौप छोड़ कर रोजाना ही मंजीत की दुकान पर आने लगा और दिन भर वहीं पर पड़ा रहता था. कुछ दिन तो लोगों ने इसे नजरअंदाज किया लेकिन जल्द ही दोनों के संबंधों को ले कर गांव में चर्चा फैलने लगी.

दीदार सिंह जब अपने काम से वापस गांव आता तो यह चर्चा उसे भी सुनने का मिलने लगी. शुरुआत में तो दीदार सिंह ने नजरअंदाज कर दिया, क्योंकि एक तो उसे अपनी पत्नी मंजीत पर पूरा विश्वास था. दूसरे बलजीत उस के लिए सगे भाई से भी ज्यादा भरोसेमंद था.

लेकिन जब बारबार ऐसा होने लगा तो दीदार सिंह के मन में भी शक का कीड़ा कुलबुलाने लगा, जिस के बाद उस ने अपनी पत्नी की गतिविधियों पर भी नजर रखनी शुरू कर दी.

एक दिन उस ने खुद भी बलजीत को मंजीत की दुकान में उस के साथ संदिग्ध स्थिति में पकड़ लिया. दरअसल, दोनों दुकान का शटर गिरा कर एकदूसरे के साथ आलिंगनबद्ध थे.

उस दिन दीदार ने बलजीत को जम कर खरीखोटी सुनाई और उस की खूब बेइज्जती की. साथ ही उस ने बलजीत को यह भी हिदायत दी कि आज के बाद वह उस के घर और परिवार के किसी भी सदस्य से मिलने की कोशिश न करे.

दीदार ने उस दिन घर आ कर खूब शराब पी और शराब के नशे में मंजीत कौर पर बदचलनी का तोहमत लगा कर मारपीट भी कर दी.

दीदार सिंह का मन नहीं भरा तो अगले दिन वह अपनी मौसी के घर भी चला गया और वहां पूरे परिवार को ये बात बता दी कि किस तरह बलजीत ने उस की भोलीभाली पत्नी को अपने जाल में फंसा कर भाई की पीठ में छुरा घोंपा है और रिश्तों को कलंकित किया है.

## मंजीत ने रची थी साजिश

परिवार के बीच जब ये खुलासा हुआ तो वहां भी बलजीत को परिजनों ने खूब लानतमलामत दी, जिस के बाद बलजीत के मन में दीदार सिंह के लिए नफरत और जहर भर गया. उस ने मन बना लिया कि अपने इस अपमान का बदला वह दीदार सिंह से ले कर रहेगा.

दीदार सिंह अब अकसर रोज ही काम से अपने घर लौट आता था. इधर, मंजीत के ऊपर भी वह पूरी निगरानी रखता था. इसलिए मंजीत और बलजीत के मिलनेजुलने में अड़चनें पैदा होने लगीं.

आशिक और माशूक की इस दूरी ने दोनों के दिलों में धीरेधीरे दीदार सिंह के लिए घृणा का भाव पैदा कर दिया. दोनों ही इस बात पर विचार करने लगे कि किस तरह दीदार को सबक सिखाया जाए.

दरअसल, मंजीत की घृणा का एक कारण यह भी था कि दीदार सिंह ने उस के मायके में जा कर बलजीत के साथ उस के संबंधों की बात बता दी थी और कहा था कि वह केवल अपने दोनों बच्चों के कारण उसे पत्नी के रूप में अपने साथ रख रहा है अन्यथा उसे ऐसी हरकत करने के कारण कभी का छोड़ देता.

दीदार अपने दोनों बच्चों को बेहद प्यार

मीडिया के सामने घटना का खुलासा करते एसएसपी विक्रमजीत दुग्गल

करता था. मंजीत और बलजीत ने फैसला किया कि दीदार सिंह को अगर चोट पहुंचानी है तो क्यों न उस के बच्चों को ही खत्म कर दिया जाए. क्योंकि अगर उस के बच्चे खत्म हो जाएंगे तो कुछ दिन बाद मंजीत भी बहाना बना कर अपने मायके चली जाएगी और बाद में बलजीत के साथ रहना शुरू कर देगी.

बस, एक बार मंजीत के दिमाग में यह कुविचार आया तो इस के बाद यह और ज्यादा पुख्ता होता चला गया.

बलजीत ने दीदार को सबक सिखाने की पूरी योजना बना ली थी. उसी योजना के तहत मंजीत कौर ने अपने प्रेमी बलजीत सिंह के साथ मिल कर 22 जुलाई, 2019 की रात साढ़े 8 बजे इसे अंजाम देने का काम शुरू किया. संयोग से उस शाम दीदार सिंह भी जल्दी घर आ गया था.

घर में दीदार की भांजी आई हुई थी, जिसे छोड़ने के लिए वह राजपुरा रोड गया हुआ था. उसी बीच मंजीत ने अपने दोनों बच्चों हरन व जश्न को गुरुद्वारा साहिब से कोल्डड्रिंक लाने को यह कहते हुए भेजा कि आप के चाचा बलजीत सिंह वहां खड़े आप का इंतजार कर रहे हैं. वह आप को कोल्डड्रिंक पिलाएंगे.

बच्चे आमतौर पर खानेपीने की किसी चीज का लालच मिलने पर किसी भी परिचित से मिलने चले ही जाते हैं. दोनों बच्चे जब वहां पहुंचे तो बलजीत सिंह पहले ही वहां स्कूटी लिए खड़ा था. मंजीत से उस की पहले ही फोन पर बातचीत हो चुकी थी.

वह अपने गांव के दोस्त से स्कूटी मांग कर लाया था. उस दिन मंजीत ने अपने चेहरे को कपड़े से इस तरह लपेट रखा था कि कोई अनजान व्यक्ति उसे पहचान न सके.

वह दोनों बच्चों को एक लंबे रास्ते से गुरुद्वारा साहिब से होते हुए भाखड़ा नहर तक स्कूटी पर बैठा कर ले गया. उस ने बच्चों से कहा था कि वहां उन्हें कोल्डड्रिंक के साथ एक बहुत अच्छी चीज दिखाएगा.

नहर पर ला कर उस ने दोनों बच्चों को नहर दिखाने के बहाने नहर की पटरी पर खड़ा कर दिया गया और फिर नहर में धकेल दिया. इस के बाद उस ने मंजीत कौर को फोन कर के बच्चों को खत्म करने की बात बता दी, जिस के बाद मंजीत कौर ने बच्चों के गुम होने का नाटक शुरू कर दिया. बाद में उस ने धीरेधीरे यह अफवाह फैला दी कि उन के बच्चों का किसी ने अपहरण कर लिया है.

बलजीत ने दीदार को सबक सिखाने की पूरी योजना बना ली थी. उसी योजना के तहत मंजीत कौर ने अपने प्रेमी बलजीत सिंह के साथ मिल कर 22 जुलाई, 2019 की रात साढ़े 8 बजे इसे अंजाम देने का काम शुरू किया. संयोग से उस शाम दीदार सिंह भी जल्दी घर आ गया था.

जांच में पुलिस को पता चला कि बलजीत ने अपने नाम से एक सिम कार्ड खरीद कर मंजीत कौर को दे रखा था, जिस पर बातचीत करते हुए उन्होंने इस पूरी साजिश को अंजाम दिया.

बलजीत सिंह ने पूछताछ में बताया कि वह उसी रात घटना को अंजाम देने के बाद फोन बंद कर दिया गया था. रात करीब 11 बजे बलजीत चोरीछिपे मंजीत के घर के पास आया था और मंजीत से मोबाइल भी ले कर चला गया था. उस ने मोबाइल का सिम निकाल कर उसे तोड़ कर फेंक दिया था.

जरूरी पूछताछ के बाद पुलिस ने मंजीत व बलजीत को 8 मार्च, 2021 तक पुलिस रिमांड पर ले लिया. पुलिस ने इस दौरान उन के वारदात में शामिल होने के साक्ष्य जुटाए. पुलिस ने उस फोन को भी बरामद कर लिया, जो बलजीत सिंह ने मंजीत कौर को दिया था. इसी फोन पर दोनों के बीच बातचीत होती थी.

पूछताछ के बाद पुलिस ने दोनों को अदालत में पेश कर के 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया. ●

# 365 पत्नियों वाला रंगीला राजा

❑ वीरेंद्र बहादुर सिंह

पटियाला के महाराजा भूपिंदर सिंह ने भले ही 10 शादियां की थीं, लेकिन उन की 365 रानियां थीं. किस रानी से कब मिलना है, इस का उन्होंने इतना बेहतरीन सिस्टम बना रखा था कि...

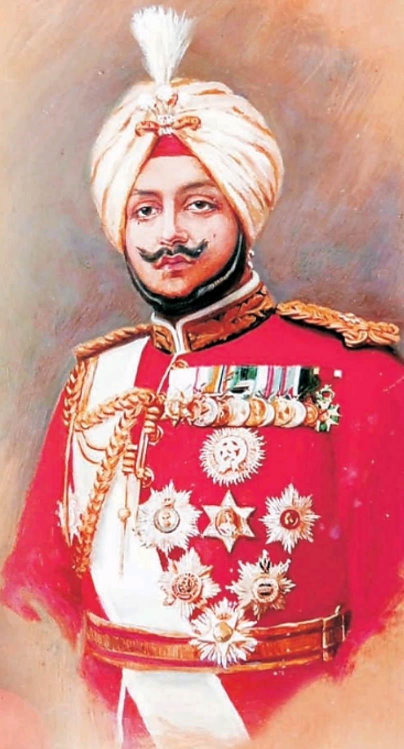

राजाओंमहाराजाओं के पराक्रम के किस्सों से इतिहास भरा पड़ा है. लेकिन ऐसे भी तमाम राजामहाराजा हुए हैं, जिन की रंगीनमिजाजी और शौक की चर्चा कर के आज भी लोग दांतों तले अंगुली दबा लेते हैं.

दरअसल देश की सत्ता जब अंगरेजों के पास आई तो इन राजाओं के पास केवल लगान वसूली का काम रह गया. लगान वसूल कर अंगरेजों का हिस्सा पहुंचा कर बाकी बची रकम से ये केवल अपने शौक पूरे करने के अलावा अय्याशी करते थे.

इन के शौक और अय्याशी भी किसी सनक की ही तरह होती थी. वैसे तो विलासिता पसंद राजाओंमहाराजाओं की हमारे यहां कमी नहीं रही, जो काफी अय्याश भी रहे थे. उन्हीं

में एक नाम पटियाला के महाराजा भूपिंदर सिंह का भी है.

पटियाला की बात चलते ही तुरंत पटियाला पैग की याद आ जाती है. जंबो पैग यानी पटियाला पैग. जंबो पैग की ही तरह पटियाला के महाराजा का परिवार भी जंबो था. सोच कर आप को हंसी भी आ जाए और कंपा भी दे, इस तरह का परिवार था पटियाला के महाराजा का.

आज एक पत्नी और एक या 2 बच्चों के साथ रहना मुश्किल हो रहा है. ऐसे में रोज के हिसाब से एक रानी यानी 365 रानियों के साथ जीवन कैसे गुजरेगा, यह सोच कर दिमाग चकरा जाता है. फिर भी रंगीनमिजाज लोगों को एक की अपेक्षा कई पत्नियों को संभाल लेने की कला अच्छी तरह आती है.

पटियाला के महाराजा भूपिंदर सिंह को भी यह कला अच्छी तरह आती थी. वह बहुत ही रंगीले इंसान थे. पावर करप्ट वाली अंगरेजों की युक्ति यहां पूरी तरह फिट बैठती थी.

12 अक्तूबर, 1891 को पैदा हुए भूपिंदर सिंह. सामान्य बच्चा जिस उम्र में गली में मिट्टी में खेलने जाने लगता है, उसी उम्र में भूपिंदर सिंह महाराजा रजिंदर सिंह की मौत के बाद राजा बन गए थे. 9 साल की उम्र में ही पटियाला की बागडोर संभालने वाले राजा भूपिंदर सिंह ने पटियाला पर 38 साल राज किया था.

हालांकि औपचारिक तौर पर राज्य की कमान उन्होंने 18 साल की उम्र में संभाली थी. 28 साल राज करने के बाद 23 मार्च, 1938 को मात्र 47 साल की उम्र में उन का निधन हो गया था.

भारत में उन दिनों तमाम रजवाड़े थे. राजाओं की रंगीनमिजाजी के तमाम किस्से सुनने को मिलते रहते हैं. तमाम राजाओं की रंगीनमिजाजी पर किताब भी लिखी गई है.

भूपिंदर सिंह के दीवान जरमनी दास ने भी 'महाराजा' नामक एक किताब लिखी है, जिस में पटियाला के महाराजा की रंगीनमिजाजी का पूरा उल्लेख किया गया है.

उन्होंने महाराजा भूपिंदर सिंह के जीवन पर जो किताब लिखी है, उस पर काफी विवाद रहा है. लेकिन इस बात पर सभी एकमत रहे हैं कि महाराजा भूपिंदर सिंह भव्य और विलासिता भरा जीवन जीते थे.

इस किताब में जिस भवन का उल्लेख है, वह लीलाभवन अपने नाम के अनुसार ही लीला यानी रंगरलियों के लिए प्रसिद्ध था.

ऐसा नियम था कि इस महल में कोई कपड़ा पहन कर नहीं जा सकता था. मतलब वहां लोग बिना कपड़ों के यानी नग्न जाते थे. पटियाला के भूपिंदरनगर से जाने वाली सड़क पर बारहदरी बाग के नजदीक यह महल बना है. कपड़ा उतार कर जिस महल में प्रवेश मिलता हो, उस महल की रंगीनमिजाजी यानी इश्कमिजाजी के बारे में क्या कहा जा सकता है. इस महल में एक खास कमरा था, जिस का नाम प्रेम मंदिर रखा गया था.

प्रेम तो एक इबादत माना जाता है, ऐसे में लीलाभवन में प्रेम मंदिर का होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है. लीलाभवन के इस प्रेम मंदिर की दीवारों पर चारों तरफ ऐसे चित्रों की भरमार थी, जिस में महिलापुरुष कामवासना में लिप्त दिखाई देते थे.

12 अक्तूबर, 1891 को पैदा हुए भूपिंदर सिंह. सामान्य बच्चा जिस उम्र में गली में मिट्टी में खेलने जाने लगता है, उसी उम्र में भूपिंदर सिंह महाराजा रजिंदर सिंह की मौत के बाद राजा बन गए थे. 9 साल की उम्र में ही पटियाला की बागडोर संभालने वाले राजा भूपिंदर सिंह ने पटियाला पर 38 साल राज किया था.

इस कमरे में महाराजा भूपिंदर सिंह के अलावा किसी अन्य पुरुष को जाने की अनुमति नहीं थी. हां, अगर राजा की इच्छा हो तो दूसरे किसी पुरुष को प्रवेश मिल सकता था. पर ज्यादातर राजा ही अय्याशी में रचेबसे रहते थे तो दूसरे को जाने का मौका कहां से मिलता. प्रेम मंदिर के उस कमरे में भोगविलास की सारी सुविधाएं उपलब्ध रहती थीं.

इस महल में एक ऐसा तालाब था, जिस में एक साथ 150 लोग स्नान कर सकते थे. इसी महल में राजा पार्टियां देते थे, जिस में जानीमानी महिलाओं और कुछ खास लोगों को निमंत्रण मिलता था.

सभी लोग एक साथ तालाब में स्नान करते, तैरते और अय्याशी करते. यहां खुलेआम अय्याशी होती थी. महाराज इस तरह की पार्टियों में सभी के सामने अपनी प्रेमिकाओं से इश्क फरमाते थे.

राजा भूपिंदर सिंह साल में एक बार बिना कपड़ों के सिर्फ हीरों का हार पहन कर हाथी पर सवार हो कर निकलते थे. तब लोग उन की जयजयकार करते थे. लोगों का मानना था कि राजा की ताकत उन्हें बुरी तापती से बचा सकती है.

रंगीनमिजाज महाराजा भूपिंदर सिंह ने वैसे तो 10 शादियां की थीं. लेकिन इन 10 रानियों के अलावा 365 अन्य महिलाएं रानी की हैसियत से महाराज से मिला करती थीं. महाराज ने इन

'महाराजा' किताब में दी गई जानकारी के अनुसार महाराजा की शादी की हुई 10 रानियों से 88 संतानें हुईं. पर उन में से केवल 53 संतानें ही जीवित रहीं.

सभी रानियों के रहने के लिए पटियाला में भव्य महल बनवाए थे, जिन में भोगविलास की सारी सुविधाएं उपलब्ध रहती थीं.

उस समय लोग स्वास्थ्य के प्रति इतना जागरूक नहीं थे, पर महाराजा भूपिंदर सिंह ने हर रानी के स्वास्थ्य की देखभाल के लिए राउंड द क्लाक देशीविदेशी विशेषज्ञ चिकित्सक रख रखे थे.

ये चिकित्सक रानियों के रूटीन जांच और सेहत के अन्य मामलों पर ध्यान रखते थे. ये विशेषज्ञ रानियों के स्वास्थ्य पर ही नहीं, उन की हेयर स्टाइल से ले कर नाकनक्श तक आधुनिक और खूबसूरत रहे, इस का भी खयाल रखते थे. इस के लिए महाराजा प्लास्टिक सर्जन की भी मदद लेते थे.

'महाराजा' किताब में दी गई जानकारी के अनुसार महाराजा की शादी की हुई 10 रानियों से 88 संतानें हुईं. पर उन में से केवल 53 संतानें ही जीवित रहीं.

365 रानियां हों तो किस के साथ रहना है, यह भी एक बड़ा सवाल है. पर भूपिंदर सिंह ने इस का हल निकाल लिया था. राजा के महल में रात को 365 फानस जलते थे.

इन तमाम फानस पर एकएक रानी का नाम लिखा था. इन में से जो फानस सवेरे सब से पहले बुझ जाता था और उस पर जिस रानी का नाम लिखा होता था, इस का मललब था कि राजा रात उसी रानी के निवास में गुजारेंगे.

उस समय महाराजा भूपिंदर सिंह अय्याशी के लिए ही नहीं, संपत्ति के लिए भी खूब जाने जाते थे. उन के पास ऐसी अनेक चीजें थीं, जिन के कारण वह दुनिया में मशहूर थे. वह अपने खास और अलग अंदाज के लिए जाने जाते थे. वह अपना जीवन भी खास और अलग अंदाज से जीते थे.

वह जिस थाली में खाना खाते थे, उस की कीमत करीब 17 करोड़ थी. उन के सभी बरतनों पर सोने या चांदी की परत चढ़ी हुई थी. राजा का यह डिनर सेट लंदन की कंपनी गोल्डस्मिथ्स एंड सिल्वरस्मिथ्स ने तैयार किया था.

उन के पास दुनिया भर में मशहूर पटियाला हार था, यह हार आभूषण बनाने के लिए विश्वप्रसिद्ध कंपनी कार्टियर ने बनाया था. इस हार में 2900 से अधिक हीरे लगे थे. इस में उस समय का दुनिया के सब से बड़े हीरों में सातवें नंबर का हीरा जड़ा था. इस की कीमत 166 करोड़ थी.

यह हार 1948 में पटियाला के शाही खजाने से चोरी हो गया था. फिर कई सालों बाद अलगअलग हिस्सों में कई स्थानों से बरामद हुआ था. पर इसे गायब करने वाले का पता आज तक नहीं चला है.

उन के पास 44 कारों का पूरा एक काफिला था, जिन में से 20 रोल्स रायस कारें थीं, जिन में से 20 कारें रोज के काम में लगी रहती थीं.

भारत में भूपिंदर सिंह ऐसे पहले व्यक्ति थे, जिन के पास अपना विमान था. 1910 में उन्होंने ब्रिटेन से वह विमान खरीदा था और उस के लिए पटियाला में रनवे भी बनवाया था. उन्होंने विमान खरीदने से पहले चीफ इंजीनियर को स्पौट स्टडी करने के लिए यूरोप भेजा था. उस के बाद विमान खरीदा था.

यह पटियाला पैग भी भूपिंदर सिंह की ही देन है. आज भी शराब के शौकीन पटियाला पैग लगाने के लिए आतुर होते हैं. इस दुनिया को पटियाला पैग भेंट करने वाले भूपिंदर सिंह अपनी 365 रानियों के साथ किस तरह रहते रहे होंगे, यह आज भी रहस्य है.

राजा भूपिंदर सिंह के पास 44 कारों का पूरा एक काफिला था, जिन में से 20 रोल्स रायस कारें थीं

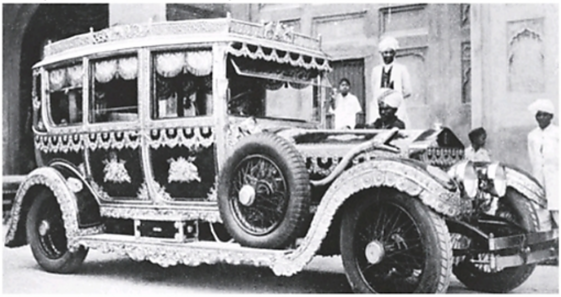

कैरोलिन क्राउच और बाबिस एनाग्नोस्टोपोलोस की शादी की यादगार तसवीर

# स्मार्टवाच में छिपा हत्या का राज

❑ शंभु सुमन

हत्यारा अपने गुनाह के सबूत को मिटाने की चाहे जितनी भी कोशिशें कर ले, उस से कोई न कोई सुराग छूट ही जाता है. ब्रिटिश युवती कैरोलिन क्राउच की हत्या का राज खोलने में बायोमैट्रिक घड़ी पुलिस के लिए ऐसी मददगार साबित हुई कि...

ग्रीस में 20 वर्षीया युवती कैरोलिन क्राउच की हत्या हुई थी. उस के 33 वर्षीय पति बाबिस एनाग्नोस्टोपोलोस, जोकि हेलीकौप्टर पायलट था, ने 11 मई को पुलिस को फोन द्वारा सूचना दी थी कि उस की पत्नी की हत्या अज्ञात लुटेरों ने ग्लयका नेरा स्थित उस के ही घर के बैडरूम में कर दी है.

सूचना पा कर ग्रीक पुलिस मौके पर पहुंच गई. पुलिस ने देखा कि घर में बाबिस की पत्नी कैरोलिन की लाश के अलावा एक कुत्ता भी मरा पड़ा था. घर का सामान भी बिखरा पड़ा था. पुलिस को मामला लूट का ही लग रहा था.

बाबिस ने पुलिस को बताया कि उन्हें लुटेरों ने बांध दिया था. वे 3 थे. उन्होंने घर से पैसे लूटने के बाद उस की पत्नी का गला घोंट डाला था. उस ने लुटेरों से अपने परिवार को नुकसान नहीं पहुंचाने की गुहार भी लगाई थी.

पुलिस ने घटनास्थल से सारे सबूत इकट्ठे कर जांच शुरू कर दी. इतना ही नहीं, पुलिस ने इस हाईप्रोफाइल अपराध की जानकारी देने वाले को 2,57,000 पाउंड स्टर्लिंग (करीब 2 करोड़ 65 लाख रुपए) ईनाम देने की भी घोषणा कर दी. इस ईनाम की घोषणा एथेंस की पुलिस औफिसर्स एसोसिएशन के डिप्टी चेयरमैन निकोस रिगास ने की थी.

उन्होंने मीडिया को भी जांच में अपनाई जाने वाली तमाम लेटेस्ट सिस्टम इस्तेमाल करने की बात कहते हुए दावा किया कि बहुत जल्द ही वे इस मामले का पता लगा लेंगे.

इस पर मीडिया ने उन्हें निशाने पर ले लिया था. कारण कोरोना वायरस संक्रमण के कारण हुए लौकडाउन के बाद से महिलाओं की हत्या और घरेलू अपराध की घटनाएं वहां काफी बढ़ गई थीं.

इसे देखते हुए रिगास ने घटनास्थल से मोबाइल उपकरणों, एक स्मार्टवाच और कैमरों की जांच करने के लिए एक समयरेखा भी निर्धारित कर दी.

घटनास्थल की सीसीटीवी फुटेज की जांच के बाद एथेंस पुलिस की क्राइम इनवैस्टीगेशन टीम इस नतीजे पर पहुंची थी कि युवती की हत्या जिन 3 लुटेरों ने की, उन्हें दबोचा जाना बाकी है. क्योंकि पुलिस को वहां से काफी सबूत मिल चुके थे.

इसी बीच पुलिस के अधिकारी ने अपने सहकर्मियों से सवाल किया, ''तुम यह कैसे कह सकते हो कि हत्या प्रोफैशनल लुटेरों ने ही की है?''

''सर घटनास्थल पर मिले सारे प्रमाण तो यही बताते हैं. इस के अलावा, लुटेरों ने युवती के हाथपांव बांध दिए थे, और...'' एक सहकर्मी पुलिस ने कहा.

''... और उस ने पालतू कुत्ते को भी मार डाला था. तुम तो यही कहोगे न?'' अधिकारी ने दूसरे सहकर्मी को देखते हुए सवाल किया.

'' यस सर! ''

''वाट यस सर.. ? लुटेरों ने घर से जो रुपए लूटे, वे कहां रखे थे? तुम लोगों को तो केवल 13 हजार पाउंड अमाउंट के बारे पता चला है.''

''उस की डिटेल्स नहीं मिली सर. कोई निशान नहीं मिल पाया.'' फोरैंसिक जांच वाले ने सफाई दी.

''तुम्हें तो यह भी पता नहीं चला है कि लुटेरों के गिरोह ने युवती को कैसे बांधा, उस की मौत दम घुटने से हुई या फिर कोई और

वजह थी.'' अधिकारी ने सभी को जबरदस्त डांट पिलाई.

''सर, सीसीटीवी कैमरे घटना के समय बंद थे,'' तकनीकी जांच करने वाले ने बताया.

''अब तुम लोग मुझे यह समझाओ कि मृत युवती की बगल में सिरहाने 11 माह की बच्ची चुपचाप कैसे लेटी थी?'' जांच अधिकारी ने सख्ती के साथ पूछा.

ग्रीक जांच अधिकारी की बात सुन कर सभी चुप हो गए थे. क्योंकि यह मामला साधारण नहीं था.

मृतका के पति पायलट बाबिस द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार पुलिस ने जांच शुरू की, जिस में कई विरोधाभास देखने को मिले. बाबिस ने मीडिया को बताया था कि वह घटना के समय लुटेरों से घिरा हुआ था.

जबकि पुलिस जांच में पता चला कि उस दौरान वह घर के बाहर चारों ओर घूम रहा था. उस का आवागमन बेसमेंट से ले कर बालकनी तक हुआ था. इस विरोधाभास पर पुलिस को बाबिस पर ही शक हो गया.

## डेटा एनालिस्ट की ली मदद

इस आधार पर पुलिस औफिसर निकोस रिगास ने अपने सहकर्मियों को नए सिरे से जांच करने का आदेश दिया. उन्होंने जांच टीम से कहा, ''संदिग्ध युवती का पति भी हो सकता है. यह भी हो सकता है कि क्राइम सीन उस के द्वारा बनाया गया हो. वह खुद को बचाने की कोशिश में हो.''

''...लेकिन सर, इस पालतू कुत्ते को किस ने मारा होगा?और सर वह छोटी बच्ची..?'' एक सहकर्मी ने जिज्ञासा जताई.

''यही तो समझने की बात है, जिस ओर तुम लोगों का ध्यान ही नहीं गया?'' निकोस रिगास बोले.

''वह कैसे सर?'' फोरैंसिक जांचकर्ता ने सवाल किया.

''मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि पालतू कुत्ते को संदिग्ध ने ही मारा होगा और हत्या को सही ठहराने के लिए बच्ची को उस की मां के मृत शरीर के बगल में रख दिया. हैरत की बात है कि उसे कोई चोट नहीं आई. यह भी हो सकता है उस वक्त बच्ची कहीं और सो रही हो.'' रिगास ने समझाया.

''तो सर, हमें अब क्या करना चाहिए?''

''आप लोग इस में अब कुछ अधिक नहीं कर पाएंगे. इस केस को डेटा एनलिस्ट की मदद से हैंडल किया जाएगा.''

''वह कैसे सर?'' सभी चौंक पड़े.

''बस आप सभी देखते जाइए और अपनीअपनी रिपोर्ट का डेटा सौफ्ट कौपी के साथ हार्ड कौपी में 12 घंटे के भीतर उपलब्ध करवाइए.'' रिगास ने आदेश दिया.

''यस सर!'' सभी सहकर्मियों ने एक साथ कहा.

OPEN
ANT1
mega

घटना के बारे में रिपोर्टर्स को जानकारी देता बाबिस एनाग्नोस्टोपोलोस

''और हां, आईटी के क्राइम सेल के साथ अभी घंटे भर के अंदर मीटिंग तय करवाइए.'' यह आदेश उन्होंने अपने पीए को दिया.

इसी दौरान एक सहकर्मी ने उत्सुकता के साथ बताया, ''सर, क्या मृतका के पति बाबिस एनाग्नोस्टोपोलास से पूछताछ की जाए?''

''अभी उस पर नजर रखिए. मुझे जानकारी मिली है कि वह इस समय ग्रीस में नहीं है, लेकिन इंस्टाग्राम पर सक्रिय है. उस ने पुर्तगाल यात्रा के दौरान अपनी पत्नी के साथ एक तसवीर पोस्ट की है.''

''जी सर, मैं ने वह तसवीर देखी है. उस में उस ने लिखा है— हमेशा एक साथ! विदाई, मेरे प्यार!'' महिला सहकर्मी तपाक से बोल पड़ी.

''तुम उस पर नजर रखो. उस के डेटा का कलेक्शन करो. हर तरह की डिटेल्स जुटाओ... जैसे उन के आपसी संबंध, शादीब्याह, अफेयर, डेटिंग, चैटिंग, डिनर, साथसाथ ट्रैवलिंग, फैमिली बैकग्राउंड, हौबी, उन के फ्रैंड सर्कल, प्रोफेशन इत्यादिइत्यादि. इंस्टाग्राम के अतिरिक्त दूसरे सोशल साइट्स और डेटिंग ऐप को भी खंगालो.''

जांच दल की महिला सहकर्मी के द्वारा हेलीकौप्टर पायलट बाबिस और कैरोलिन के बारे में जुटाई गई जानकारी के बाद पता चला कि कैरोलिन क्राउच और बाबिस का प्रेम विवाह हुआ था. उन की शादी जुलाई, 2019 में अलगार्वे में हुई थी.

सोशल साइट पर उस की शादी की कई यादगार तसवीरें देखने को मिलीं. उन में एक मार्मिक तसवीर उस की शादी के लिए तैयार होने की है, जिस में उस के बाल और मेकअप 2 स्थानीय स्टाइलिस्टों द्वारा किया गया था.

इस तसवीर को उतारने वाले फोटोग्राफर को जब कैरोलिन की हत्या की जानकारी मिली तो वह स्तब्ध हो गया था, क्योंकि उसे मिला वह पहला असाइनमेंट था.

कैरोलिन जब 15 साल की थी, तभी उस की मुलाकात बाबिस से हुई थी. उन के बीच प्यार हो गया. उन की शादी एथेंस के उसी अपमार्केट इलाके में हुई थी, जहां कैरोलिन मृत पाई गई.

शादी के समय वह 18 साल की थी.

बाबिस एनाग्नोस्टोपोलोस को बुलेटप्रूफ जैकेट पहना कर जेल ले जाती ग्रीक पुलिस

बाबिस के मातापिता एथेंस में रहते हैं, जबकि कैरोलिन के मातापिता एलोनिसोस द्वीप पर वहां से 6 घंटे की दूरी पर रहते हैं. हालांकि कैरोलिन का जन्म यूके में हुआ था, जिस से वह ब्रिटिश नागरिक बन गई थी.

शादी के बाद वह अपने पति और बच्ची के साथ ग्लाइका नेरा में रह रही थी. इसी तरह से पुलिस ने उन के बारे में कई जानकारियां जुटाईं, जिन में कैरोलिन द्वारा लिखी गई डायरी भी थी. डायरी में उस ने अपने से करीब दोगुनी उम्र के पति के साथ संबंधों की अंतरंगता के बारे में लिखा था.

कैरोलिन की हत्या की जांच ग्रीक पुलिस ने नए सिरे से शुरू की. उन्होंने तमाम तकनीकी उपकरणों को अपने कब्जे में ले लिया और उन में दर्ज डेटा का विश्लेषण किया.

इसी क्रम में पुलिस अधिकारी को वह सुराग मिल गया, जिस की उन्हें तलाश थी. वह सुराग कैरोलिन के स्मार्टवाच में छिपा था.

खास तरह की उस बायोमैट्रिक घड़ी में उन की मौत का दिन और उन की नाड़ी के जीवित रहने तक चलने की रीडिंग दर्ज थी. उस के साथ बाबिस के मोबाइल की काल डिटेल्स आदि का मिलान किया गया. इस काम के लिए पुलिस ने गूगल के सर्विलांस सिस्टम का उपयोग किया.

इस तरह से की गई तकनीकी जांच में संदिग्ध के तौर पर कैरोलिन के पति बाबिस के होने का शक पुख्ता हो गया. बाबिस ने भले ही कहा कि उसे लुटेरों ने बांध दिया था, लेकिन जांच में इस बात का पुष्टि हो गई कि उस दौरान उस का फोन इस्तेमाल में था. उस का डेटा उस की पत्नी के स्मार्टवाच के डेटा से मेल नहीं खा रहा था.

कैरोलिन की स्मार्टवाच से पता चला कि कैरोलिन का दिल उस वक्त भी धड़क रहा था, जिस वक्त उस के पति द्वारा हत्या किए जाने का दावा किया गया था. उस के फोन पर गतिविधि ट्रैकर ने उसे घर के चारों ओर घूमते हुए दिखाया, जबकि उस ने कहा कि वह बंधा हुआ था.

इस तरह से रिकौर्ड किए गए समय, जिस पर घर के सीसीटीवी कैमरे से डेटा कार्ड निकाल लिए गए थे, से घटना की अलग ही कहानी सामने आई.

बाबिस ने पुलिस को बताया था कि 11 मई, 2021 की सुबह 5 बजे के आसपास लुटेरों ने उस के घर में दरवाजा तोड़ कर प्रवेश किया और उस के साथ कैरोलिन को बांध दिया. घर में लूटपाट की और कैरोलिन की गला घोंट कर हत्या कर दी. सुबह 6 बजे पुलिस को बुलाने पर लुटेरे भाग गए.

बाबिस ने पुलिस को बताया था कि 11 मई, 2021 की सुबह 5 बजे के आसपास लुटेरों ने उस के घर में दरवाजा तोड़ कर प्रवेश किया और उस के साथ कैरोलिन को बांध दिया. घर में लूटपाट की और कैरोलिन की गला घोंट कर हत्या कर दी.

## दिल की धड़कनें घड़ी में हुईं कैद

इस के विपरीत जांच में पाया गया कि आधी रात को 12 बज कर 35 मिनट पर दंपति की ग्राउंड फ्लोर पर लगी सीसीटीवी कैमरे ने आखिरी तसवीर उतारी थी. उस में बाबिस सोफे पर बैठा दिखा था. उस की गोद में बेटी बैठी थी, उस के हाथ में फोन था. उस समय उस की कैरोलिन से बातचीत चल रही थी, जो किसी बात को ले कर कड़वी बहस में बदल गई थी.

रात 1.20 बजे कैमरे की डिवाइस में स्टोर डेटा के अनुसार उस में से मेमोरी कार्ड हटा दिया गया था. पुलिस का कहना है कि ऐसा कैरोलिन द्वारा स्टूपिड कहने के बाद किया गया. पुलिस ने पाया कि मेमोरी कार्ड को आधा काट कर शौचालय में बहा दिया गया था. इसे अधिकारी ने पूर्वनियोजित हत्या की योजना बताया.

रात 12.35 बजे से सुबह 4 बजे तक बाबिस और कैरोलिन के बीच टेक्स्ट मैसेज के साथ बहस होती रही. उस दौरान कैरोलिन ने अपने एक दोस्त को भी मैसेज किया, जिस में उस ने लिखा कि वह अपने पति को छोड़ रही है और अभी रात में ही घर से किसी होटल में चली जाएगी.

उसी बहस में बात इतनी बिगड़ गई कि कैरोलिन ने बाबिस से तलाक लेने तक के लिए कह दिया.

कैरोलिन की कलाई से जुड़े फिटनैस ट्रैकर से पुलिस को पता लग गया कि उस दिन सुबह 4 बजे कैरोलिन के दिल की धड़कनें बढ़ गई थीं. अचानक दिल की बदली हुई गतिविधि से पता चला कि इस से दंपति के बीच लड़ाई बढ़ गई थी.

बाबिस ने इस बारे में पूछने पर बताया कि कैरोलिन ने उसे मारा, जिस से उसे भी उस पर गुस्सा आ गया और उसे बिस्तर पर धकेल दिया. उस के बाद उस ने तकिए से चेहरा दबा दिया.

कैरोलिन के फिटनैस ट्रैकर से ही पता चला कि 4.11 बजे उस के दिल की धड़कनें रुक गईं. उस समय वह मर चुकी थी. पुलिस जांच में पता चला कि बाबिस ने उस के मुंह में रुई भर दी थी और फिर उस का गला घोंट दिया था.

इस के बाद बाबिस ने ठंडे दिमाग से हत्या को नाटकीय रूप देने की योजना बनाई. पुलिस जांच के अनुसार, उस ने खिड़की के नीचे की कुंडी तोड़ी और अलमारी में थोड़ी तोड़फोड़ की. घर में लूटपाट का सीन बनाया.

इसी तरह से उस ने अपने पालतू कुत्ते को मार कर सीढ़ी के डब्बे में लटका दिया. उसे दिखा कर ही पुलिस को बताया लुटेरों ने उसे रास्ते में ही मार डाला होगा. फिर उस ने अपनी आंखों पर पट्टी बांध ली और खुद को बिस्तर से बांध लिया. उस के बाद पड़ोसी को फोन कर लुटेरों के बारे में बताया.

हेलीकौप्टर पायलट बाबिस एनाग्नोस्टोपोलोस के अपना जुर्म स्वीकार करने के बाद अदालत ने 17 जून, 2021 को उसे कैरोलिन क्राउच और पालतू कुत्ते की हत्या का दोषी ठहराते हुए 15 साल जेल की सजा सुनाई.

इस डेटा ट्रेल के आगे बाबिस की एक नहीं चली. हालांकि उसे दबोचने में भी पुलिस को काफी मशक्कत करनी पड़ी.

कारण जब तक पुलिस को उस के आरोपी होने का प्रमाण मिला था, तब तक वह दूसरे देश में जा छिपा था. इस तरह से स्मार्टवाच ने कैरोलिन के अंतिम क्षण की जानकारी दे कर इस केस को खोलने में मदद की.

बाद में पुलिस ने बाबिस को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल कर ली. उसे ग्रीक की बड़ी जेल कोरयाडालोस में रखा गया. उस की गिरफ्तारी एक बहुचर्चित घटना थी.

मीडिया जगत से ले कर सोशल एक्टिविस्टों में उन की घोर निंदा हुई. सामाजिक संस्थाओं ने उसे सख्त सजा देने की मांग के साथ प्रदर्शन किए.

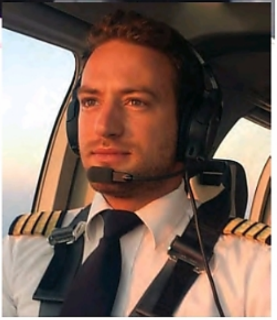

कैरोलिन की स्मृति में आयोजित एक कार्यक्रम में दिवंगत पत्नी की मां के गले लग कर रोता बाबिस एनाग्नोस्टोपोलोस (दाहिने इनसेट में भी)

पुलिस के सामने बाबिस को जेल से कोर्ट तक ले जाने की समस्या थी. इस की वजह यह थी कि प्रदर्शनकारी बाबिस को अपने हाथों से सजा देने की मांग कर रहे थे. रास्ते में बाबिस की जान को खतरा भी था, इसलिए भारी पुलिस सुरक्षा के बीच बाबिस को बुलेटप्रूफ जैकेट पहना कर जेल ले जाया गया और जज के सामने पेश किया.

वकीलों की शुरू हुई बहस में वह जल्द ही टूट गया और उस ने अपना जुर्म कुबूल कर लिया. उस ने 17 जून, 2021 को अपनी पत्नी को गला घोंट कर मारने की बात स्वीकार कर ली.

साथ ही भावुकता के साथ कहा कि वह उस दौर के 6 मिनट का समय कभी नहीं भूल सकता है. क्योंकि पत्नी का गला घोंटते वक्त उस की बेटी लिडिया का चेहरा उस के सामने ही था.

हालांकि उस ने हत्या का नाटक रचने के बारे में बताया कि ऐसा उस ने इसलिए किया, क्योंकि वह जेल नहीं जाना चाहता था और अपनी बेटी की परवरिश करना चाहता था.

पूछताछ में बाबिस ने अपने पालतू कुत्ते का गला घोंटने की भी बात स्वीकार ली. उस ने कहा कि उस ने ऐसा बनावटी घटना को प्रभावशाली दिखाने के लिए किया.

हेलीकौप्टर पायलट बाबिस एनाग्नोस्टोपोलोस के अपना जुर्म स्वीकार करने के बाद अदालत ने 17 जून, 2021 को उसे कैरोलिन क्राउच और पालतू कुत्ते की हत्या का दोषी ठहराते हुए 15 साल जेल की सजा सुनाई.

खूबसूरत पत्नी की हत्या के बाद बाबिस को अब पछतावा हो रहा है, जबकि उस की बेटी लिडिया के पालनपोषण की जिम्मेदारी कैरोलिन क्राउच के ब्रिटिश पिता ने उठा ली है.

हालांकि बाबिस चाहता है कि सजा काटने के बाद वही अपनी बेटी की देखभाल करे, लेकिन लिडिया के नानानानी नहीं चाहते कि वह अपनी ही मां के हत्यारे पिता की बेटी कहलाए. ●

ZEE LABORATORIES

ensure complete skin care with...

# OVIX

## क्रीम लगायें,
## त्वचा रोगों से तुरन्त राहत पायें

ZEE LABORATORIES LTD.
ensure complete skin care with...
OVIX
CREAM
15g.
दाद, खाज, खुजली व एगज़िमा, जले, कटे, फोड़े, फुंसी, ज़ख्म, जांघो की खुजली से तुरन्त राहत

दाद, खाज, खुजली व एगज़िमा, कटे, फोड़ो, फुंसी, ज़ख्म,
जांघो की खुजली से तुरन्त राहत

**ECZEMA**

**THIGH ITCH**

**SHAVING CUTS**

**MIX INFECTIONS**

सम्पूर्ण कॉस्मेटिक रेंज
हर प्रमुख दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध
9896134500

A Product of
**ZEE LABORATORIES LTD.**

Online Shopping:
www.zeelabpharmacy.com

(Registered) RNI DELHI 64905/15/DL(C)-14/1391/19-21. P.O. SRT Nagar, ND-55. Posting Date 06-12. Published on 26/08/2021. Pgs. 84

PARLE
20-20™
TASTE KA RICHNESS
TOTAL AWESOMENESS
PARLE 20-20 CASHEW COOKIES New Improved
PARLE 20-20 BUTTER COOKIES New Improved
BISCUITS